वर्ष-07 - अंक 285
पृष्ट-12 मूल्य : 03 रुपया

लखनऊ
बुधवार ,22 जुलाई 2026

RNI.No. UPHIN/2019/79073

केंद्रीय सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार CBC (DAVP) द्वारा जारी दर पर विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय हिंदी दैनिक अख़बार

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

swatantraprabhat.com

epaper.swatantraprabhat.com

जो लिखेगा, वही टिकेगा

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून गाज़ियाबाद , दिल्ली ,पंजाब , हरियाणा ,चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

दिव्यांगों के लिए आरक्षण, पेंशन और सुविधाओं में 3
प्रदेश के विकास की मजबूत नींव में बेहतर सड़कें और पुल दे रहे हैं 4
इफको में नैनो उर्वरकों के प्रयोग संबंधी तीन दिवसीय कृषि 11

पीएम आवास घेरने पहुंचे राहुल गांधी, प्रियंका और अखिलेश हिरासत में

छात्रों के मुद्दे पर कांग्रेस के प्रदर्शन के दौरान दिल्ली पुलिस की कार्रवाई

नई दिल्ली(एजेंसी)। छात्रों से जुड़े मुद्दों और केंद्र सरकार के खिलाफ कांग्रेस के आह्वान पर प्रधानमंत्री आवास के बाहर मंगलवार को हुए विरोध प्रदर्शन के दौरान राजनीतिक माहौल गरमा गया। लोक कल्याण मार्ग पर प्रदर्शन कर रहे लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा तथा समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव सहित कई विपक्षी नेताओं और कार्यकर्ताओं को दिल्ली पुलिस ने हिरासत में ले लिया। दिल्ली पुलिस ने प्रधानमंत्री आवास के आसपास सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी थी। प्रदर्शनकारियों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए भारी पुलिस बल तैनात किया गया। पुलिस ने प्रदर्शन के दौरान कई नेताओं और कार्यकर्ताओं को हिरासत में लेकर अलग-अलग स्थानों पर पहुंचाया। हिरासत के दौरान समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने पुलिसकर्मियों से मुस्कुराते हुए पूछा, 'कहां ले जा रहे हो पुलिस भाई?' उनका यह बयान सोशल मीडिया पर भी चर्चा का विषय बना रहा। प्रदर्शन से पहले राहुल गांधी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लोगों से प्रधानमंत्री आवास के बाहर धरने में शामिल होने की अपील की। उन्होंने कहा कि छात्रों पर हुआ हमला देश के हर परिवार पर हमला है और उनकी आवाज को दबाया नहीं जा सकता। राहुल गांधी ने अपने संदेश में कहा कि देश के छात्रों को न्याय मिलना चाहिए और सरकार को उनके सवालों का जवाब देना होगा। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार छात्रों की समस्याओं से मुंह मोड़ रही है। वहीं, केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि विपक्ष पहले संसद में छात्रों और संबंधित मुद्दों पर चर्चा की मांग कर रहा था। उन्होंने दावा किया कि सरकार ने इस मांग को स्वीकार करने की सहमति दे दी थी, लेकिन बाद में राहुल गांधी ने अपनी मांग बदलते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की नई शर्त रख दी। जितेंद्र सिंह ने कहा कि किसी वरिष्ठ नेता का अपनी घोषित मांग से पीछे हटना लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप नहीं है और इससे गंभीर राजनीतिक प्रश्न खड़े होते हैं। इस बीच, दिल्ली हाईकोर्ट ने उस याचिका पर तत्काल सुनवाई करने से इनकार कर दिया, जिसमें संसद मार्च के दौरान छात्रों के खिलाफ दिल्ली पुलिस द्वारा कथित रूप से अत्यधिक बल प्रयोग का आरोप लगाया गया था। मुख्य न्यायाधीश डी.के. उपाध्याय और न्यायमूर्ति तेजस करिया की खंडपीठ ने याचिकाकर्ता से कहा कि इस प्रकार के मामलों में अदालत को अनावश्यक रूप से न घसीटा जाए। अदालत ने तत्काल हस्तक्षेप से इनकार करते हुए मामले को नियमित प्रक्रिया के तहत आगे बढ़ाने की बात कही। दिल्ली पुलिस ने जानकारी दी कि 20 जुलाई को आयोजित 'संसद चलो' मार्च के दौरान हुई हिंसा, सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने और कानून-व्यवस्था भंग करने के आरोप में अब तक चार एफआईआर दर्ज की जा चुकी हैं। इसके अलावा दो अन्य मामलों में भी एफआईआर दर्ज करने की प्रक्रिया जारी है। पुलिस के अनुसार, प्रदर्शन के दौरान हुई घटनाओं की वीडियो फुटेज और अन्य साक्ष्यों के आधार पर जांच की जा रही है तथा दोषियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। प्रधानमंत्री आवास और आसपास के क्षेत्रों में पूरे दिन सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए। बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी और अर्धसैनिक बल तैनात रहे। कई मार्गों पर बैरिकेडिंग की गई, जबकि प्रदर्शनकारियों को नियंत्रित करने के लिए विशेष इंतजाम किए गए। दिनभर चले घटनाक्रम के बाद राजधानी में राजनीतिक हलचल तेज रही। विपक्ष जहां छात्रों के मुद्दे पर सरकार को घेरने में जुटा है, वहीं सरकार का कहना है कि संसद के भीतर चर्चा के लिए वह तैयार है और कानून-व्यवस्था बनाए रखना पुलिस की जिम्मेदारी है।

मेधावी छात्राओं को स्कूटी, नए एक्सप्रेसवे और इलेक्ट्रिक बसों को मिली मंजूरी

लखनऊ(एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को मुख्यमंत्री आवास पर आयोजित उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल की बैठक में 18 महत्वपूर्ण प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। कैबिनेट ने महिला सशक्तीकरण, शिक्षा, परिवहन और आधारभूत ढांचे से जुड़े कई अहम फैसलों पर मुहर लगाई। बैठक में 'रानी लक्ष्मीबाई स्कूटी योजना', दो नए एक्सप्रेसवे, नई इलेक्ट्रिक बसों की खरीद तथा 3 अगस्त से उत्तर प्रदेश विधानमंडल का तृतीय सत्र बुलाने सहित कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। कैबिनेट ने 'रानी लक्ष्मीबाई स्कूटी योजना' के क्रियान्वयन संबंधी दिशा-निर्देशों को मंजूरी प्रदान की। योजना के तहत उत्तर प्रदेश की मूल निवासी स्नातक उत्तीर्ण मेधावी छात्राओं को स्कूटी उपलब्ध कराई जाएगी। इसका लाभ उन छात्राओं को मिलेगा, जिनके परिवार की वार्षिक आय 12 लाख रुपये तक है। हालांकि दिव्यांग छात्राओं, शहीदों के आश्रितों और निराश्रित परिवारों की बेटियों के लिए आय सीमा लागू नहीं होगी। योजना के अंतर्गत प्रत्येक विश्वविद्यालय और महाविद्यालय की स्नातक उत्तीर्ण शीर्ष 5 प्रतिशत छात्राओं का चयन मेरिट के आधार पर किया जाएगा। सरकार स्कूटी के साथ उसका पंजीकरण, व्यापक बीमा, आईएसआई मार्का हेलमेट, आवश्यक एक्सेसरीज और चार लीटर पेट्रोल भी उपलब्ध कराएगी, जिससे छात्राओं पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ न पड़े। उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने बताया कि प्रदेश के ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में पेट्रोल पंप तथा सर्विस सेंटर की बेहतर उपलब्धता को देखते हुए योजना के तहत पेट्रोल चालित स्कूटी उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। स्कूटी की खरीद सरकारी ई-मार्केटप्लेस पोर्टल के माध्यम से की जाएगी, जिससे पारदर्शिता और गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके। उन्होंने कहा कि योजना का उद्देश्य छात्राओं की ड्रॉपआउट दर कम करना, उच्च शिक्षा में उनकी भागीदारी बढ़ाना, आवागमन को सुगम बनाना तथा सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि करना है। इससे छात्राओं में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता भी बढ़ेगी। कैबिनेट ने प्रदेश में सार्वजनिक परिवहन को सुदृढ़ बनाने के लिए नई इलेक्ट्रिक बसों की खरीद को भी मंजूरी दी। इसके साथ ही राज्य में दो नए एक्सप्रेसवे के निर्माण को हरी झंडी दी गई। सरकार का उद्देश्य बेहतर कनेक्टिविटी, सुगम यातायात और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना है। कैबिनेट ने उत्तर प्रदेश विधानमंडल के वर्ष 2026 के तृतीय सत्र को 3 अगस्त से बुलाने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी। इस सत्र में वित्तीय वर्ष 2026-27 का अनुपूरक बजट, अध्यादेशों के प्रतिस्थानी विधेयक और अन्य महत्वपूर्ण विधायी कार्य सदन में प्रस्तुत किए जाएंगे। वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि संविधान के अनुच्छेद-174 और विधानसभा की नियमावली के अनुरूप दो सत्रों के बीच छह माह से अधिक का अंतर नहीं हो सकता। इसी संवैधानिक व्यवस्था के तहत तृतीय सत्र बुलाने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि आगामी सत्र में अनुपूरक अनुदानों की मांगों के साथ-साथ सरकार के विभिन्न महत्वपूर्ण निर्णयों से संबंधित विधेयकों पर भी चर्चा और पारित कराने की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। सरकार का मानना है कि कैबिनेट के इन फैसलों से प्रदेश में महिला शिक्षा और सशक्तीकरण को बढ़ावा मिलेगा, सार्वजनिक परिवहन मजबूत होगा तथा बुनियादी ढांचे के विकास को नई गति मिलेगी।

संक्षिप्त ख़बरें

राम मंदिर ट्रस्ट की आज अहम बैठक

अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की बुधवार को होने वाली महत्वपूर्ण बैठक में संगठनात्मक ढांचे और मंदिर की प्रशासनिक व्यवस्था से जुड़े कई अहम फैसले लिए जा सकते हैं। बैठक में ट्रस्ट के नए महासचिव के चयन के साथ ही लंबे समय से रिक्त पड़े दो अन्य महत्वपूर्ण पदों पर भी नियुक्ति होने की संभावना है। सूत्रों के अनुसार, ट्रस्ट के नए महासचिव के रूप में विश्व हिंदू परिषद (विहिप) से जुड़े एक पदाधिकारी की नियुक्ति लगभग तय मानी जा रही है। हालांकि, अंतिम निर्णय ट्रस्ट की बैठक में ही लिया जाएगा। बताया जा रहा है कि हाल ही में सामने आए चढ़ावा चोरी प्रकरण और उसके बाद हुई जांच के मद्देनजर ट्रस्ट प्रशासनिक व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने की दिशा में कदम उठाने जा रहा है। बैठक में नई कार्यप्रणाली, जवाबदेही बढ़ाने तथा वित्तीय निगरानी व्यवस्था को और प्रभावी बनाने पर भी विस्तृत चर्चा होगी।

यूपी के कार्यरत शिक्षकों को बड़ी राहत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के परिषदीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिए राहत भरी खबर है। राज्य सरकार ने इन-सर्विस (कार्यरत) शिक्षकों के लिए अलग से विशेष शिक्षक पात्रता परीक्षा (स्पेशल टीईटी) आयोजित कराने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस संबंध में शासन ने उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग से विस्तृत कार्ययोजना और प्रस्ताव उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। शासन के इस निर्णय से प्रदेश के लगभग 1.86 लाख कार्यरत शिक्षक लाभान्वित होंगे। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद इन शिक्षकों के लिए सेवा में बने रहने और पदोन्नति (प्रोन्नति) के लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) उत्तीर्ण करना अनिवार्य हो गया है। इसी आवश्यकता को देखते हुए राज्य सरकार ने कार्यरत शिक्षकों के लिए अलग से विशेष टीईटी आयोजित कराने की पहल की है, ताकि उन्हें नियमित टीईटी परीक्षाओं पर निर्भर न रहना पड़े और आवश्यक पात्रता समय पर प्राप्त हो सके। शासन द्वारा शिक्षा सेवा चयन आयोग से परीक्षा की रूपरेखा, आयोजन प्रक्रिया और समयबद्ध कार्ययोजना तैयार कर जल्द प्रस्ताव भेजने को कहा गया है। प्रस्ताव मिलने के बाद परीक्षा की तिथि और अन्य दिशा-निर्देश जारी किए जाएंगे। शिक्षा विभाग के इस फैसले को प्रदेश के लाखों शिक्षकों के लिए बड़ी राहत माना जा रहा है।

अवैध रेत खनन पर एनजीटी सख्त, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को नया नियामक ढांचा बनाने के निर्देश

नई दिल्ली(एजेंसी)। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने अवैध रेत खनन पर सख्त रुख अपनाते हुए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को व्यापक नियामक ढांचा तैयार करने के निर्देश दिए हैं। अधिकरण ने कहा है कि मानसून के बाद निजी कृषि भूमि से रेत हटाने के नाम पर हो रहे अवैध व्यावसायिक खनन पर प्रभावी रोक लगाने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी उपायों को अपनाना आवश्यक है। इस मुद्दे से संबंधित विभिन्न याचिकाओं की सुनवाई के दौरान एनजीटी ने रेत के जमाव और निकासी की निगरानी के लिए उपग्रह चित्रों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग की सिफारिश की। 17 जुलाई को पारित आदेश, जिसे मंगलवार को सार्वजनिक किया गया, में एनजीटी अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव और विशेषज्ञ सदस्य अफरोज अहमद की पीठ ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय ने वर्ष 2024 में कृषि भूमि से रेत हटाने संबंधी सरकारी अधिसूचनाओं और नियमों की समीक्षा का निर्देश दिया था। पीठ ने कहा कि शीर्ष अदालत ने कृषि भूमि से रेत हटाने के प्रावधानों के दुरुपयोग, उपजाऊ मिट्टी के कटाव और अवैध खनन से पर्यावरण को होने वाले नुकसान पर गंभीर चिंता व्यक्त की थी। इसी के मद्देनजर प्रभावी निगरानी व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता महसूस की गई। एनजीटी ने बताया कि केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने मई 2026 में दायर अपने शपथपत्र में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से परामर्श के बाद तैयार की गई रूपरेखा की जानकारी दी थी। विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति (ईएसी) ने माना कि सभी राज्यों की भौगोलिक और स्थलाकृतिक परिस्थितियां अलग-अलग होने के कारण पूरे देश में एक जैसी व्यवस्था लागू करना व्यवहारिक नहीं होगा। विशेषज्ञ समिति ने प्राकृतिक भूमि की संरचना को सुरक्षित रखने, प्राकृतिक सतह से नीचे खनन पर रोक लगाने, रेत के जमाव का वैज्ञानिक आकलन करने, अवैध खनन रोकने के लिए प्रभावी तंत्र विकसित करने, वास्तविक समय में निगरानी प्रणाली लागू करने तथा रेत हटाने के लिए समय-सीमा निर्धारित करने सहित कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। एनजीटी ने स्पष्ट किया कि सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को विशेषज्ञ समिति की रूपरेखा के अनुरूप अपनी नियामक व्यवस्था विकसित करनी होगी, ताकि कृषि भूमि से रेत हटाने की प्रक्रिया पारदर्शी और नियंत्रित रहे तथा इसकी आड़ में अवैध खनन न हो सके।

एक क्लिक में मिलेगी सभी वन क्षेत्रों की जानकारी: सीएम सोरेन

रांची(एजेंसी)। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने राज्य के वन क्षेत्रों के संरक्षण और आधुनिक प्रबंधन की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए एक माह के भीतर सभी वन क्षेत्रों का तकनीकी एवं डिजिटल रिकॉर्ड तैयार करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने अधिकारियों से राज्य का विस्तृत डिजिटल वन मानचित्र विकसित करने को कहा, ताकि एक क्लिक पर पूरे झारखंड के जंगलों की वास्तविक स्थिति, संरचना और वर्तमान स्वरूप की जानकारी उपलब्ध हो सके। मंगलवार को झारखंड मंत्रालय में वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग की उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य गठन के बाद वन क्षेत्रों में कई बदलाव हुए हैं। कई स्थानों पर जंगलों का विस्तार हुआ है, इको-टूरिज्म परियोजनाएं विकसित हुई हैं, जबकि कुछ क्षेत्रों में खनन, वन कटाई और वन्यजीव अभयारण्यों की सीमाओं में परिवर्तन हुआ है। ऐसे में वन क्षेत्रों का अद्यतन डिजिटल दस्तावेज तैयार करना समय की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पौधारोपण अभियान केवल लक्ष्य पूरा करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र और लोगों की जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए।

3 अगस्त से शुरू होगा यूपी विधानमंडल का तृतीय सत्र

लखनऊ(एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई उत्तर प्रदेश कैबिनेट बैठक में राज्य विधानमंडल के वर्ष 2026 के तृतीय सत्र को 3 अगस्त से आहूत किए जाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई। आगामी सत्र में वित्तीय वर्ष 2026-27 का अनुपूरक बजट, अध्यादेशों के प्रतिस्थानी विधेयक तथा अन्य महत्वपूर्ण विधायी कार्य सदन में प्रस्तुत किए जाएंगे। साथ ही संभल हिंसा की न्यायिक जांच रिपोर्ट भी सदन के पटल पर रखी जाएगी। वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने बताया कि राज्य विधानमंडल का द्वितीय सत्र 30 अप्रैल 2026 को आयोजित किया गया था। उसी दिन विधानसभा और विधान परिषद की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई थी तथा 7 मई को सत्रावसान कर दिया गया था। उन्होंने बताया कि संविधान के अनुच्छेद-174 तथा उत्तर प्रदेश विधानसभा की प्रक्रिया एवं कार्य-संचालन नियमावली के अनुसार विधानमंडल के दो सत्रों के बीच छह माह से अधिक का अंतर नहीं हो सकता। इसी संवैधानिक प्रावधान के तहत 3 अगस्त से तृतीय सत्र बुलाने का निर्णय लिया गया है।

राज्यपाल-सीएम ने लिया घटनास्थल का जायजा, रंगपो में बनेगा विशेष सहायता केंद्र

तीस्ता स्टेज-6 परियोजना की सुरंग दुर्घटना के बाद राहत-बचाव अभियान तेज

गंगटोक(एजेंसी)। सिक्किम के नामची जिले में एनएचपीसी की तीस्ता स्टेज-6 जलविद्युत परियोजना की निर्माणाधीन एडीआईटी-3 सुरंग में हुए हादसे के बाद मंगलवार को राज्यपाल ओम प्रकाश माथुर और मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने घटनास्थल का दौरा कर राहत एवं बचाव कार्यों का जायजा लिया। दोनों नेताओं ने अधिकारियों से हादसे की पूरी जानकारी ली और प्रभावित श्रमिकों को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। सोमवार दोपहर करीब 1:05 बजे हुए इस हादसे में परियोजना से जुड़े लगभग 25 श्रमिक और अधिकारी सुरंग के भीतर फंस गए थे। प्रारंभिक जांच में हादसे की वजह सुरंग के भीतर मीथेन गैस में दहन (इग्निशन) को माना जा रहा है। राज्यपाल और मुख्यमंत्री को नामची के जिलाधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एनएचपीसी के अधिकारियों तथा आपातकालीन राहत एजेंसियों ने बचाव अभियान की प्रगति और घायलों के उपचार की जानकारी दी। दोनों ने घायलों को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने तथा बचाव कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने एनएचपीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक भूपेंद्र गुप्ता को हादसे में प्रभावित लोगों को शीघ्र मुआवजा जारी करने के निर्देश दिए। राज्य सरकार ने प्रत्येक मृतक श्रमिक के परिजनों को चार लाख रुपये की अनुग्रह राशि तथा प्रत्येक घायल को तत्काल 50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है। हादसे के मद्देनजर राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन को रंगपो में मृतकों की पहचान और परिजनों की सहायता के लिए विशेष केंद्र स्थापित करने के निर्देश दिए। साथ ही अन्य राज्यों से आए श्रमिकों के परिवारों को हरसंभव सहायता और आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने को कहा गया है।

जितेंद्र सिंह का दावा: सरकार ने चर्चा मानी तो राहुल गांधी ने बदल दी मांग

नीट मुद्दे पर सरकार-कांग्रेस में टकराव तेज, शिक्षा मंत्री के इस्तीफे को लेकर बढ़ी सियासी तनातनी

नई दिल्ली(एजेंसी)। नीट और उससे जुड़े मुद्दों को लेकर संसद के मानसून सत्र में सरकार और कांग्रेस के बीच टकराव और गहरा गया है। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्षी नेताओं ने प्रधानमंत्री आवास के बाहर प्रदर्शन कर संसद में चर्चा की मांग उठाई। इस बीच केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने दावा किया कि सरकार द्वारा चर्चा के लिए सहमति देने के बाद राहुल गांधी ने अपनी मांग बदलते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की शर्त भी जोड़ दी। डॉ. जितेंद्र सिंह ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और अन्य वरिष्ठ नेता अकबर रोड के पास धरने पर बैठे थे। उन्होंने बताया कि सरकार की ओर से वह स्वयं और केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन प्रदर्शन स्थल पर पहुंचे और राहुल गांधी से धरना समाप्त करने का आग्रह किया, क्योंकि वह स्थान प्रदर्शन के लिए निर्धारित नहीं था। केंद्रीय मंत्री के अनुसार, बातचीत के दौरान राहुल गांधी ने कहा था कि यदि सरकार संसद में नीट और उससे जुड़े आंदोलन पर चर्चा के लिए तैयार हो जाए तो वह धरना समाप्त कर देंगे। इसके बाद सरकार के शीर्ष नेतृत्व से मंजूरी मिलने पर संसद में चर्चा कराने की सहमति दे दी गई। डॉ. जितेंद्र सिंह का दावा है कि सरकार की सहमति मिलने के बाद राहुल गांधी ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की नई मांग भी जोड़ दी। उन्होंने कहा कि जब राहुल गांधी को उनकी पहले की मांग की याद दिलाई गई, तो उन्होंने जवाब दिया कि अब उनकी मांगें बदल गई हैं। मंत्री ने इसे लोकतांत्रिक परंपराओं के विपरीत बताते हुए कहा कि कांग्रेस ने अब तक इस मुद्दे पर संसद में चर्चा के लिए नियमानुसार कोई औपचारिक नोटिस भी नहीं दिया है। वहीं, कांग्रेस का कहना है कि पार्टी शुरू से ही नीट विवाद पर संसद में चर्चा के साथ-साथ केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग करती रही है। कांग्रेस का आरोप है कि सरकार छात्रों के हितों से जुड़े गंभीर मुद्दे पर जवाबदेही से बचने का प्रयास कर रही है। सरकार और विपक्ष के बीच इस मुद्दे पर जारी राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप के बीच संसद के मानसून सत्र में नीट विवाद को लेकर जोरदार बहस होने की संभावना जताई जा रही है।

सीएम धामी ने किसानों को किया सम्मानित

हरिद्वार(एजेंसी)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी मंगलवार को हरिद्वार के जगजीतपुर स्थित मैंगो फार्म पहुंचे, जहां उन्होंने आम महोत्सव (आम उत्सव) में भाग लिया। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधियों, प्रगतिशील किसानों और बड़ी संख्या में लोगों की मौजूदगी रही। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने आम उत्पादकों से संवाद किया और विभिन्न किस्मों के आमों का स्वाद भी लिया। मुख्यमंत्री धामी ने आम उत्पादकों और प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते हुए कृषि एवं बागवानी क्षेत्र में उनके योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों की आय बढ़ाने तथा बागवानी को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। उन्होंने किसानों से आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने, उन्नत खेती करने और बेहतर विपणन सुविधाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि कृषि और बागवानी के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देकर किसानों की आर्थिक स्थिति को और मजबूत बनाया जा सकता है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार की किसान हितैषी योजनाओं का भी उल्लेख करते हुए कहा कि सरकार कृषि उत्पादों के बेहतर विपणन और किसानों को अधिक लाभ दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम में किसानों और स्थानीय लोगों की बड़ी भागीदारी देखने को मिली। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, आगामी विधानसभा चुनावों से पहले आयोजित इस तरह के कार्यक्रमों को ग्रामीण और किसान वर्ग के बीच सरकार की योजनाओं और नीतियों को पहुंचाने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

संक्षिप्त खबरें

जनसुनवाई में जिलाधिकारी ने सुनीं शिकायतें, समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के दिए निर्देश

अमेठी। जनपद के कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित जनसुनवाई के दौरान जिलाधिकारी संजय चौहान ने आमजन की समस्याएं सुनीं और उनके त्वरित निस्तारण के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। जनसुनवाई में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोगों ने भूमि विवाद, राजस्व, विकास, चिकित्सा तथा अन्य विभागों से संबंधित शिकायतें जिलाधिकारी के समक्ष प्रस्तुत कीं। जिलाधिकारी ने प्रत्येक शिकायतकर्ता की समस्या को गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्राप्त शिकायतों का निस्तारण निर्धारित समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण एवं पारदर्शी ढंग से सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि शासन की मंशा है कि आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान हो, इसलिए सभी अधिकारी जनसुनवाई में प्राप्त प्रार्थना पत्रों को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित करें। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि किसी भी शिकायत के निस्तारण में लापरवाही या अनावश्यक विलंब पाए जाने पर संबंधित अधिकारी की जिम्मेदारी तय की जाएगी। साथ ही अधिकारियों से कहा कि शिकायतकर्ता को निस्तारण की जानकारी भी उपलब्ध कराई जाए, ताकि लोगों का प्रशासन पर विश्वास और मजबूत हो।

आगरा के फतेहाबाद में दर्दनाक हादसा, कैंटर और कार की भिड़ंत में दो की मौत

फतेहाबाद (आगरा)। फतेहाबाद क्षेत्र में सोमवार देर रात भीषण सड़क हादसा हुआ। इसमें कार सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। फतेहाबाद-बाह मार्ग स्थित बाबा की तिवरिया के पास दुर्घटना रात 1:45 बजे हुई। विपरीत दिशा से आती कार और कैंटर की आमने-सामने भिड़ंत हो गई। हादसा इतना भीषण था कि कार कैंटर में फंस गई और करीब 100 मीटर तक घिसटती चली गई। दुर्घटना में कार सवार दो लोगों मृत्यु हो गई। सूचना मिलते ही इंस्पेक्टर विनोद कुमार मिश्र पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त होने से दोनों शव उसमें फंस गए थे। पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद कार को काटकर शवों को बाहर निकाला। बताया गया है कि कार बाह की ओर से फतेहाबाद आ रही थी, जबकि कैंटर फतेहाबाद से बाह की ओर जा रहा था। पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। हादसे के कारण मार्ग पर कुछ समय के लिए यातायात प्रभावित रहा। पुलिस दुर्घटना के कारणों की जांच कर रही है।

मालगाड़ी दुर्घटना से चरमराया टाइम टेबल

अलीगढ़ में राजधानी और शताब्दी एक्सप्रेस समेत कई ट्रेनें प्रभावित

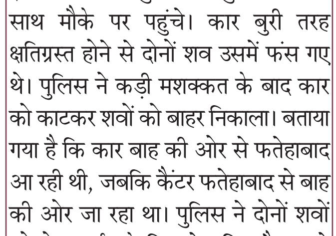

अलीगढ़। दिल्ली में मंगलवार को मालगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतरने के कारण कई सुपरफास्ट ट्रेनें दो से तीन घंटे तक प्रभावित रहीं। इसके चलते स्टेशन पर यात्रियों को इंतजार करना भारी पड़ गया। सुबह के समय कानपुर से दिल्ली की ओर जाने वाली भुवनेश्वर, हावड़ा नई दिल्ली, राजधानी एक्सप्रेस, शताब्दी एक्सप्रेस, गोमती एक्सप्रेस, स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस, गरीब रथ, लिच्छवी एक्सप्रेस, हमसफर, रीवा, सप्तक्रांति, अलीगढ़ दिल्ली ईएमयू सहित अन्य ट्रेनें देरी से चलीं। इन ट्रेनों को जगह-जगह रोक दिया था। देरी से आने के कारण यात्रियों को परेशानी झेलनी पड़ी। वे इन्क्वायरी पर पूछते रहे। अनाउंस कर यात्रियों को जानकारी दी गई। आरपीएफ और जीआरपी के जवानों की जगह-जगह ड्यूटी भी लगाई गई थी। गाजियाबाद-नई दिल्ली रेलखंड पर साहिबाबाद के पास एक मालगाड़ी के छह डिब्बे पटरी से उतरने के कारण 50 से अधिक ट्रेनें प्रभावित हुईं। इस हादसे की वजह से कई पैसेंजर ट्रेनें रद्द करनी पड़ीं। 24 से अधिक ट्रेनों के रूट बदले गए और दिल्ली आने-जाने वाली दर्जनों ट्रेनें देरी से चलीं। गाजियाबाद से दिल्ली के बीच चलने वाली कई ट्रेन रद भी हुईं।

पुजारी व मासूम पर फावड़े से हमला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गाज़ीपुर। बाराचवर ब्लाक अंतर्गत करीमुद्दीनपुर थाने क्षेत्र के पतार गांव स्थित गंगेश्वर नाथ मंदिर परिसर में कुछ मनबढ़ लोगों ने मंदिर के पुजारी व चार वर्षीय बच्चे के ऊपर फावड़े से प्राण घातक हमला कर दिया। इस हमले में पुजारी व उनके चार वर्षीय बालक को स्थानीय लोगों ने बाराचवर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर आये जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने गाजीपुर के लिए रेफर कर दिया। सूचना के मुताबिक डेहमा गांव निवासी मोनू गिरी पुत्र परमात्मा गिरी पतार गांव स्थित गंगेश्वर नाथ मंदिर में पुजारी हैं जो अपने चार वर्षीय बच्चे योग गिरी व पत्नी के साथ रह पुजा पाठ का कार्य करते हैं। रोज की तरह मंगलवार को करीब आठ बजे के आसपास मोनू गिरी मंदिर में पुजा करने के लिए मंदिर परिसर में स्थित हैंडपंप पर भगवान का बर्तन साफ कर रहे थे । इसी दौरान मनबढ़ पतार गांव निवासी लाल जी यादव पुत्र कैलाश यादव व श्रीभगवान जो की नशें में चुर हैंडपंप पर पहुंचे जहां पुजारी मोनू गिरी ने कहां की मैं मंदिर में पुजा करने के लिए भगवान का बर्तन साफ कर रहा हूं,इसके बाद आप हैंडपंप पर आये तभी दोनों मनबढ़ो पुजारी के उपर साथ लिए फावड़े से हमला कर दिया। इसके उपरांत हमलावरों स्वयं पर हुए हमले दिखाने के लिए बाराचवर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंच फर्जी मेडिकल बनाने की कोशिश की लेकिन यहां मौजूद चिकित्सक राजकुमार मौर्या ने उनके इस मंसुबे पर पानी फेर दिया।

चार वर्षीय बालक को भी काटने की कोशिश

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया की सिर्फ एक छोटी सी बात को लेकर लाल जी यादव व श्रीभगवान इतने नाराज़ हुए की अपने साथ लिए फावड़े से पहले जान मारने की नियत से पुजारी मोनू गिरी के सर पर हमला कर दिया। इस हमले में मोनू गिरी तो वही अचेत हो गये। फिर भी मन नहीं भरा तो इन मनबढ़ो ने चार वर्षीय बालक योग गिरी के उपर भी फावड़े से हमला कर जान लेने की कोशिश की लेकिन तभी सोर शराबा सुन ग्रामीण

घायल पुजारी व चार वर्षीय मासूम

मौक़े पर पहुंचे तो दोनों आरोपी वहां से भाग निकले क्षेत्र पंचायत सदस्य जितेन्द्र सिंह ने ग्रामीणों की मदद से पुजारी मोनू गिरी व चार वर्षीय योग गिरी को लेकर तुरंत बाराचवर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे जहां बुरी तरह से घायल दोनों पीड़ितों को प्राथमिक उपचार के बाद गाजीपुर के लिए रेफर कर दिया।

इस संबंध में करीमुद्दीनपुर थाना प्रभारी ने बताया की पीड़ित के तरफ से तहरीर मिला है। जिसके आधार पर आरोपियों के खिलाफ उचित कार्रवाई करते हुए लालजी यादव व पिता कैलाश यादव को गिरफ्तार कर लिया जबकि एक आरोपी श्रीभगवान यादव मौके से भागने में सफल रहा। पुलिस ने बताया की फरार आरोपी को भी जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जायेगा।

सावन में इस साल दुर्लभ महासंयोग, तीसरे सोमवार को होगी नागपंचमी

अलीगढ़। देवों के देव महादेव का अति प्रिय मास सावन इस बार अपने साथ कई दुर्लभ और शुभ महासंयोग लेकर आ रहा है। इस वर्ष श्रावण मास का प्रारंभ 30 जुलाई, बुधवार से हो रहा है, 28 अगस्त शुक्रवार को रक्षाबंधन तक चलेगा। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस बार सावन का सबसे महत्वपूर्ण पर्व नागपंचमी 23 वर्षों के अंतराल के बाद पुनः सोमवार के दिन पड़ रहा है, जिससे इसका महत्व कई गुना बढ़ गया है। ज्योतिषाचार्य हृदय रंजन शर्मा के अनुसार श्रावण शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि अर्थात नागपंचमी इस बार सावन के तीसरे सोमवार यानी 17 अगस्त सोमवार को पड़ रही है। इससे पहले वर्ष 2003 में नागपंचमी सोमवार को पड़ी थी और अब 23 साल बाद फिर यही योग बना है। सोमवार का दिन स्वयं भगवान शिव को समर्पित है और नाग देवता शिव के गले का हार हैं। इसलिए सोमवार को नागपंचमी पड़ने से इसे सोमवती नागपंचमी कहा जाएगा। इस दिन इस दिन शिवलिंग पर चंदन, बेलपत्र और दूध में गंगाजल मिलाकर अभिषेक करना विशेष पुण्यदायी होगा।

ग्राम पंचायत पखेरी में मनरेगा कार्यों में फर्जीवाड़े का आरोप, ग्रामीणों में आक्रोश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। बस्ती जिले के विकास खंड हर्रैया अंतर्गत ग्राम पंचायत पखेरी में मनरेगा कार्यों को लेकर गंभीर अनियमितताओं के आरोप सामने आए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि ग्राम पंचायत में तैनात सचिव एवं तकनीकी सहायक की लापरवाही के चलते सरकार की योजनाओं की मंशा पर पानी फिर रहा है। आरोप है कि पानी से भरे तालाब में भी ग्राम प्रधान घनश्याम द्वारा ऑनलाइन मस्टर रोल जारी कर मजदूरों की फर्जी हाजिरी लगाई जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि ग्राम पंचायत के अधिकांश तालाब और पोखरों में पहले से पानी भरा हुआ है, ऐसे में तालाब खुदाई एवं सफाई का कार्य कागजों पर दिखाकर सरकारी धन के दुरुपयोग की आशंका जताई जा रही है।

मीडिया की पड़ताल में ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि ग्राम प्रधान, सचिव और तकनीकी सहायक की मिलीभगत से मनरेगा कार्यों में अनियमितताएं की जा रही हैं। इसको लेकर ग्रामीणों में भारी नाराजगी है और उन्होंने मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की है। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि यदि आरोप सही हैं तो सरकारी धन के दुरुपयोग पर जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा कब तक कार्रवाई की जाएगी? ग्राम पंचायत पखेरी का यह मामला जिले में चर्चा का विषय बना हुआ है। उक्त प्रकरण में खण्ड विकास अधिकारी हरैया विनय कुमार द्विवेदी से जानकारी लेना चाहा तो खण्ड विकास अधिकारी ने मीडिया के फोन को रिसीव नही किया।

एसएन मेडिकल कॉलेज में अब अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

आगरा। एसएन मेडिकल कालेज एवं अस्पताल में कैंसर, गैस्ट्रोसर्जरी के बाद गुर्दा प्रत्यारोपण, हार्ट बाईपास सर्जरी की सुविधा शुरू होने के साथ ही मरीजों के लिए प्राइवेट रूम भी बनेंगे। प्राइवेट रूम में भर्ती होने पर मरीजों को केजीएमयू, लखनऊ की तर्ज पर 1500 रुपये प्रतिदिन चार्ज देना होगा। एसएन और लेडी लायल जिला महिला चिकित्सालय की जमीन पर बन रहे इंटीग्रेटेड कैंपस के पहले चरण में प्राइवेट रूम बनाए जाएंगे, अगले वर्ष तक पहले चरण का काम पूरा हो जाएगा। एसएन मेडिकल कालेज में मरीजों के लिए प्राइवेट रूम नहीं हैं। सुपरस्पेशियलिटी विंग में कैंसर, गैस्ट्रोसर्जरी के बाद गुर्दा प्रत्यारोपण की सुविधा भी शुरू होने जा रही है। सर्जरी के बाद मरीज वार्ड की जगह प्राइवेट रूम में भर्ती होना चाहते हैं। मगर, प्राइवेट रूम नहीं हैं। सुपरस्पेशियलिटी विंग में मरीजों से वार्ड में भर्ती होने पर प्रतिदिन 250 रुपये और आइसीयू के लिए प्रतिदिन एक हजार रुपये चार्ज लिया जा रहा है। स्त्री रोग विभाग में चार प्राइवेट रूम हैं। एसएन मेडिकल कालेज और लेडी लायल की जमीन पर विकसित किए जा रहे इंटीग्रेटेड कैंपस में प्राइवेट रूम भी बनाए जाएंगे। प्राचार्य डा. प्रशांत गुप्ता ने बताया कि इंटीग्रेटेड कैंपस के तहत 50 प्राइवेट रूम बनेंगे। हर विभाग में प्राइवेट रूम होंगे, इसके लिए केजीएमयू, लखनऊ की तर्ज पर मरीजों से चार्ज लिया जाएगा।

रिमझिम फुहारों ने तेजी से लुढ़काया पारा

आगरा। मानसून के प्रदेश में एक बार फिर सक्रिय होने से मंगलवार को सुबह से ही मौसम सुहाना है। न्यूनतम तापमान में गिरावट दर्ज हुई है। सुबह बारिश का दौर थमा हुआ है लेकिन मौसम विभाग विज्ञान विभाग ने दिन में तेज बरसात को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी कर रखा है। मंगलवार को सुबह न्यूनतम तापमान 26.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। जो सामान्य से कम है। इससे पहले सोमवार को शहर में दिनभर फुहारों की झड़ी लगी रही। सुबह से शाम तक लगातार फुहारें पड़ती रहीं। इससे आम जनजीवन तो प्रभावित हुआ ही, तापमान में गिरावट आई। अधिकतम और न्यूनतम तापमान में केवल 0.7 डिग्री सेल्सियस का अंतर रह गया।रात और दिन का तापमान लगभगत एकसमान होने से मौसम सुहाना बना रहा। मौसम विज्ञान विभाग ने मंगलवार को भारी वर्षा का आरेंज अलर्ट जारी किया है।

दो सप्ताह का सड़क सुरक्षा जन आंदोलन संपन्न, उत्कृष्ट योगदानकर्ताओं का हुआ सम्मान

डीएम ईशा प्रिया बोलीं- अभियान खत्म हुआ, लेकिन सड़क सुरक्षा का संकल्प रहेगा जारी; आईआईटी मद्रास मॉडल की सराहना

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अम्बेडकरनगर। जिला प्रशासन और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर रोड सेफ्टी (सीओईआरएस), आईआईटी मद्रास के संयुक्त तत्वावधान में 7 से 21 जुलाई तक चले दो सप्ताह के 'सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान' का मंगलवार को लोहिया भवन सभागार में समापन हो गया। समापन समारोह में अभियान में उत्कृष्ट योगदान देने वाले स्वयंसेवकों, अधिकारियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और संस्थानों को सम्मानित किया गया। जिलाधिकारी ईशा प्रिया ने कहा कि सड़क सुरक्षा केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। उन्होंने बताया कि आईआईटी मद्रास के तकनीकी सहयोग से जनपद में सड़क दुर्घटनाओं के कारणों का वैज्ञानिक अध्ययन कराया गया और ब्लैक स्पॉट्स की पहचान कर वहां इंजीनियरिंग सुधार कार्य शुरू किए गए हैं। उन्होंने कहा कि पिछले एक माह में सड़क दुर्घटनाओं में लगभग 50 प्रतिशत की कमी दर्ज होना अभियान की बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अभियान भले ही समाप्त हो गया हो, लेकिन सड़क सुरक्षा का जन आंदोलन आगे भी जारी रहेगा।

कटेहरी विधायक धर्मराज निषाद ने कहा कि अभियान से लोगों में यातायात नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। उन्होंने हेलमेट, सीट बेल्ट और यातायात नियमों के पालन को दैनिक आदत बनाने पर जोर दिया। सीओईआरएस, आईआईटी मद्रास के प्रमुख प्रो. वेंकटेश बालासुब्रमणियन ने कहा कि अम्बेडकरनगर का डेटा आधारित सड़क सुरक्षा मॉडल देश के अन्य जिलों के लिए भी प्रेरणादायी साबित हो सकता है। उन्होंने इसे दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। समारोह में 'सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान' कॉफी टेबल बुक का भी लोकार्पण किया गया, जिसमें अभियान की प्रमुख गतिविधियों, नवाचारों और उपलब्धियों का दस्तावेजीकरण किया गया है। अभियान के दौरान विद्यालयों में जागरूकता कार्यक्रम, पदयात्राएं, ग्राम चौपाल, नुक्कड़ नाटक, पोस्टर एवं क्विज प्रतियोगिताएं, स्वास्थ्य शिविर, रेट्रो-रिफ्लेक्टिव टेप अभियान, ब्लैक स्पॉट सुधार और विशेष प्रवर्तन अभियान जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इनका हुआ सम्मान

सड़क सुरक्षा सखी सम्मान: पूनम पांडे, सुमन सिंह एवं सीमा मौर्य।

सड़क सुरक्षा मित्र सम्मान: संदीप कुमार, रवि गुप्ता एवं पवन कुमार पटेल।

विशेष सम्मान: यातायात उपनिरीक्षक जय बहादुर यादव।

विद्यालय उत्कृष्टता सम्मान: प्रथम- ब्रेनसीड इंटरनेशनल स्कूल, द्वितीय- रेडिएंट सेंट्रल चिल्ड्रेन एकेडमी, तृतीय- डिवाइन पब्लिक स्कूल। समारोह में विद्यार्थियों ने सड़क सुरक्षा विषय पर प्रदर्शनी और तकनीकी मॉडल प्रस्तुत किए, जिनकी अतिथियों ने सराहना की। कार्यक्रम में मुख्य विकास अधिकारी आनंद कुमार शुक्ला, अपर पुलिस अधीक्षक (पूर्वी), एआरटीओ, जिला विद्यालय निरीक्षक सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं बड़ी संख्या में सड़क सुरक्षा सखियां, मित्र और स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन एआरटीओ सत्येन्द्र कुमार यादव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

जिलाधिकारी ने आरसेटी में बीसी सखी प्रशिक्षुओं को वितरित किए प्रमाणपत्र

पौधारोपण कर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सराहना

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अम्बेडकरनगर। जिलाधिकारी ईशा प्रिया ने मंगलवार को अकबरपुर स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी) का भ्रमण कर बीसी सखी प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण पूर्ण होने पर प्रमाणपत्र वितरित किए, संस्थान परिसर में पौधारोपण किया तथा आरसेटी द्वारा संचालित कौशल विकास एवं स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सराहना की। कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाधिकारी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। आगमन पर बैंक ऑफ बड़ौदा के क्षेत्रीय प्रमुख मिहिर कुमार झा एवं अग्रणी जिला प्रबंधक कमलेश भास्कर ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया।

जिलाधिकारी ईशा प्रिया ने अपने संबोधन में कहा कि आरसेटी द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाओं एवं महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने बीसी सखियों से प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान एवं कौशल का पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ उपयोग करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने तथा आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने को कहा। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने बीसी सखी प्रशिक्षुओं को प्रमाणपत्र प्रदान किए तथा आरसेटी के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रशिक्षुओं द्वारा तैयार उत्पादों का अवलोकन कर उनकी सराहना की।

आरसेटी के निदेशक राजेश कुमार ने संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में बीसी सखियों को छह दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त जिला कारागार की महिला बंदियों को ब्यूटी पार्लर प्रबंधन का प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बैंक ऑफ बड़ौदा के क्षेत्रीय प्रमुख मिहिर कुमार झा ने कहा कि प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत बीसी सखियां बैंक ऑफ बड़ौदा की विभिन्न शाखाओं से जुड़कर अपने-अपने ग्राम पंचायतों में ग्रामीणों को बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराएंगी, जिससे वित्तीय समावेशन को और अधिक गति मिलेगी। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने संस्थान परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारी श्री अभय कुमार एवं नितिन राय सहित आरसेटी का समस्त स्टाफ एवं प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

छत पर सोये थे मां और बेटा, सुबह उठे तो आंखों के आगे छा गया अंधेरा

अलीगढ़। गांव बिलौना में सांप के डसने से मां-बेटे की मौत हो गई। रात में दोनों छत पर बिस्तर लगाकर सोए थे। सुबह जागने पर पहले बेटे ने आंखों के सामने अंधेरा होना बताया। मां ने भी अपने शरीर में कुछ ऐसी ही हलचल बताई। बिस्तर हटाया तो उसके नीचे सांप निकला। स्वजन दोनों को अलीगढ़ मेडिकल कालेज ले गए, जहां बेटे को मृत घोषित कर दिया। कुछ देर इलाज के बाद मां की भी सांसें थम गईं। सर्प ने मां को जांघ और बेटे को पैर में काटा। रविवार को इस घर में सात दिन पहले पैदा हुए शिशु का नामकरण संस्कार हुआ था। पुलिस ने दोनों के शवों का पोस्टमार्टम कराया है।

पुरानी रंजिश में लाठी से हमला, मुकदमा दर्ज

बलरामपुर। हरैया थाना क्षेत्र के हरिहरपुर (गणेशपुर) गांव में पुरानी रंजिश एक बार फिर हिंसक रूप ले बैठी। गांव के एक व्यक्ति पर गाली-गलौज करने, लाठी से हमला कर मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगा है। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार हरिहरपुर गणेशपुर निवासी जुबेर अहमद पुत्र मोहम्मद नसीम ने थाने में दी गई तहरीर में बताया कि 20 जुलाई को दोपहर करीब तीन बजे वह अपने गांव में मौजूद थे। इसी दौरान पुरानी रंजिश को लेकर गांव के ही सलीम पुत्र लल्लन उनसे उलझ गया।आरोप है कि पहले आरोपी ने अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए गाली-गलौज शुरू कर दी। जब जुबेर अहमद ने इसका विरोध किया तो आरोपी ने लाठी से हमला कर दिया, जिससे उन्हें चोटें आईं। पीड़ित का आरोप है कि मारपीट के दौरान आरोपी ने उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने और जान से मारने की धमकी भी दी। घटना के बाद आसपास के लोग मौके पर पहुंचे, जिसके बाद मामला शांत हुआ। इसके बाद पीड़ित ने थाने पहुंचकर आरोपी के खिलाफ लिखित शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की। प्रभारी निरीक्षक अनिल कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर के आधार पर आरोपी सलीम के विरुद्ध संबंधित धाराओं में एफआईआर दर्ज कर ली है। मामले की विवेचना उपनिरीक्षक मनोज कुमार सिंह को सौंपी गई है। घटनास्थल से जुड़े तथ्यों, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान और अन्य साक्ष्यों के आधार पर निष्पक्ष जांच की जाएगी। जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे, उनके अनुसार आगे की विधिक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।ग्रामीण क्षेत्र में पुरानी रंजिश को लेकर हुई इस घटना से गांव में कुछ समय के लिए तनाव का माहौल बन गया। हालांकि पुलिस का कहना है कि स्थिति पूरी तरह सामान्य है और मामले पर नजर रखी जा रही है। अधिकारियों ने लोगों से किसी भी विवाद की स्थिति में कानून अपने हाथ में न लेने तथा शांति बनाए रखने की अपील की है।

डीएम एसपी की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक संपन्न

सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम को लेकर दिए गए कड़े निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमेठी। जनपद में सड़क दुर्घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण, यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने तथा आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक जिलाधिकारी संजय चौहान की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई। बैठक में सड़क सुरक्षा से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत समीक्षा करते हुए संबंधित विभागों को समयबद्ध एवं प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। बैठक की शुरुआत गत बैठक में दिए गए निर्देशों के अनुपालन की समीक्षा से हुई। इस दौरान अधिशासी अधिकारियों ने बताया कि गौरीगंज एवं जायस नगर पालिका क्षेत्रों में टैक्सी स्टैंड और पार्किंग के लिए भूमि का चयन कर लिया गया है। इस पर जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि चयनित स्थलों पर पेयजल, शौचालय तथा साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए टैक्सी स्टैंड का सुव्यवस्थित संचालन कराया जाए, जिससे यात्रियों एवं वाहन चालकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। राजामऊ नहर की पटरी की मरम्मत के संबंध में जिलाधिकारी ने सिंचाई खंड-41 के अधिशासी अभियंता को आवश्यक निर्देश देते हुए कार्य शीघ्र पूर्ण कराने को कहा। वहीं गौरीगंज बस स्टेशन निर्माण कार्य की प्रगति की समीक्षा के दौरान एआरएम रोडवेज के बैठक में अनुपस्थित रहने पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने एआरएम का एक दिन का वेतन रोकने तथा उनसे स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश दिए। बैठक में कमरौली रेलवे क्रॉसिंग पर बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं को लेकर जिलाधिकारी ने बताया कि पूर्व में दिए गए निर्देशों के क्रम में रेलवे क्रॉसिंग के चौड़ीकरण का कार्य शीघ्र शुरू कराया जाएगा। इसके लिए राष्ट्रीय राजमार्ग के अधिशासी अभियंता को आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने राष्ट्रीय राजमार्ग पर जगदीशपुर एवं इन्हौना क्षेत्र में बढ़ते अतिक्रमण पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए। उन्होंने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों को संबंधित उप जिलाधिकारियों एवं क्षेत्राधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर प्रभावी कार्रवाई करने को कहा। यातायात निरीक्षक द्वारा वाहन चलाते समय मोबाइल फोन के प्रयोग की बढ़ती घटनाओं की जानकारी दिए जाने पर जिलाधिकारी ने अगले 15 दिनों तक विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि वाहन चलाते समय मोबाइल का उपयोग करने वाले लोगों के विरुद्ध अधिकतम चालान और जुर्माने की कार्रवाई की जाए, ताकि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके। बैठक में जनपद के चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स, सड़क सुधार कार्यों तथा यातायात नियमों के अनुपालन की स्थिति की भी समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि प्रमुख मार्गों एवं संवेदनशील स्थलों पर साइन बोर्ड, स्पीड ब्रेकर, रिफ्लेक्टर, रोड मार्किंग और सड़क मरम्मत के कार्य प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण कराए जाएं। साथ ही जहां कार्य पूर्ण हो चुके हैं, वहां भौतिक सत्यापन भी सुनिश्चित किया जाए। स्कूली वाहनों और सार्वजनिक परिवहन वाहनों की सुरक्षा को लेकर जिलाधिकारी ने विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी स्कूल वाहनों एवं बसों की नियमित जांच की जाए तथा उनके फिटनेस प्रमाण पत्र, परमिट और अन्य आवश्यक दस्तावेजों का सत्यापन किया जाए। साथ ही 15 वर्ष से अधिक पुराने वाहनों पर विशेष निगरानी रखते हुए नियमानुसार कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। सड़क सुरक्षा के दृष्टिकोण से जिलाधिकारी ने ड्रिंक एंड ड्राइव, बिना हेलमेट दोपहिया वाहन चलाने तथा सीट बेल्ट का प्रयोग न करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध प्रभावी चालान अभियान चलाया जाए। बैठक में सड़क किनारे उगी झाड़ियों की कटाई कर दृश्यता बढ़ाने, टोल प्लाजा पर कांटा, क्रेन, गैस कटर एवं एम्बुलेंस की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा प्रमुख चौराहों पर पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, संकेतक बोर्ड एवं चेतावनी संकेतों को दुरुस्त रखने पर भी

विशेष जोर दिया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि सड़क सुरक्षा केवल प्रशासनिक दायित्व नहीं बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है। इसलिए चालान एवं जुर्माने की कार्रवाई के साथ-साथ व्यापक जनजागरूकता अभियान भी चलाए जाएं, जिससे आमजन यातायात नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित हों। उन्होंने सड़क किनारे दुकानदारों द्वारा किए जा रहे अवैध अतिक्रमण पर भी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे अतिक्रमण दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को विशेष अभियान चलाकर सड़क किनारे किए गए अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए तथा चेतावनी दी कि दोबारा अतिक्रमण पाए जाने पर संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध कठोर दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। बैठक में पुलिस अधीक्षक सरवणन टी., मुख्य विकास अधिकारी पूजा साहू, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. अंशुमान सिंह, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी पन्नालाल, अधिशासी अभियंता निर्माण खंड रमेश चंद्र, एआरटीओ, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के प्रतिनिधि सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

कांवड़ यात्रा में DJ पर डलेगा फीता, ऊंचाई ज्यादा हुई तो होगी कार्रवाई, अलीगढ़ प्रशासन ने जारी की गाइडलाइन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अलीगढ़। श्रावण मास, कांवड़ यात्रा, चेहल्लुम व बारावफात को शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित ढंग से संपन्न कराने के लिए प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दी हैं। मंगलवार को कलक्ट्रेट सभागार में डीएम अविनाश कुमार व एसएसपी नीरज कुमार जादौन ने शांति समिति की बैठक कर पुलिस, प्रशासन व विभिन्न विभागों के अधिकारियों को समय रहते सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के निर्देश दिए। इसके बाद दोनों अधिकारियों ने अतरौली-रामघाट कांवड़ मार्ग का स्थलीय निरीक्षण कर जलभराव, सड़क व सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निर्देश दिए कि यात्रा में डीजे की ऊंचाई 10 फीट से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। बैठक में एडीएम सिटी किंशुक श्रीवास्तव ने बताया कि 30 जुलाई से श्रावण मास शुरू होगा। तीन अगस्त को पहला सोमवार व चेहल्लुम, 10 अगस्त को दूसरा सोमवार, 11 अगस्त को शिवरात्रि, 17 अगस्त को नाग पंचमी, 24 अगस्त को चौथा सोमवार व 26 अगस्त को बारावफात का आयोजन होगा। इसे देखते हुए सभी विभागों को समय रहते तैयारियां पूरी करने के निर्देश दिए गए हैं। बैठक में खेरेश्वर धाम, अचलेश्वर, भूमिया बाबा मंदिर व बिजौली के शिव मंदिर से जुड़े आयोजकों ने प्रकाश व्यवस्था, पेयजल, सुरक्षा और साफ-सफाई की मांग रखी। डीएम ने संबंधित अधिकारियों को सभी व्यवस्थाएं समय पर सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव व डीजीपी स्वयं कांवड़ यात्रा की तैयारियों की निगरानी कर रहे हैं।

दिव्यांगों के लिए आरक्षण, पेंशन और सुविधाओं में बड़ा विस्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार के दिव्यांगजन सशक्तिकरण (स्वतंत्र प्रभार) राज्यमंत्री नरेन्द्र कश्यप की अध्यक्षता में मंगलवार को योजना भवन स्थित 'वैचारिकी' सभागार में दिव्यांगता पर गठित राज्य सलाहकार बोर्ड की आठवीं बैठक आयोजित की गई। बैठक में दिव्यांगजनों के अधिकारों की सुरक्षा, समावेशी विकास और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बैठक की शुरुआत प्रमुख सचिव दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग राजेश कुमार सिंह ने मंत्री का स्वागत कर की। मंत्री नरेन्द्र कश्यप ने कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य दिव्यांगजनों को शिक्षा, कौशल, रोजगार और सामाजिक सहभागिता के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना है तथा उन्हें सभी सरकारी योजनाओं का पारदर्शी और समयबद्ध लाभ उपलब्ध कराना है। बैठक में निर्णय लिया गया कि विकास प्राधिकरणों, यूपीडा और औद्योगिक विकास प्राधिकरणों द्वारा दुकानों के आवंटन में दिव्यांगजनों के लिए आरक्षण 3 प्रतिशत से बढ़ाकर 5 प्रतिशत लागू किया जाए। इसके अलावा सार्वजनिक वितरण प्रणाली (राशन दुकानों) में भी दिव्यांगजनों को प्राथमिकता देने पर चर्चा हुई। राज्यमंत्री ने बताया कि दिव्यांग भरण-पोषण पेंशन बढ़ाकर 1,000 रुपये प्रतिमाह कर दी गई है। वित्तीय वर्ष 2026-27 में अब तक 10.44 लाख से अधिक पात्र दिव्यांगजनों को इसका लाभ मिल चुका है। वहीं, कुष्ठावस्था पेंशन 3,000 रुपये प्रतिमाह की दर से दी जा रही है, जिससे इस वर्ष 13,734 लाभार्थी लाभान्वित हुए हैं। सरकार ने दुकान निर्माण और संचालन के लिए मिलने वाली सहायता को भी पूर्ण अनुदान में परिवर्तित करने का निर्णय लिया है। कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरणों की अनुदान सीमा बढ़ाकर 15 हजार रुपये कर दी गई है। अब इस योजना में स्मार्टफोन, टैबलेट और डेजी प्लेयर भी शामिल किए गए हैं। 80 प्रतिशत या उससे अधिक दिव्यांगता वाले 16 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों को 25 हजार रुपये तक की सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। चालू वित्तीय वर्ष में प्रत्येक जिले में 15 मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल वितरित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्रदेश में वर्तमान में 21 विशेष विद्यालय और सात समेकित विशेष माध्यमिक विद्यालय संचालित हैं। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को ब्रेल पद्धति से शिक्षा दी जा रही है तथा छात्रवृत्ति बढ़ाकर 4,000 रुपये प्रतिमाह कर दी गई है। मंत्री ने निर्देश दिए कि प्रदेशभर में मंडल और जिला स्तर पर विशेष शिविर आयोजित कर दिव्यांगजनों का पंजीकरण, चिकित्सकीय परीक्षण, यूडीआईडी कार्ड, प्रमाणपत्र और सहायक उपकरणों का वितरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि योजनाओं का लाभ दूर-दराज क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारियों को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। बैठक में सार्वजनिक भवनों को दिव्यांगजन अनुकूल बनाने पर भी जोर दिया गया। मंत्री ने निर्देश दिए कि चिन्हित सरकारी भवनों का एक्सेस ऑडिट कराकर वहां रैंप, हैंडरेल, दिव्यांग-अनुकूल शौचालय, टैक्टाइल पथ, संकेतक और अन्य आवश्यक सुविधाएं विकसित की जाएं, ताकि दिव्यांगजन बिना किसी बाधा के सरकारी सेवाओं का लाभ उठा सकें।

व्यापारियों के साथ हर कदम पर हमारा व्यापारी संगठन: विभूपुरी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मिश्रिख (सीतापुर)। उत्तरप्रदेश उद्योग व्यापार मण्डल के संरक्षक श्री भरत त्रिपाठी व जिला प्रभारी श्री उमेश शुक्ला की सहमति से जिलाध्यक्ष विभूति पुरी 'विभू' ने जिला महामंत्री गोविन्द सहाय गुप्ता/वागीश दिनकर बाजपेई सहित सम्पूर्ण कार्यसमिति की राय से मिश्रिख नगर कार्यसमिति व मिश्रित तहसील कार्यसमिति का गठन किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में नई कार्यसमिति को व्यापारियों के हर सुख दुख में खड़े रहने की सलाह दी।नई कार्यकारिणी में यतीन्द्र बब्लू अवस्थी को संरक्षक कमलाकांत मिश्रा को नगर अध्यक्ष कन्हैया गुप्ता को तहसील अध्यक्ष बनाया गया। नगर कार्यसमिति में प्रशांत कुमार सिंह को नगर महामंत्री सोमांश मिश्रा,आलोक सिंह, विश्वजीत वर्मा,जयंकर गुप्ता को नगर उपाध्यक्ष तथा नगर मंत्री में केशव त्रिवेदी, विशाल मिश्रा,हिमांशु सोनी व विजेंद्र वर्मा की नियुक्ति की गई श्याम प्रकाश वर्मा को नगर कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई चंदन त्रिवेदी मीडिया प्रभारी गौरव सिंह (गोलू) को सोशल मीडिया प्रभारी का दायित्व दिया गया नगर संगठन में सदस्य के रूप में अनिल वर्मा,प्रियांशु शर्मा,अभिषेक शुक्ला,सोमदत्त प्रताप सिंह,हरिकृष्ण वर्मा,अच्युत कुमार,शिवेश चंद्र वैश्य,रवि शंकर,मोहन गुप्ता,धर्मेंद्र गुप्ता व अमित वर्मा की नियुक्ति की गई। वहीं तहसील कार्यसमिति में अजय शुक्ला को तहसील महामंत्री, जगजीवन मिश्रा,शशांक पांडे सोनू,मुकुल दीक्षित,कृष्णा रस्तोगी,विनय मिश्रा और अंकुर मिश्रा को तहसील उपाध्यक्ष बनाया गया मनोज पाण्डेय,मुनीश गाजी,आकाश अवस्थी,संजय वर्मा,अमित सैनी,दीपांकल दीक्षित को तहसील मंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गई।दिनेश सिंह यादव को तहसील कोषाध्यक्ष शुभम शुक्ला व अभिषेक अवस्थी को तहसील मीडिया प्रभारी व गौरव सिंह व शुभम दीक्षित को सोशल मीडिया का कार्य सौंपा गया तहसील कार्यकारिणी सदस्य के रूप में हरीश मराठा,दिलीप मिश्रा,अनूप वर्मा,विक्की मिश्रा,प्रमोद तिवारी,सोनू तिवारी,ससम गुप्ता,चेतराम कश्यप,मोहित गुप्ता,अमित सिंह,शुभांशु मिश्रा,पारुल त्रिवेदी,हरिकेश गुप्ता,अजय दीक्षित,श्याम जी,शशांक मिश्रा,पंकज मिश्रा,विनोद शुक्ला,कुलदीप मिश्रा,गोलन शुक्ला और हेमू गुप्ता की नियुक्ति की गई। जिलाध्यक्ष विभू पुरी ने नवीन दायित्वधारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनसे ये आशा की कि वे संगठन के प्रति निष्ठावान रहते हुए संगठन को ऊंचाइयों पर ले जायेगे और व्यापारियों के हितों की रक्षा करेंगे।

पशुओं के चारे की उपलब्धता पर मंथन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कृषि-पशुपालन के एकीकृत मॉडल पर सरकार करेगी कार्ययोजना

लखनऊ। प्रदेश में गोवंश एवं अन्य पशुओं के लिए चारे की निर्बाध उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मंगलवार को विधानसभा स्थित समिति कक्ष में कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में पशुओं के चारे की उपलब्धता बढ़ाने तथा कृषि, पशुपालन और पर्यटन के एकीकृत विकास मॉडल पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक के दौरान चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश (उन्नाव) के वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों ने कृषि, पशुपालन एवं पर्यटन आधारित एकीकृत विकास मॉडल पर विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। विशेषज्ञों ने कृषि और पशुपालन को आधुनिक तकनीक एवं पर्यटन से जोड़कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के सुझाव भी प्रस्तुत किए। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह और पशुपालन मंत्री धर्मपाल सिंह ने विशेषज्ञों के सुझावों की सराहना करते हुए कहा कि सभी प्रस्तावों की विस्तृत समीक्षा कर सहयोग और क्रियान्वयन के लिए ठोस कार्ययोजना तैयार की जाएगी। कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि प्रदेश में पशुओं के लिए पर्याप्त चारे की उपलब्धता सरकार की प्राथमिकता है। इसके लिए विभागीय समन्वय के साथ दीर्घकालिक रणनीति तैयार की जा रही है, जिससे पशुपालकों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े। बैठक में अपर मुख्य सचिव पशुपालन मुकेश मेश्राम, प्रमुख सचिव कृषि रवींद्र, महानिदेशक उपकार डॉ. संजय सिंह, कृषि निदेशक डॉ. पंकज त्रिपाठी तथा चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, उन्नाव के वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ सहित कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

संकुल धरैंचा की संकुल शिक्षक बैठक सम्पन्न

अपने लॉक को सबसे अग्रणी लॉक बनाना है:- वीरेन्द्र कुमार ए0 आर0 पी0

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

खैराबाद सीतापुर। शासन की मंशानुसार खैराबाद ब्लॉक के समस्त संकुलों में शिक्षक संकुल बैठकों का आयोजन खण्ड शिक्षा अधिकारी प्रियांशी सक्सेना के दिशा निर्देशन में किया गया इसी क्रम में संकुल कासिमपुर में उत्तर प्रदेशीय पूर्व माध्यमिक जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष अपूर्व दीक्षित प्रवक्ता मनीष पांडेय ब्लॉक अध्यक्ष नरेश मिश्र उपाध्यक्ष आशीष मिश्र उपस्थित रहे इसी प्रकार सभी दस संकुलों में बैठकों का आयोजन किया गया। संकुल धरैंचा की जुलाई माह की संकुल बैठक पूर्व माध्यमिक विद्यालय धरैंचा में संपन्न हुई। इस अवसर पर ए आर पी वीरेन्द्र कुमार उपस्थुराहे।बैठक मासिक एजेंडा के अनुसार संचालित की गई संकुल शिक्षकों द्वारा विभाग द्वारा प्राप्त एजेंडे के आधार पर गतिविधि कराई गई। बच्चों को सीखने की लय में लाने के लिए तथा विज्ञान किट के उपयोग और स्मार्ट क्लास, टैबलेट आईसीटी लैब ,के प्रभावी उपयोग, पोर्टल पर अपलोड समय सारणी के अनुसार कक्षाएं व गतिविधियां, इको क्लब, रिमीडियल शिक्षण कैचअप,नवोदय विद्यालय प्रवेश फॉर्म भरने तथा बच्चों को प्रोत्साहन देने वाले कार्यों और यूनिफार्म आदि के सम्बन्ध में तथा मौखिक भाषा विकास संबंधी खेल गतिविधियों आदि पर चर्चा की गई विद्यालयों के सर्वोत्तम एकेडमिक अभ्यास पर चर्चा की गई। नोडल संकुल शिक्षक काज़िम हुसैन तथा संकुल शिक्षक हसन जमाल रिज़वी ने विस्तार से बताया संकुल शिक्षक एजाज़ अहमद मुदित पाण्डेय फ़ैजुल हसन ने कहा कि हम सब साथी शिक्षक टीम भावना से कार्य करेंगे तो प्रगति होगी और अगर किसी को कोई समस्या हो तो बताए उसका निस्तारण किया जाएगा।ए आर पी वीरेन्द्र कुमार ने सभी बिंदुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि अपने अपने विद्यालयों में शिक्षक डायरी अवश्य बनाएं और नियमित उसी के अनुसार कार्य करें जो भी कार्य करें पूरी तरह गुणवत्ता पूर्ण ढंग से करें तथा अपने कार्यो को सबसे पहले पूरा किया करें तभी हम सफलता हासिल कर सकते हैं निपुण आंकलन प्रत्येक माह के प्रथम सप्ताह में शत प्रतिशत आवश्यक रूप से करवाना आवश्यक है क्योंकि यह जिला अधिकारी महोदय की प्रथम वरीयता में एक है।बैठक का शुभारंभ ए आर पी वीरेन्द्र कुमार,मुदित पांडेय और के द्वारा द्वीप प्रज्वलित करके किया गया। बैठक में संकुल धरैंचा के 108 शिक्षकों के सापेक्ष 25 शिक्षक मौजूद थे। इसी अवसर पर सभी संकुल शिक्षकों द्वारा डी सी एफ भी भरा गया। बैठक का संचालन संकुल शिक्षक काज़िम हुसैन ने किया। बैठक के अंत में प्रभारी प्रधानाध्यापिका फिरोजा बानो ने आभार व्यक्त किया। ज्ञात रहे कि अगस्त माह की बैठक पूर्व माध्यमिक विद्यालय हुसैनपुर कैमहरा में और सितंबर माह की प्राथमिक विद्यालय कैमहरा हुसैनपुर में आयोजित होगी।

भव्य समारोह में मनाया गया राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रदेश सचिव का जन्मदिन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ । वृन्दावन कालोनी में आवास पर संगठन के पदाधिकारियो एवं सदस्यो द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रदेश सचिव का जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया । इसमें सभी लोगो ने राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रदेश सचिव एस0 के0 द्विवेदी को टीका लगाकर , माला पहनाकर अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया । तथा केक खिलाकर जन्म दिन की मुबारकबाद दिया । इस शुभ अवसर पर दो टूक मिडिया के वरिष्ठ पत्रकार दयाशंकर शास्त्री एवं संगठन के महासचिव पं0 उमाशंकर बाजपेई ने मन्त्रोचार करते हुए वातावरण को मनमोहक बना दिया । इस अवसर पर उपस्तिथ वरिष्ठ पत्रकार दयाशंकर शास्त्री , सरनाम सिंह वर्मा , उमाशंकर बाजपेई , सदस्य अमरेन्द्र बहादुर वर्मा , , आकाश जयसवाल, सचिवालय कर्मी, सलीम खाँन, ठाकुर शिवमगन सिंह तथा सैकड़ो की सख्या में समाजसेवी व कालोनी वासी रहे । एस0 के0 द्विवेदी ने आये हुए सभी पदाधिकारियो एवं सदस्यो का हृदय से आभार व्यक्त किया ।

संक्षिप्त खबरें

14 वर्षीय बच्चे की सर्पदंश से मौत

बिसवां/सीतापुर। नगर के मोहल्ला अमर नगर निवासी 14 वर्षीय कृष्णा तिवारी पुत्र दिनेश तिवारी की सर्पदंश से मौत हो गई। घटना से परिजनों में कोहराम मच गया और पूरे मोहल्ले में शोक की लहर दौड़ गई। परिजनों के अनुसार मंगलवार सुबह करीब पांच बजे घर पर कृष्णा के पैर में विषैले सर्प ने डस लिया। उसने इस घटना की जानकारी तत्काल किसी को नहीं दी। करीब तीन घंटे बाद जब उसकी तबीयत अचानक बिगड़ने लगी, तब उसने परिजनों को सर्पदंश की जानकारी दी। परिजन तत्काल उसे एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां से चिकित्सकों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) बिसवां रेफर कर दिया। सीएचसी में प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर देखते हुए उसे जिला अस्पताल भेजा गया। इसके बाद परिजन उसे महमूदाबाद ले गए, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक कृष्णा तिवारी स्थानीय सरस्वती विद्या मंदिर में कक्षा चार का छात्र था।

अनुशासनहीनता पर प्रयागराज मंडल के अपर निदेशक डॉ. अनिल कुमार निलंबित

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के पशुधन मंत्री धर्मपाल सिंह के निर्देश पर प्रयागराज मंडल में तैनात पशुपालन विभाग के अपर निदेशक (ग्रेड-2) डॉ. अनिल कुमार को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। उनके विरुद्ध अनुशासनहीनता, शासकीय नियमों के उल्लंघन तथा पदीय दायित्वों की अवहेलना के आरोपों में विभागीय अनुशासनिक कार्रवाई भी शुरू कर दी गई है। सरकारी आदेश के अनुसार निलंबन अवधि में डॉ. अनिल कुमार को गोरखपुर मंडल के मंडलायुक्त कार्यालय से संबद्ध किया गया है। विभागीय जानकारी के मुताबिक, डॉ. अनिल कुमार पर पशु चिकित्सालय चाका, प्रयागराज को आवंटित बहुउद्देशीय सचल राजकीय वाहन का नियमों के विपरीत निजी उपयोग करने का आरोप है। इसके अलावा समूह 'ग' एवं 'घ' के कर्मचारियों के कथित अवैध स्थानांतरण, सरकारी वाहन पर अनधिकृत रूप से लाल-नीली बत्ती का उपयोग, मानव संपदा पोर्टल पर आवश्यक प्रीफिक्सिंग न कराने, अनुशासनहीनता तथा शासकीय नियमों और पदीय दायित्वों की अवहेलना जैसे गंभीर आरोप भी लगाए गए हैं।

सीतापुर के महमूदाबाद में बदहाल मार्ग बना चुनौती

अतरौली सिहारू खेड़ा प्राथमिक विद्यालय के रास्ते पर जलभराव से बच्चों की राह मुश्किल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महमूदाबाद-सीतापुर। तहसील क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम अतरौली सिहारू खेड़ा के प्राथमिक विद्यालय का मुख्य मार्ग इन दिनों अत्यंत खराब स्थिति में पहुंच गया है, जिससे छात्र-छात्राओं और स्थानीय निवासियों को रोजाना भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। रास्ते पर बड़े पैमाने पर पानी जमा होने और कीचड़ की वजह से बच्चों के लिए विद्यालय तक पहुंचना किसी चुनौती से कम नहीं है। ग्रामीणों का कहना है कि जरा सी बारिश या जलभराव के कारण पूरी सड़क कीचड़ से पट जाती है, जिससे स्कूल आने वाले बच्चों के कपड़े गंदे हो जाते हैं। इसके अलावा, अत्यधिक फिसलन होने की वजह से छोटे बच्चों के फिसलकर चोटिल होने का खतरा हर वक्त बना रहता है। इस मार्ग का उपयोग केवल विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि शिक्षक और आम ग्रामीण भी करते हैं, जिन्हें इस बदहाली के बीच से ही आवाजाही करनी पड़ती है। क्षेत्रीय लोगों का मुख्य आरोप है कि इस इलाके में लंबे अर्से से जल निकासी के पुख्ता इंतजाम नहीं किए गए हैं। रास्ते पर लगातार गंदा पानी भरा रहने से मच्छरों का प्रकोप तेजी से बढ़ा है, जिससे आसपास के क्षेत्र में किसी गंभीर संक्रामक बीमारी के फैलने की आशंका भी गहराने लगी है। परेशान ग्रामीणों ने जिला प्रशासन, ग्राम पंचायत और संबंधित महकमों के अधिकारियों से तत्काल हस्तक्षेप करने की मांग उठाई है। उन्होंने विद्यालय के रास्ते की तुरंत साफ-सफाई करवाने, पानी की निकासी का स्थायी समाधान निकालने और सड़क को दुरुस्त कर आवागमन के अनुकूल बनाने की पुरजोर मांग की है। लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं किया गया, तो बच्चों की पढ़ाई के साथ-साथ ग्रामीणों का दैनिक जीवन भी गंभीर रूप से प्रभावित होता रहेगा।

आईजीआरएस शिकायतों पर नगर निगम की बड़ी कार्रवाई

नवीन गल्लामंडी, खदरा पुरानी चुंगी एवं सीतापुर रोड क्षेत्र में चला अतिक्रमण हटाओ अभियान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। नगर निगम लखनऊ के जोन-3 में नागरिकों की शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए अतिक्रमण के विरुद्ध सोमवार 20 जुलाई को विशेष अभियान चलाया गया। जोनल अधिकारी श्री अजीत राय के निर्देश पर नगर निगम की टीम द्वारा विभिन्न स्थानों पर अवैध कब्जों को हटाया गया तथा शमन शुल्क की वसूली की गई। राम नरेश द्विवेदी के नेतृत्व में जनसूचना के माध्यम से प्राप्त शिकायत के क्रम में नवीन गल्लामण्डी गेट नम्बर-2 के सामने किए गए अतिक्रमण को हटाया गया। इस कार्रवाई के दौरान संबंधित पक्ष से ?4,800 का शमन शुल्क भी वसूला गया। शिकायतकर्ता दीन दयाल पुरम, खदरा द्वारा दर्ज ऑनलाइन आईजीआरएस शिकायत के आधार पर खदरा पुरानी चुंगी से लेकर शिव चरण होटल तक सड़क पर सब्जी मंडी एवं अन्य वस्तुओं के ठेलों द्वारा किए गए अवैध कब्जों के विरुद्ध अभियान चलाया गया। नगर निगम की टीम ने मौके पर पहुंचकर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की। ऑनलाइन आईजीआरएस शिकायत के तहत शिकायतकर्ता द्वारा नाले पर किए गए अवैध कब्जे की शिकायत दर्ज कराई गई थी। शिकायत के क्रम में संबंधित स्थल का निरीक्षण कर अतिक्रमण हटाने एवं भविष्य में पुन: अवैध कब्जा न होने के लिए आवश्यक कार्रवाई की गई। नगर निगम द्वारा माननीय उच्च न्यायालय के आदेश एवं शासनादेश के अनुपालन में संबंधित क्षेत्रों में पुन: अतिक्रमण न होने सुनिश्चित करने हेतु क्षेत्रीय पुलिस विभाग को पत्र प्रेषित कर दिया गया है। साथ ही, भविष्य में किसी भी प्रकार का अवैध अस्थायी कब्जा या अतिक्रमण न हो, इसके लिए सतत निगरानी रखी जाएगी।

युवाओं को रोजगार की नई सौगात, योगी सरकार ने लॉन्च किया केंद्रीकृत प्लेसमेंट पोर्टल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने तकनीकी शिक्षा प्राप्त युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए केंद्रीकृत प्लेसमेंट पोर्टल लॉन्च किया है। मंगलवार को प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष पटेल ने विधानसभा स्थित अपने कार्यालय में इस पोर्टल का शुभारंभ किया। पोर्टल के माध्यम से छात्र, शैक्षणिक संस्थान और उद्योग एक ही डिजिटल मंच पर जुड़कर प्लेसमेंट प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी, सरल और प्रभावी बना सकेंगे। इस पोर्टल पर उद्योग अपनी रिक्तियों और रोजगार संबंधी सूचनाएं सीधे अपलोड कर सकेंगे। वहीं छात्र अपनी प्रोफाइल और रिज्यूमे तैयार कर विभिन्न कंपनियों में उपलब्ध नौकरियों की जानकारी प्राप्त करने के साथ पात्रता के अनुसार ऑनलाइन आवेदन भी कर सकेंगे। पोर्टल पर नौकरी की अधिसूचना, पात्रता, आवेदन की अंतिम तिथि और कंपनी से जुड़ी सभी आवश्यक जानकारियां उपलब्ध रहेंगी। उद्योगों के लिए अलग डैशबोर्ड की सुविधा भी विकसित की गई है। इसके माध्यम से कंपनियां पंजीकरण कर नई भर्तियां प्रकाशित कर सकेंगी, चयनित अभ्यर्थियों की जानकारी देख सकेंगी और पात्र छात्रों के रिज्यूमे फिल्टर कर डाउनलोड भी कर सकेंगी। छात्रों के लिए पोर्टल पर रिज्यूमे बिल्डर की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इसमें वे अपनी शैक्षिक योग्यता, कौशल, इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप, व्यावसायिक अनुभव और अन्य उपलब्धियों का विवरण दर्ज कर पेशेवर रिज्यूमे तैयार कर सकेंगे तथा सीधे कंपनियों में आवेदन कर पाएंगे। शैक्षणिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों को भी प्लेसमेंट प्रबंधन की सुविधाएं प्रदान की गई हैं। संस्थान नौकरी संबंधी सूचनाएं जारी करने, चयनित छात्रों का रिकॉर्ड रखने, प्लेसमेंट डेटा प्रबंधित करने तथा पिछले वर्षों के प्लेसमेंट आंकड़ों को अपडेट करने का कार्य इसी पोर्टल के माध्यम से कर सकेंगे। सरकार का मानना है कि केंद्रीकृत प्लेसमेंट पोर्टल तकनीकी शिक्षा संस्थानों, विद्यार्थियों और उद्योगों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करेगा। इससे प्लेसमेंट प्रक्रिया अधिक पारदर्शी होगी और युवाओं को उनकी योग्यता एवं कौशल के अनुरूप रोजगार के अधिक अवसर मिलेंगे। प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष पटेल ने कहा कि योगी सरकार का उद्देश्य प्रदेश के युवाओं को उद्योगों की मांग के अनुरूप दक्ष बनाकर रोजगार और स्वरोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराना है।

जलकल विभाग, नगर निगम, जोन-4, गोमती नगर, लखनऊ

अल्पकालीन निविदा सूचना

प0सं0-55/ निविदा/ईई-4/2026-27, दिनांक-21/7/2026

एतद् द्वारा निम्नलिखित कार्यों हेतु जलकल विभाग नगर निगम में पंजीकृत ठेकेदारों से पृथक-पृथक निविदाए दिनांक 29/7/26 को अपरान्ह 3:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है जो उसी दिन अपरान्ह 3.30 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष इस कार्यालय में खोली जायेगी। निविदा प्रपत्र निर्धारित शुल्क कैश (नान रिफन्डेबल) कैश काउण्टर जोन-4 में जमा करके दिनाक- 29/7/26 अपरान्ह 200 तक प्राप्त किये जा सकेंगे। निविदा के साथ वांछित धरोहर राशि जमा करना अनिवार्य हैं। निविदा खुलने की तिथि को अपरिहार्य कारण से अवकाश होने पर निविदा अगले कार्य दिवस में नियत समय पर प्राप्त व खोली जायेगी। इच्छुक निविदादाता द्वारा निविदा प्रपत्र का अवलोकन किसी भी कार्य दिवस में किया जा सकता है। निविदा के साथ धरोहर राशि एफ0डी0आर0 / सी0डी0आर0/ बैंक गारंटी जो अधिशासी अभियन्ता, जलकल विभाग, नगर निगम, लखनऊ के नाम बंधक को जमा करना अनिवार्य है। बिना धरोहर राशि की निविदा मान्य नहीं होगी। शेष नियम व शर्ती निविदा प्रपत्र में उल्लिखित है।

क्र0 सं0	कार्य विवरण	निविदा मूल्य	धरोहर राहि
1	Laying work of 200mtr 110 mm dai. PVC pipeline from Anash Motor Garage to Tubewell Behananpurwa, Behananpurwa, Gomti Nagar, Jalkal Vibhag, nagar Nigam, Lucknow.	Rs. 250+18%G.S.T =295.00	Rs. 5000.00
2	Cleaning of 90mtr1000mm dai. Sewerline from opposite of URBANAC Building to Shaheed Path Bridge, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Jalkal Vibhag. Nagar Nigam, Lucknow.	Rs. 300+18%G.S.T =354.00	Rs. 6000.00
3	Cleaning of 90mtr1000mm dai. Sewerline from opposite of Shalimar Building to IGP Gate No. 2, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Jalkal Vibhag, Nagar Nigam, Lucknow.	Rs. 300+18%G.S.T =354.00	Rs. 6000.00
4	Cleaning of 90mtr 1000mm dai. Sewerline from opposite of Shalimar Corporate Park to Cyber Height Building, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Jalkal Vibhag. Nagar Nigam, Lucknow.	Rs. 300+18%G.S.T =354.00	Rs. 6000.00

अधिशासी अभियन्ता, जोन-4
जलकल विभाग, नगर निगम
लखनऊ।

संपादकीय

काश ! पहले ही वार्ता हो जाती ---------

कल 20 जुलाई को दिल्ली में जो कुछ हुआ वह नहीं होना चाहिए था। छात्र अपनी मांगों को लेकर लगभग तीन सप्ताह से प्रोटेस्ट कर रहे थे और कल जब उनसे बातचीत करने सरकार का कोई नुमाइंदा नहीं आया और सोनम बाइचुंग पुलिस ने जबरन उठाकर अस्पताल में भर्ती कराया तो छात्र आक्रोशित हो गए। फिर छात्रों ने संसद कूंच का निर्णय लिया तो दिल्ली पुलिस ने घेराबंदी कर दी, छात्रों पर आंसू गैस के गोले छोड़ना, लाठी चार्ज करना वहां से निकले वीडियो में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। फिर सरकार ने बातचीत के लिए जेपी नड्डा को नियुक्त तो सीजेपी के दो लोग जेपी नड्डा से मिलने पहुंचे और उन्होंने अपनी मांग रखी। क्या सरकार पहले ऐसा नहीं कर सकती थी, क्या इस तरह के क़दम उठाना बर्बरता नहीं थी।लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत यही है कि हर नागरिक और हर संगठन को अपनी बात शांतिपूर्ण तरीके से रखने का अधिकार है। जब किसी मुद्दे पर सरकार और जनता के बीच संवाद कमजोर पड़ जाता है, तब विरोध-प्रदर्शन लोकतांत्रिक व्यवस्था का स्वाभाविक हिस्सा बन जाते हैं। हाल ही में सीजेपी द्वारा किए गए विरोध-प्रदर्शन ने भी यही सवाल खड़ा किया है कि यदि सरकार और आंदोलनकारी पहले ही गंभीरता से बातचीत कर लेते, तो क्या स्थिति इतनी आगे बढ़ती ? क्या धरना-प्रदर्शन, तनाव और टकराव से बचा जा सकता था। यह प्रश्न केवल किसी एक संगठन या सरकार तक सीमित नहीं है। यह भारत के लोकतांत्रिक ढांचे की उस चुनौती की ओर संकेत करता है, जहां संवाद की कमी अक्सर आंदोलनों को जन्म देती है। यदि समय रहते बातचीत हो जाए, तो कई विवाद बिना किसी टकराव के सुलझाए जा सकते हैं। लोकतंत्र में विरोध प्रदर्शन कोई असामान्य घटना नहीं है। जब लोगों को लगता है कि उनकी समस्याओं को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जा रहा है, तब वे सड़क पर उतरकर अपनी आवाज बुलंद करते हैं। संविधान भी नागरिकों को शांतिपूर्ण प्रदर्शन का अधिकार देता है। लेकिन विरोध का उद्देश्य केवल सरकार की आलोचना करना नहीं होना चाहिए। उसका मकसद समाधान तक पहुंचना होना चाहिए। यदि प्रदर्शन केवल राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप का माध्यम बन जाए, तो उसका मूल उद्देश्य कमजोर पड़ जाता है। कई बार सरकारें यह मान लेती हैं कि आंदोलन समय के साथ स्वत: समाप्त हो जाएगा। दूसरी ओर आंदोलनकारी यह मानते हैं कि बिना दबाव बनाए सरकार उनकी बात नहीं सुनेगी। इसी सोच के कारण दोनों पक्ष अपनी-अपनी स्थिति पर अड़े रहते हैं। यदि शुरुआत में ही दोनों पक्ष बातचीत की मेज पर बैठ जाएं, तो कई समस्याओं का समाधान निकल सकता है। संवाद केवल समझौता नहीं होता, बल्कि एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का अवसर भी देता है। यदि आंदोलन शुरू होने से पहले या शुरुआती चरण में ही संबंधित पक्षों के बीच औपचारिक वार्ता होती, तो संभव है कि विरोध इतना लंबा न चलता। कई बार केवल आश्वासन नहीं, बल्कि स्पष्ट समयसीमा और लिखित कार्ययोजना भी लोगों का विश्वास बढ़ाती है। सरकार की जिम्मेदारी होती है कि वह जनता की चिंताओं को सुने। वहीं आंदोलनकारी संगठनों की भी जिम्मेदारी होती है कि वे बातचीत के सभी लोकतांत्रिक विकल्पों का पूरा उपयोग करें। किसी भी लोकतंत्र में केवल सरकार ही जिम्मेदार नहीं होती। आंदोलन करने वाले संगठनों की भी जिम्मेदारी होती है कि वे शांतिपूर्ण तरीके से अपनी मांगें रखें और बातचीत के लिए हमेशा तैयार रहें। सरकार को चाहिए कि वह विरोध को केवल राजनीतिक नजरिए से न देखे। यदि किसी मुद्दे पर बड़ी संख्या में लोग चिंता व्यक्त कर रहे हैं, तो उसे गंभीरता से सुनना लोकतांत्रिक दायित्व है।हर बड़ा आंदोलन राजनीतिक चर्चा का विषय बन जाता है। विपक्ष सरकार पर संवेदनहीन होने का आरोप लगाता है, जबकि सरकार कई बार आंदोलन के पीछे राजनीतिक उद्देश्य होने की बात कहती है। इस माहौल में वास्तविक मुद्दा पीछे छूट जाता है।यदि प्रारंभिक स्तर पर ही संवाद स्थापित हो जाए, तो राजनीतिक टकराव भी कम हो सकता है और जनता का ध्यान समाधान पर केंद्रित रह सकता है। आम नागरिक किसी भी विवाद का शांतिपूर्ण समाधान चाहता है। लंबा आंदोलन, प्रशासनिक तनाव और राजनीतिक बयानबाजी अंतत: जनता को ही प्रभावित करती है। लोग चाहते हैं कि सरकार उनकी बात सुने और संगठन भी समाधान की दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाएं। सीजेपी के विरोध-प्रदर्शन से सबसे बड़ा सबक यही मिलता है कि संवाद का कोई विकल्प नहीं है। लोकतंत्र में विरोध और वार्ता दोनों साथ-साथ चलते हैं। यदि केवल विरोध हो और वार्ता न हो, तो समाधान कठिन हो जाता है। यदि केवल आश्वासन हो और कार्रवाई न हो, तो जनता का विश्वास कम होता है। इसलिए आवश्यक है कि भविष्य में किसी भी विवाद को शुरुआती स्तर पर ही बातचीत के माध्यम से सुलझाने का प्रयास किया जाए। इससे समय, संसाधन और सामाजिक तनाव—तीनों की बचत होगी। 'काश पहले ही वार्ता कर ली होती' केवल एक भावनात्मक टिप्पणी नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है। किसी भी आंदोलन का सबसे अच्छा अंत तब होता है, जब दोनों पक्ष सम्मानपूर्वक बातचीत करें और ऐसा समाधान निकालें जो कानून, संविधान और जनहित—तीनों के अनुरूप हो। सरकार और आंदोलनों के बीच विश्वास का पुल केवल संवाद से बनता है। यदि यह संवाद समय पर शुरू हो जाए, तो न केवल विरोध-प्रदर्शन की तीव्रता कम हो सकती है, बल्कि लोकतंत्र भी अधिक मजबूत और उत्तरदायी बन सकता है।

राजीव शुक्ला -(संपादक)

मेष राशि -मेष राशि के जातकों के लिए आज का दिन कार्यक्षेत्र में नई संभावनाएं लेकर आ सकता है। अधिकारियों का विश्वास जीतने में सफलता मिलेगी और नई जिम्मेदारियां भी मिल सकती हैं। यदि किसी साझेदारी वाले कार्य की योजना बना रहे हैं तो उसमें अनुकूल परिस्थितियां बनेंगी।

वृषभ राशि-वृषभ राशि के लोगों के लिए आज का दिन कार्यक्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लेकर आ सकता है। नौकरी करने वालों को वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, जबकि व्यापार से जुड़े लोगों के रुके हुए कार्य गति पकड़ सकते हैं।

मिथुन राशि-मिथुन राशि के जातकों के लिए आज रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलने के योग हैं। शिक्षा, साहित्य, कला अथवा जनसंचार से जुड़े लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा।

कर्क राशि-कर्क राशि के लोगों के लिए आज परिवार और घरेलू मामलों पर विशेष ध्यान देने का दिन रहेगा। संपत्ति, भवन अथवा वाहन से जुड़ी कोई सकारात्मक सूचना मिल सकती है। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में स्थिरता बनी रहेगी।

सिंह राशि-सिंह राशि के जातकों का आत्मविश्वास आज बढ़ा हुआ रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपके सुझावों को महत्व मिलेगा और अधिकारी भी आपके कार्य से संतुष्ट दिखाई देंगे।

कन्या राशि-कन्या राशि के लोगों को आज आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी बरतनी होगी। कार्यक्षेत्र में आपकी मेहनत का उचित परिणाम मिलने के संकेत हैं और नई जिम्मेदारियां भी सौंपी जा सकती हैं।

तुला राशि-तुला राशि के जातकों के लिए आज का दिन विशेष रूप से अनुकूल रहने वाला है। चंद्रमा के आपकी राशि में प्रवेश करने से आत्मविश्वास और व्यक्तित्व में आकर्षण बढ़ेगा।

वृश्चिक राशि-वृश्चिक राशि के लोगों को आज धैर्य और संयम के साथ आगे बढ़ना होगा। कार्यस्थल पर किसी भी प्रकार के विवाद से दूर रहना आपके हित में रहेगा। लंबे समय से अधूरे पड़े कार्यों को पूरा करने का प्रयास सफल हो सकता है।

धनु राशि-धनु राशि के जातकों के लिए आज मित्रों और सामाजिक संबंधों से लाभ मिलने की संभावना है। कार्यक्षेत्र में नए अवसर प्राप्त हो सकते हैं और व्यापार में भी विस्तार के संकेत हैं। लंबे समय से रुका हुआ कोई महत्वपूर्ण कार्य पूरा होने से मन प्रसन्न रहेगा।

मकर राशि-मकर राशि के लोगों के लिए आज का दिन करियर की दृष्टि से महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। पदोन्नति, नई जिम्मेदारी अथवा अधिकारियों की सराहना मिलने की संभावना है। व्यापार में विस्तार की योजनाएं गति पकड़ सकती हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी और आय के नए साधन भी प्राप्त हो सकते हैं।

कुंभ राशि-कुंभ राशि के जातकों के लिए आज भाग्य का अच्छा साथ मिलने के संकेत हैं। कार्यक्षेत्र में नई उपलब्धियां हासिल हो सकती हैं और लंबे समय से किए जा रहे प्रयासों का सकारात्मक परिणाम मिलेगा।

मीन राशि-मीन राशि के लोगों को आज किसी भी कार्य में जल्दबाजी से बचना चाहिए। कार्यक्षेत्र में धैर्य और विवेक के साथ आगे बढ़ने से बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

प्रदेश के विकास की मजबूत नींव में बेहतर सड़कें और पुल दे रहे हैं गति

उार प्रदेश जैसे विशाल और सर्वाधिक आबादी वाले राज्य में मजबूत सड़क नेटवर्क का महत्व और भी बढ़ जाता है। मुयमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के कुशल नेतृत्व में उार प्रदेश लोक निर्माण विभाग ने आधारभूत संरचना के विकास को नई दिशा और नई गति प्रदान की है। वर्ष 2012 से 2017 तथा वर्ष 2017 के बाद की अवधि के तुलनात्मक आँकड़े इस परिवर्तन की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। ये आँकड़े केवल निर्माण कार्यों की संया नहीं दर्शाते, बल्कि बदलती कार्यसंस्कृति, बेहतर योजना, प्रभावी निगरानी और परिणामोन्मुखी प्रशासन का भी प्रमाण हैं। प्रदेश सरकार ने सड़कों के निर्माण एवं चौड़ीकरण को विकास की प्राथमिकता बनाया। इसी सोच का परिणाम है कि जहाँ 01 अप्रैल 2012 से 31 मार्च 2017 के बीच पाँच वर्षों में कुल 31,868 किलोमीटर सड़कों का चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं नवनिर्माण किया गया था, वहीं 01 अप्रैल 2017 के बाद यह उपलधि बढ़कर 66,838 किलोमीटर तक पहुँच गई। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में प्रदेश में सड़क निर्माण कार्यों को नई गति और व्यापक विस्तार मिला है।

किसी भी राज्य या राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक प्रगति उसकी सड़क एवं परिवहन व्यवस्था पर निर्भर करती है। सड़कें केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने का माध्यम नहीं होतीं, बल्कि वे विकास, निवेश, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और समृद्धि की आधारशिला होती हैं। जब किसी प्रदेश की सड़कें बेहतर होती हैं, तो किसान अपनी उपज समय पर मंडियों तक पहुँचा पाते हैं, उद्योगों को कच्चा माल और तैयार उत्पाद के परिवहन में सुविधा मिलती है, विद्यार्थियों को शिक्षा संस्थानों तक पहुँच आसान होती है तथा मरीजों को समय पर चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध हो पाती हैं। उत्तर प्रदेश जैसे विशाल और सर्वाधिक आबादी वाले राज्य में मजबूत सड़क नेटवर्क का महत्व और भी बढ़ जाता है। मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के कुशल नेतृत्व में उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग ने आधारभूत संरचना के विकास को नई दिशा और नई गति प्रदान की है। वर्ष 2012 से 2017 तथा वर्ष 2017 के बाद की अवधि के तुलनात्मक आँकड़े इस परिवर्तन की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। ये आँकड़े केवल निर्माण कार्यों की संख्या नहीं दर्शाते, बल्कि बदलती कार्यसंस्कृति, बेहतर योजना, प्रभावी निगरानी और परिणामोन्मुखी प्रशासन का भी प्रमाण हैं। प्रदेश सरकार ने सड़कों के निर्माण एवं चौड़ीकरण को विकास की प्राथमिकता बनाया। इसी सोच का परिणाम है कि जहाँ 01 अप्रैल 2012 से 31 मार्च 2017 के बीच पाँच वर्षों में कुल 31,868 किलोमीटर सड़कों का चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं नवनिर्माण किया गया था, वहीं 01 अप्रैल 2017 के बाद यह उपलब्धि बढ़कर 66,838 किलोमीटर तक पहुँच गई। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में प्रदेश में सड़क निर्माण कार्यों को नई गति और व्यापक विस्तार मिला है। वर्तमान समय में विभाग औसतन 20 किलोमीटर प्रतिदिन की गति से सड़कों का नवनिर्माण और चौड़ीकरण/सुदृढ़ीकरण का कार्य कर रहा है। यह केवल गति का संकेत नहीं, बल्कि बेहतर परियोजना प्रबंधन, समयबद्ध क्रियान्वयन और संसाधनों के प्रभावी उपयोग का परिचायक भी है। इस व्यापक सड़क विकास का सबसे बड़ा लाभ प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों को मिला है। जिन गाँवों तक पहले पहुँचने में घंटों लग जाते थे, वहाँ अब बेहतर सड़क संपर्क के कारण आवागमन सुगम हुआ है। इससे कृषि उत्पादों के परिवहन की लागत कम हुई है, ग्रामीण बाजारों का विस्तार हुआ है तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा मिली है। साथ ही धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटन स्थलों तक बेहतर पहुँच बनने से पर्यटन गतिविधियों को भी बढ़ावा मिला है, जिससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं। सड़क निर्माण के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण रखरखाव पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। किसी भी सड़क का निर्माण जितना महत्वपूर्ण होता है, उसका समय-समय पर नवीनीकरण और रखरखाव उतना ही आवश्यक होता है। इसी दिशा में उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। वर्ष 2012-2017 के दौरान 35,843 किलोमीटर सड़कों का नवीनीकरण किया गया था, जबकि वर्ष 2017 के बाद यह आँकड़ा बढ़कर 2,93,082 किलोमीटर तक पहुँच गया। यह लगभग 650 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि को दर्शाता है। वार्षिक औसत में भी उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलता है। पहले जहाँ प्रतिवर्ष औसतन 7,168 किलोमीटर सड़कों का नवीनीकरण किया जाता था, वहीं अब यह बढ़कर लगभग 31,413 किलोमीटर प्रतिवर्ष हो गया है। प्रदेश सरकार द्वारा बनाये जा रहे सड़क रखरखाव की गति पहले की तुलना में चार गुना से अधिक हो चुकी है। बेहतर सड़कें दुर्घटनाओं में कमी लाने के साथ-साथ वाहनों की ईंधन खपत घटाने, यात्रा समय कम करने तथा परिवहन लागत में कमी लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

इन सड़कों का सीधा प्रभाव स्वास्थ्य और आपदा प्रबंधन पर भी दिखाई देता है। आज एम्बुलेंस सेवाएँ, पुलिस, अग्निशमन दल और अन्य आपातकालीन सेवाएँ पहले की अपेक्षा कहीं अधिक तेजी से दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच पा रही हैं। इससे न केवल लोगों की सुरक्षा बढ़ी है बल्कि अनेक परिस्थितियों में समय पर सहायता मिलने से जीवन भी बचाए जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश में बड़ी संख्या में नदियाँ, नाले और जलधाराएँ हैं, जो अनेक स्थानों पर आवागमन में बाधा बनती रही हैं। ऐसे में पुलों का निर्माण केवल परिवहन सुविधा नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक एकीकरण का माध्यम भी है। पुल बनने से दो क्षेत्रों के बीच की दूरी कम होती है, व्यापारिक गतिविधियाँ तेज होती हैं और लोगों का समय तथा संसाधन दोनों बचते हैं। वर्ष 2012 से 2017 के बीच प्रदेश में 591 पुलों का निर्माण किया गया था। वहीं वर्ष 2017 के बाद दीर्घ, लघु एवं उपरिगामी निर्मित पुलो की संख्या लगभग दो हजार हो गई है। पुल निर्माण में लगभग तीन गुना वृद्धि दर्ज की गई। वार्षिक औसत भी 118 पुल प्रति वर्ष से बढ़कर लगभग 211 पुल प्रति वर्ष हो गया। इससे अनेक ऐसे क्षेत्र, जो पहले बरसात के मौसम में कट जाते थे, अब पूरे वर्ष निर्बाध रूप से जुड़े रहते हैं। बेहतर सड़क और पुल नेटवर्क का सकारात्मक प्रभाव प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। परिवहन की लागत कम होने से उद्योगों और व्यापार को गति मिली है। कृषि उत्पाद तेजी से बाजार तक पहुँच रहे हैं, जिससे किसानों को बेहतर मूल्य मिलने की संभावनाएँ बढ़ी हैं। निवेशकों के लिए मजबूत आधारभूत संरचना हमेशा आकर्षण का केंद्र होती है, इसलिए बेहतर कनेक्टिविटी प्रदेश में औद्योगिक निवेश और नए रोजगार सृजन के लिए भी अनुकूल वातावरण तैयार कर रही है। आज उत्तर प्रदेश का सड़क एवं पुल नेटवर्क केवल भौतिक संरचना का विस्तार नहीं है, बल्कि यह प्रदेश के समग्र विकास का आधार बन चुका है। बेहतर कनेक्टिविटी से शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, पर्यटन और निवेश जैसे सभी क्षेत्रों को नई गति मिली है। यह परिवर्तन केवल आँकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रदेश के करोड़ों नागरिकों के दैनिक जीवन में महसूस किया जा सकता है। प्रदेश सरकार की स्पष्ट नीति, मजबूत नेतृत्व, प्रभावी कार्ययोजना और जवाबदेह कार्यसंस्कृति के समन्वय से निर्माण कार्य हो रहे है। वर्ष 2017 के बाद सड़क एवं पुल निर्माण की जिस गति और व्यापकता के साथ कार्य हुए हैं, ये निर्माण उत्तर प्रदेश को आधुनिक आधारभूत संरचना वाले राज्यों की श्रेणी में मजबूती से स्थापित किया है। आने वाले वर्षों में यही मजबूत बुनियादी ढांचा प्रदेश की आर्थिक प्रगति, निवेश वृद्धि और समावेशी विकास की सबसे बड़ी ताकत बनेगा।

-अभिषेक सिंह

प्रतापगढ़ में बायोफ्लॉक तकनीक से नीली क्रांति को मिली रफ्तार, रणंजय सिंह बने स्वरोजगार की मिसाल

इन दूरगामी योजनाओं के माध्यम से न केवल राज्य में मछली उत्पादन में अभूतपूर्व और रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी आजीविका और स्वरोजगार के नए-नए साधन भी निरंतर सृजित हो रहे हैं। प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का मुय ध्येय गांवों से होने वाले पलायन की समस्या पर प्रभावी अंकुश लगाना तथा ग्रामीण युवाओं को आत्मनिर्भर बनाकर रोजगार देने वाला बनाना है। मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए राज्य भर में चलाए जा रहे अभियानों और कार्यक्रमों ने ग्रामीण युवाओं को स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता का नया मार्ग दिखाया है। इसी क्रम में प्रदेश के विभिन्न जनपदों में चलाए जा रहे व्यापक जागरूकता कार्यक्रमों, पारदर्शी प्रक्रियाओं तथा ऑनलाइन आवेदन प्रणालियों से एक सुदृढ़ व्यवस्था स्थापित की गई है।

उत्तर प्रदेश में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने और ग्रामीण युवाओं को स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा मत्स्य पालन क्षेत्र को एक अग्रणी स्तंभ के रूप में विकसित किया जा रहा है। प्रदेश सरकार की दूरदर्शी नीतियों, आधुनिक तकनीकों के समावेशन और जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से राज्य का मत्स्य क्षेत्र नीली क्रांति की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। राज्य सरकार द्वारा मत्स्य विकास को विशेष प्राथमिकता देते हुए 'प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना' एवं 'मुख्यमंत्री मत्स्य संपदा योजना' का धरातल पर सफल संचालन किया जा रहा है। इन दूरगामी योजनाओं के माध्यम से न केवल राज्य में मछली उत्पादन में अभूतपूर्व और रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी आजीविका और स्वरोजगार के नए-नए साधन भी निरंतर सृजित हो रहे हैं। प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का मुख्य ध्येय गांवों से होने वाले पलायन की समस्या पर प्रभावी अंकुश लगाना तथा ग्रामीण युवाओं को आत्मनिर्भर बनाकर रोजगार देने वाला बनाना है। मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए राज्य भर में चलाए जा रहे अभियानों और कार्यक्रमों ने ग्रामीण युवाओं को स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता का नया मार्ग दिखाया है। इसी क्रम में प्रदेश के विभिन्न जनपदों में चलाए जा रहे व्यापक जागरूकता कार्यक्रमों, पारदर्शी प्रक्रियाओं तथा ऑनलाइन आवेदन प्रणालियों से एक सुदृढ़ व्यवस्था स्थापित की गई है। इस व्यवस्था के माध्यम से जरूरतमंद, पात्र और इच्छुक युवाओं तक योजनाओं का सीधा और पारदर्शी लाभ पहुँच रहा है। इसी क्रम में जनपद प्रतापगढ़ के विकास खंड सण्डवा चंद्रिका स्थित ग्राम कटका मानापुर के निवासी रणंजय सिंह ने मत्स्य पालन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता अर्जित कर क्षेत्र के अन्य युवाओं तथा किसानों के सामने एक उत्कृष्ट उदाहरण और प्रेरणा प्रस्तुत की है। पूर्व में पारंपरिक खेती-किसानी पर निर्भर रहने के कारण सीमित कृषि भूमि और निरंतर बढ़ती कृषि लागत के चलते उन्हें अपेक्षित आर्थिक लाभ नहीं मिल पा रहा था। पारंपरिक खेती से परिवार का भरण-पोषण तो हो जाता था, लेकिन आर्थिक प्रगति की गति अत्यंत धीमी थी। ऐसे समय में समाचार पत्रों, विभागीय प्रचार माध्यमों तथा विज्ञप्तियों के जरिए उन्हें मत्स्य पालन और विशेष रूप से बायोफ्लॉक तकनीक की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। जिला प्रशासन एवं संबंधित विभागीय योजनाओं के तकनीकी मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से प्रेरित होकर उन्होंने आधुनिक मत्स्य पालन को अपनाने का निश्चय किया। इसके उपरांत उन्होंने अपनी लगभग 0.10 हेक्टेयर निजी भूमि पर आधुनिक बायोफ्लॉक प्रणाली के तहत मत्स्य पालन इकाई की स्थापना का कार्य प्रारंभ किया। इस इकाई में पंगेशियस प्रजाति की मछलियों के पालन हेतु विभागीय स्वीकृति मिलने के उपरांत उन्होंने निजी बोरिंग, विद्युत संयोजन और सुरक्षित भंडारण जैसी आवश्यक बुनियादी सुविधाओं का विकास किया। कम पानी और सीमित भूमि में अधिक उत्पादन देने वाली यह पर्यावरण-अनुकूल प्रणाली उनके लिए अत्यंत लाभदायक और प्रभावकारी साबित हुई। चरणबद्ध तरीके से मत्स्य बीज का संचयन, वैज्ञानिक जल प्रबंधन और आहार नियंत्रण अपनाते हुए उनकी इस इकाई से औसतन 1.40 टन प्रति वर्ष मछली का उत्पादन प्राप्त होने लगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह पहल अत्यंत सफल और प्रेरणादायक सिद्ध हुई है। वर्तमान में उनकी इकाई पर लगभग 7 लाख रुपये की वार्षिक लागत आती है, जबकि उत्पादित मछली की बिक्री से प्रतिवर्ष लगभग 18 लाख रुपये तक की सकल आय अर्जित हो रही है। सभी आवश्यक संचालन व्ययों को घटाने के पश्चात उन्हें प्रतिवर्ष लगभग 6 लाख रुपये की शुद्ध आय प्राप्त हो रही है, जो पारंपरिक खेती की तुलना में कई गुना अधिक है। इसके अतिरिक्त, इस परियोजना के माध्यम से स्थानीय स्तर पर लगभग 10 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार भी उपलब्ध हुआ है, जिससे ग्रामीण युवाओं को गांव में ही आजीविका मिल रही है। उत्तर प्रदेश में पारंपरिक मत्स्य पालन से आगे बढ़ते हुए अब बायोफ्लॉक प्रणाली, रीसर्कुलेटिंग एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस) और केज कल्चर जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को व्यापक रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है। ये आधुनिक प्रणालियाँ कम लागत, सीमित जल और न्यूनतम भूमि में भी अधिकतम उत्पादन सुनिश्चित करती हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षित, प्रगतिशील और तकनीक-प्रेमी युवा इस व्यवसाय की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं और कृषि आधारित सहायक उद्यमों को एक नई दिशा दे रहे हैं।

ग्रामीण आत्मनिर्भरता और सामाजिक समरसता को विशेष गति देने के उद्देश्य से स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को भी मत्स्य पालन गतिविधियों, जैसे मत्स्य बीज उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन से बड़े पैमाने पर जोड़ा जा रहा है। इस पहल ने ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके साथ ही, ग्राम सभाओं के तालाबों को पट्टे पर देने की पारदर्शी प्रक्रिया के माध्यम से स्थानीय मछुआरा समुदायों, पारंपरिक मत्स्य पालकों और भूमिहीन परिवारों को प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे उनकी आय में निरंतर और स्थायी वृद्धि हो रही है। मत्स्य पालकों को आर्थिक सुरक्षा एवं जोखिम प्रबंधन प्रदान करने के उद्देश्य से बीमा कवरेज, किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) की सुविधा, उच्च गुणवत्ता वाले मत्स्य बीज और संतुलित आहार पर अनुदान निरंतर उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके साथ ही, जिला प्रशासन के सहयोग से आयोजित नियमित प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से मत्स्य पालकों को जल की गुणवत्ता, वैज्ञानिक रख-रखाव, बीमारी नियंत्रण और आहार प्रबंधन से संबंधित बारीकियों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जा रहा है, ताकि जोखिम को न्यूनतम करके उत्पादकता और लाभ को अधिकतम किया जा सके। उत्पादित मछली के उचित मूल्य प्रबंधन, गुणवत्ता संरक्षण और त्वरित विपणन के लिए प्रदेश भर में कोल्ड चेन, रेफ्रिजरेटेड वाहनों और आधुनिक मत्स्य बाजारों का मजबूत बुनियादी ढांचा तैयार किया जा रहा है। इन समेकित प्रयासों से बिचौलियों की भूमिका समाप्त हो रही है और उत्पादकों को उनकी उपज का सीधा और वाजिब मूल्य मिल पा रहा है। विपणन व्यवस्था के सुदृढ़ होने से ग्रामीण क्षेत्रों में एक नए व्यापारिक और व्यावसायिक तंत्र का निरंतर विकास हो रहा है। प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार के एकीकृत प्रयासों से उत्तर प्रदेश आज अंतर्देशीय मत्स्य उत्पादन के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में मजबूती से स्थापित हो चुका है। प्रतापगढ़ जनपद के रणंजय सिंह जैसे प्रगतिशील मत्स्य पालकों की सफलता यह सिद्ध करती है कि सही मार्गदर्शन के साथ सरकारी योजनाओं से जुड़कर ग्रामीण क्षेत्रों में भी बड़े स्तर पर आर्थिक परिवर्तन लाया जा सकता है। ऐसे प्रयास ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार की तलाश में पलायन को रोकने में भी कारगर हो रहे हैं।

जनपद- प्रतापगढ

रिमझिम में लुत्फ देगा घर का 'रेन कैफे'

बारिश के दिनों में जब बाहर रिमझिम फुहारों की झड़ी लगी हो, उन दिनों घर के भीतर एक ऐसा कोना बनाएं, जो सुकून दे, रचनात्मकता का अहसास कराए और घर से बाहर न निकल पाने पर परेशान न करे बल्कि उल्टे खूबसूरत पलों का अहसास दे। वजह, बारिश की पहली फुहार पड़ते ही सब कुछ धीमा हो जाता है। खिड़की पर गिरती बूंदें, कच्ची मिट्टी की सौंधी खुशबू की उमंग तब और कई गुना हो जाती है, जब हाथ में कॉफी का मग हो और कोई पसंदीदा किताब। जी हां, यह दृश्य किसी रेन कैफे का ही लगता है। लेकिन जरूरी नहीं है कि रेन कैफे घर के बाहर ही ढूंढ़े जाएं। थोड़ी सी रचनात्मकता से घर के अंदर भी एक कोने को रेन कैफे में बदला जा सकता है और इन दिनों रेन कैफे एट होम का एक ट्रेंड भी चल रहा है।आज लोग केवल सुंदर घर नहीं बल्कि एक ऐसा आशियाना चाहते हैं, जो उन्हें रचनात्मक लाइफस्टाइल दे। लंबे समय तक स्क्रीन से जुड़े रहने, लगातार काम करने और सोशल मीडिया की व्यस्तता के बीच लोग ऐसे निजी स्थान तलाश रहे हैं, जहां कुछ समय वह स्वयं के साथ रचनात्मक माहौल में गुजार सकें। घर के अंदर रेन कैफे इसी का एक विकल्प है। जहां लिखा-पढ़ा भी जा सके, मनपसंद संगीत सुना जा सके और जब मन करे परिवार के लोगों से बातें करना और खिड़की से बाहर बारिश निहारना भी एक सुखद अनुभव बन जाए।सबसे पहले इसे अपने घर में सही जगह चुनें। जहां प्राकृतिक रोशनी आती हो और यदि संभव हो तो घर के बाहर का भी दृश्य दिखायी देता हो। खिड़की के पास रखी आरामदायक चेयर, छोटा सा सोफा, फर्श पर पड़ा गद्दा यह भी एक शानदार विकल्प हो सकता है। यदि घर छोटा है, तो बालकनी, बेडरूम का कोना या ड्राइंग रूम का कोई शांत हिस्सा भी इसके लिए पर्याप्त है। दरअसल इस कोने के लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता आराम होनी चाहिए। मुलायम कुशन, हल्का कंबल, सूती या कॉटन की चादर और आरामदायक बैठने की व्यवस्था, रेन कैफे एट होम का यही मुख्य आकर्षण है।घर के अंदर रखे छोटे-छोटे पौधों का एक कोने में झुरमुट भी एक ताजगी भरी कल्पनाशीलता का अहसास कराता है। मनी प्लांट, पीस लिली, स्नेक प्लांट या कई किस्म के इंडोर पौधे, अगर एक कोने में इकट्ठे रखें हों तो उनकी झुरमुट जैसी आकृति एक खास तरह की ताजगी से भर देते हैं। यदि बालकनी ऐसी हो जहां आराम से बैठकर कॉफी और चाय का आनंद लेते हुए दुनिया के नजारे देखे जा सकते हों, तब तो कहना ही क्या? इस बालकनी में तुलसी, पुदीना या लेमन ग्रास जैसे पौधे सुगंध भी देते हैं। मन और नजरों का रिश्ता हरियाली से भी जोड़ते हैं। लेकिन इस सबके साथ रोशनी का होना खास है। क्योंकि बारिश के मौसम में प्राकृतिक रोशनी हमें कई तरह से तरोताजा करती है। रेन कैफे का दिलोदिमाग में सुकूनदायक दृश्य तभी उभरता है, जब हल्का सा संगीत बज रहा हो और हाथ में किताब हो। तब तो मानो रेन कैफे आपको एक इंटेलैक्चुअल बैठक में पहुंचा देता है। ऐसे मौसम में और ऐसे वातावरण में उपन्यास, कोई यात्रा वृत्तांत, कविता संग्रह या डायरी पढ़ना एक खास तरह के अहसास से भर देता है। रेन कैफे का मतलब केवल मसाला चाय नहीं है। वास्तव में अदरक, तुलसी की चाय, दालचीनी वाली ग्रीन टी, लेमन ग्रास, हर्बल टी, हॉट चॉकलेट या घर में बने हल्के सूप भी मानसून का आनंद बढ़ाते हैं। साथ में भुना मखाना, ड्राई फ्रूट्स, कॉर्न चाट या घर के बने हल्के स्नैक्स रखें ताकि स्वाद और सेहत दोनो का संतुलन बना रहे। रेन कैफे एट होम का मजा और महत्व तब और अधिक बढ़ जाता है, जब हम यहां बैठते समय मोबाइल को खुद से दूर रखें। परिवार के साथ बातचीत करें, बच्चों के साथ बोर्ड गेम में व्यस्त रहें।

स्वामी-स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ला द्वारा अनवर ऑफसेट एम- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुदित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उस्मान एन्क्लेव, अलीगंज-लखनऊ 226024 से प्रकाशित, संपादक-राजीव कुमार शुक्ला , मो0-9511151254
Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी आर वी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायीं। किसी भी कानूनी विवाद का निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त खबरें

शिक्षक संकुल की मासिक बैठक हुआ संपन्न

गोलाबाजार गोरखपुर। गोला ब्लॉक के ग्रामसभा ककरही स्थित प्राथमिक विद्यालय द्वितीय पर मंगलवार को खंड शिक्षा अधिकारी उदय शंकर राय के नेतृत्व में शिक्षकों की मासिक बैठक संपन्न हुई (बैठक को संबोधित करते हुए उदय शंकर राय ने कहा कि समस्त शिक्षक कैचअप आकलन पर जोर देते हुए, बच्चों को विद्यालय में शत प्रतिशत नामांकन के साथ उपस्थिति सुनिश्चित करावे। और सभी शिक्षक गांव में पहुंचकर अभिभावकों से संपर्क कर अधिक से अधिक बच्चों का विद्यालय में नामांकन कराने के लिए प्रेरित करें। जिससे परिषदीय विद्यालय के बच्चों की संख्या में बढ़ोतरी हो सके। इस अवसर पर प्रमुख रूप से शिक्षक मृत्युंजय राय विपिन मिश्रा आलोक राय विवेक चौहान विष्णु दत्त मिश्रा दिवाकर सिंह बृजेश किरण त्रिपाठी उपेंद्र पासवान अजय मिश्रा आदि लोग भारी संख्यामें उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने प्रधानों की जांच पूरी करने का दिया निर्देश

नहीं तो रुकेगा जुलाई का वेतन

देवरिया। जनपद में ग्राम प्रधानों के खिलाफ लंबित जांचों को लेकर जिला प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया है। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि सभी नामित जांच अधिकारी 29 जुलाई तक अपनी जांच पूरी कर रिपोर्ट प्रस्तुत करें। समयसीमा का पालन न करने वाले अधिकारियों का जुलाई माह का वेतन जांच आख्या मिलने तक रोक दिया जाएगा। जनपद में वर्तमान में ग्राम प्रधानों से जुड़े 65 प्रकरण विभिन्न स्तरों पर लंबित हैं। कई बार निर्देश दिए जाने के बावजूद जांच पूरी नहीं होने पर जिलाधिकारी ने नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा कि लंबित मामलों का गुणवत्तापूर्ण और निष्पक्ष निस्तारण हर हाल में तय समय के भीतर किया जाए। जिलाधिकारी ने बताया कि ग्राम प्रधानों के विरुद्ध शिकायत की प्रक्रिया पंचायती राज अधिनियम के तहत निर्धारित है। शिकायतकर्ता को शपथ-पत्र और संबंधित साक्ष्यों के साथ प्रार्थना पत्र देना होता है। प्रारंभिक जांच में मामला सही पाए जाने पर जिला मजिस्ट्रेट अलग जिला स्तरीय अधिकारी को औपचारिक जांच के लिए नामित करते हैं। जांच के दौरान शिकायतकर्ता और संबंधित ग्राम प्रधान दोनों का पक्ष सुनने के बाद रिपोर्ट जिलाधिकारी को सौंपी जाती है। डीएम ने कहा कि पंचायत व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही बनाए रखने के लिए लंबित जांचों का समयबद्ध निस्तारण जरूरी है। उन्होंने सभी अधिकारियों को चेतावनी दी कि लापरवाही किसी भी स्तर पर स्वीकार नहीं की जाएगी।

पोखरे में मिला 16 वर्षीय नाबालिग का शव, क्षेत्र में शोक

ठूठीबारी। महराजगंज जिले के ठूठीबारी कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत भारत-नेपाल सीमा से सटे लक्ष्मीपुर चौकी के चटिया गांव में मंगलवार दोपहर एक 16 वर्षीय नाबालिग युवती का शव गांव के पोखरे में मिलने से सनसनी फैल गई। युवती सोमवार से घर से लापता थी। परिजन रातभर उसकी खोजबीन करते रहे। पुलिस के अनुसार, युवती सोमवार को घर से निकली थी और देर रात तक वापस नहीं लौटी। मंगलवार को दोपहर करीब 12 बजे ग्रामीणों ने पोखरे में शव तैरता देखा तो तुरंत पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची ठूठीबारी पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। ठूठीबारी कोतवाल अमित सिंह ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला डूबने का लग रहा है, लेकिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का सही कारण स्पष्ट हो सकेगा। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और आसपास के लोगों से पूछताछ की जा रही है।

गुमशुदगी के आधार पर मुकदमा दर्ज कर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी। घटना की सूचना मिलते ही गांव में भारी संख्या में ग्रामीण जुट गए। नाबालिग की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। क्षेत्र में इस घटना के बाद मातम का माहौल है। पुलिस का कहना है कि हर पहलू की जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

खजनी में शोक पर टूटा दुखों का पहाड़, आमी नदी में डूबा युवक

» SDRF ने घंटों चलाया रेस्यू अभियान जारी, शाम तक एसडीआरएफ खाली हाथ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

खजनी/गोरखपुर जिले के खजनी थाना क्षेत्र के ग्राम इटैली में मंगलवार को एक दर्दनाक हादसे ने पूरे गांव को गम में डुबो दिया। दादी के दशगात्र (दसवां) संस्कार में शामिल होने आए 37 वर्षीय युवक की आमी नदी में स्नान के दौरान डूबने से मौत हो गई। घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। परिजनों की चीख-पुकार सुनकर बड़ी संख्या में ग्रामीण नदी किनारे जुट गए। स्थानीय पुलिस ने तत्काल राहत एवं बचाव कार्य शुरू कराया और बाद में स्थ्रक्र्म टीम भी मौके पर पहुंचकर युवक की तलाश में जुट गई। जानकारी के अनुसार, ग्राम इटैली निवासी रणविजय पुत्र जोगेन्द्र प्रसाद (37 वर्ष) मंगलवार को अपनी दादी के दशगात्र संस्कार में शामिल था। परंपरा के अनुसार वह नदी किनारे बाल कटवाने के बाद आमी नदी में स्नान करने उतरा। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, स्नान के दौरान वह अचानक गहरे पानी में चला गया और देखते ही देखते डूबने लगा।

आसपास मौजूद लोगों ने उसे बचाने का प्रयास किया, लेकिन तेज बहाव और गहराई के कारण वह पानी में लापता हो गया। घटना की सूचना तत्काल डायल-112 को दी गई। सूचना मिलते ही खजनी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय गोताखोरों की मदद से युवक की तलाश शुरू कराई। काफी देर तक खोजबीन के बावजूद सफलता नहीं मिलने पर SDRF टीम को बुलाया गया। टीम आधुनिक उपकरणों की सहायता से नदी में लगातार सर्च ऑपरेशन चलाती रही। हादसे की खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। जिस घर में दादी के निधन का शोक पहले से था, वहां इस घटना ने दुख को और गहरा कर दिया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है, जबकि पूरे गांव में शोक का माहौल बना हुआ है। ग्रामीण भी नदी किनारे देर तक युवक के मिलने की उम्मीद में डटे रहे। एसएचओ खजनी जयन्त सिंह ने बताया कि डायल-112 से सूचना मिलने के बाद तत्काल मौके पर पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्य शुरू कराया जा रहा है। स्थानीय गोताखोरों के साथ स्थ्रक्र्म की टीम भी युवक की तलाश में लगातार जुटी रही। समाचार लिखे जाने तक युवक का शव बरामद नहीं हो सका था और सर्च अभियान जारी था। पुलिस ने बताया कि शव मिलने के बाद आवश्यक वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

श्रावणी मेले की तैयारियों में जुटा प्रशासन, एसडीएम सिद्धार्थ गुप्ता ने दिए सख्त निर्देश

निचलौल/महराजगंज। आगामी श्रावणी मेले को लेकर एसडीएम सिद्धार्थ गुप्ता ने पंचमुखी शिव मंदिर, इटहिया में व्यापारियों, मंदिर प्रबंधन और स्थानीय लोगों के साथ बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने मेले में सुरक्षा, भीड़ प्रबंधन और कानून-व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। एसडीएम ने झूला व 'मौत का कुआं' संचालकों को सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन करने की चेतावनी दी। मंदिर परिसर में किसी भी विवाद या अव्यवस्था पर संबंधित पुजारी के विरुद्ध कार्रवाई की बात कही। साथ ही बैरिकेडिंग, पर्याप्त पुलिस बल, चोरी-जेबकतरी पर निगरानी तथा बिना अनुमति जुआ, सट्टा व अन्य अवैध गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध के निर्देश दिए। बैठक में व्यापारियों व समाजसेवियों ने भी सुझाव दिए, जिन पर आवश्यक सुधार का आश्वासन दिया गया।

प्रशासन और अधिवक्ताओं के बीच संवाद जरूरी: एसडीएम नमन मेहता

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सहजनवा/गोरखपुर सहजनवा तहसील के नवागत उपजिलाधिकारी (एसडीएम) नमन मेहता ने मंगलवार को तहसील सभागार में बार एसोसिएशन सहजनवा के पदाधिकारियों एवं अधिवक्ताओं के साथ परिचयात्मक बैठक की। बैठक का उद्देश्य प्रशासन और अधिवक्ताओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना तथा न्यायिक एवं प्रशासनिक कार्यों को अधिक प्रभावी बनाना रहा। बैठक के दौरान एसडीएम नमन मेहता ने सभी अधिवक्ताओं से परिचय प्राप्त किया और उनकी समस्याओं एवं सुझावों को गंभीरता से सुना। उन्होंने कहा कि प्रशासन और अधिवक्ताओं के बीच निरंतर संवाद बना रहना अत्यंत आवश्यक है। अधिवक्ता न्याय व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी हैं और उनके सहयोग से आमजन को समयबद्ध एवं पारदर्शी प्रशासनिक सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकती हैं। उन्होंने आश्वासन दिया कि अधिवक्ताओं की समस्याओं के समाधान के लिए प्रशासन हरसंभव सकारात्मक पहल करेगा तथा आवश्यक मुद्दों पर प्राथमिकता के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने भी एसडीएम का स्वागत करते हुए तहसील परिसर से जुड़े विभिन्न मुद्दों से उन्हें अवगत कराया और बेहतर सहयोग का भरोसा जताया। बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। इस अवसर पर बार एसोसिएशन सहजनवा के अध्यक्ष कृष्णकांत त्रिपाठी, मंत्री राघवेंद्र सिंह, अधिवक्ता जितेंद्र कुमार, उमेश तिवारी, भूपेंद्र नाथ, भूपेश तिवारी, ज्ञानेंद्र यादव, अजीत मिश्रा, सतीश कनौजिया, प्रभाकर, रमाकांत उपाध्याय, हरिद्वार मणि सहित बड़ी संख्या में अधिवक्ता उपस्थित रहे।

कैशलेस चिकित्सा से वंचित शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का 7 अगस्त को लखनऊ में आंदोलन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

देवरिया। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने कैशलेस चिकित्सा सुविधा में भेदभाव का आरोप लगाते हुए आंदोलन का बिगुल फूंक दिया है। उत्तर प्रदेश शिक्षणेत्तर कर्मचारी महासंघ के आह्वान पर सात अगस्त को लखनऊ स्थित महानिदेशक कार्यालय पर प्रदेशव्यापी धरना-प्रदर्शन होगा। इसे सफल बनाने के लिए देवरिया समेत विभिन्न जिलों में तैयारियां तेज कर दी गई हैं। महासंघ के प्रदेश सचिव आलोक राय ने कहा कि सरकार ने कैशलेस चिकित्सा योजना का लाभ शिक्षकों और प्रधानाचार्यों को तो दे दिया, लेकिन तृतीय श्रेणी, चतुर्थ श्रेणी और संविदा पर कार्यरत शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को इससे बाहर रखा गया है। उनका कहना है कि कम वेतन पाने वाले कर्मचारियों को स्वास्थ्य सुरक्षा से वंचित रखना न्यायसंगत नहीं है। इससे प्रदेशभर के शिक्षणेत्तर कर्मचारियों में गहरा असंतोष है।

धरने की तैयारी के तहत देवरिया में मंडल अध्यक्ष संजय राय और वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष शैलेन्द्र श्रीवास्तव के नेतृत्व में विद्यालयों में जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। कर्मचारियों से अधिक से अधिक संख्या में लखनऊ पहुंचकर अपनी आवाज बुलंद करने की अपील की जा रही है। जिला मंत्री आशुतोष द्विवेदी ने बताया कि आंदोलन की रणनीति को अंतिम रूप देने के लिए लगातार वर्चुअल बैठकें आयोजित की जा रही हैं। उनका दावा है कि देवरिया से सैकड़ों शिक्षणेत्तर कर्मचारी धरने में शामिल होंगे। महासंघ का कहना है कि यदि सरकार ने मांगों पर सकारात्मक निर्णय नहीं लिया तो आंदोलन को और व्यापक बनाया जाएगा। कर्मचारियों का उद्देश्य स्वास्थ्य सुविधाओं में समानता सुनिश्चित कराना है, ताकि शिक्षकों की तरह शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को भी कैशलेस चिकित्सा योजना का लाभ मिल सके।

हज़ यात्रा आवेदन की तिथि बढ़ी अब आगामी 24 जुलाई तक कर सकते हैं आवेदन

अम्बेडकरनगर। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी ने बताया कि हज यात्रा 2027 (1448 हि0) के इच्छुक हज आवेदकों हेतु ऑनलाइन हज कमेटी आफ इण्डिया की वेबसाइट की hajcommittee.gov.in तथा मोबाइल एप्लीकेशन 'हज सुविधा' पर हज ऑनलाइन आवेदन के माध्यम से आवेदन कर सकते है।

हज 2027 के लिये ऑनलाइन आवेदन की अन्तिम तिथि 20.07.2026 से बढ़ाकर 24.07 2026 कर दी गयी है। 30 जुलाई 2026 को हज हाउस मे कुर्रा (डिजिटल रैंडम चयन) प्रक्रिया के उपरान्त प्रत्येक प्रोवीजनल चयनित हज यात्री को रू0 1,52,300 /- की अग्रिम धनराशि 10.08.2026 तक हज कमेटी आफ इण्डिया के खाता मे जमा करनी होगी। आवेदन निश्चित समय सीमाओं के भीतर किया जाना आवश्यक होगा। इन समय सीमाओं मे किसी प्रकार की छूट अथवा विस्तार सम्भव नही होगा।

घर में पंखा ठीक करना पड़ा भारी, करंट से किसान की मौत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ग़ोला बाजार /गोरखपुर। गोला कस्बे के वार्ड नंबर 10 स्थित बर्राह गांव में सोमवार देर रात एक हृदयविदारक हादसे में 44 वर्षीय किसान की विद्युत करंट की चपेट में आने से मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई, जबकि मृतक के परिवार में कोहराम मच गया। सूचना मिलते ही गोला पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बर्राह गांव निवासी संतोष यादव (44) पुत्र स्वर्गीय रामजी यादव सोमवार की रात करीब 11 बजे अपने घर में खराब पड़े पंखे का विद्युत तार जोड़ रहे थे। इसी दौरान अचानक बिजली का तेज करंट उनकी चपेट में आ गया। करंट इतना शक्तिशाली था कि संतोष गंभीर रूप से झुलस गए और घटनास्थल पर ही उनकी मौत हो गई। हादसे के बाद परिजनों की चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग मौके पर दौड़े, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

ग्रामीणों ने तत्काल घटना की सूचना गोला पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और आवश्यक कानूनी कार्रवाई करते हुए शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है। बताया जाता है कि संतोष अपने दिवंगत पिता के इकलौते पुत्र थे। पिता के निधन के बाद पूरे परिवार की जिम्मेदारी उन्हीं के कंधों पर थी। वह खेती-बाड़ी कर अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। परिवार में उनकी वृद्ध माता, पत्नी, तीन बेटियां और एक बेटा हैं। संतोष की असामयिक मौत से परिवार के सामने आर्थिक और सामाजिक संकट खड़ा हो गया है। हादसे की खबर फैलते ही गांव में शोक का माहौल बन गया। बड़ी संख्या में ग्रामीण मृतक के घर पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त करने लगे। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। ग्रामीणों का कहना है कि संतोष मेहनती और मिलनसार स्वभाव के व्यक्ति थे तथा किसी से कोई विवाद नहीं था। इस दर्दनाक हादसे ने एक बार फिर घरेलू विद्युत उपकरणों की मरम्मत के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों की आवश्यकता को उजागर कर दिया है। स्थानीय लोगों ने लोगों से अपील की है कि बिजली से जुड़े किसी भी कार्य को बिना पर्याप्त सुरक्षा या विशेषज्ञ की सहायता के न करें, ताकि इस प्रकार की दुखद घटनाओं से बचा जा सके।

डीपीआरओ ने ग्रामीणों की सुनी समस्याएं, सफाई व्यवस्था पर जताई नाराजगी

पंचायत भवन परिसर में आयोजित बैठक में विकास कार्यों व सफाई व्यवस्था की समीक्षा, एक दिन में मांगा पांच वर्षों का पूरा लेखा जोखा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ठूठीबारी, महराजगंज। मंगलवार को जिला पंचायत राज अधिकारी (डीपीआरओ) श्रेया मिश्रा ने ग्राम पंचायत कार्यालय में आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान विकास कार्यों, सफाई व्यवस्था और जनसमस्याओं का गहन निरीक्षण किया। बैठक में ग्रामीणों की शिकायतों को गंभीरता से सुनते हुए उन्होंने संबंधित अधिकारियों और ग्राम प्रधान को आवश्यक निर्देश दिए तथा लापरवाही पर कड़ी नाराजगी जताई। डीपीआरओ ने विगत पांच वर्षों में ओएसआर मद के अंतर्गत कराए गए कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान संबंधित रजिस्टर उपलब्ध नहीं कराए जाने और कार्यों का समुचित लेखा-जोखा प्रस्तुत न करने पर ग्राम प्रधान को फटकार लगाई। उन्होंने एक दिन के भीतर सभी अभिलेख और कार्यों का विस्तृत विवरण उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। कस्बे में नालियों के निर्माण, सड़क पर बह रहे गंदे पानी, सफाई व्यवस्था की बदहाली और फैली गंदगी पर भी डीपीआरओ ने असंतोष व्यक्त किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि लापरवाही पाए जाने पर संबंधित जिम्मेदारों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

बैठक में ग्रामीणों द्वारा उठाई गई समस्याओं के त्वरित समाधान के निर्देश देते हुए उन्होंने कार्ययोजना में आरसीसी सड़क, नाली, पुलिया निर्माण, टैक्सी स्टैंड के सुंदरीकरण तथा जल निकासी की समस्या को प्राथमिकता से शामिल करने को कहा। सफाई कर्मियों के लिए अलग रोस्टर तैयार करने तथा रोस्टर अवधि में अनुपस्थित रहने वाले कर्मचारियों का वेतन रोकने के निर्देश भी दिए। इसके अलावा ग्राम पंचायत में पिछले पांच वर्षों में लगाए गए डस्टबीनों की संख्या और गायब डस्टबीनों की गुमशुदगी दर्ज न होने के मामले की जांच कराने के निर्देश दिए गए। बैठक में एडीओ पंचायत गुड्डू, पंचायत सचिव राजू रामचंद्र, ग्राम प्रधान अजय कुमार, अवधेश मद्धेशिया, संदीप निगम, वीरेंद्र, मनोज गौंड, आदित्य पटवा, विरेन्द्र रौनियार, नरसिंह मदेशिया, सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

दिव्यांग बच्चों के दिव्यांगता प्रमाण पत्र हेतु मेडिकल असेसमेंट कैंप का होगा आयोजन

अम्बेडकरनगर। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने बताया कि जनपद के परिषदीय विद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों, आंगनबाड़ी केंद्रों तथा सहायता प्राप्त अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विशिष्ट आवश्यकता वाले (दिव्यांग) बच्चों के दिव्यांगता प्रमाण पत्र बनाए जाने के उद्देश्य से मेडिकल असेसमेंट कैंप आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि प्रत्येक कैंप का आयोजन संबंधित विकास खंड संसाधन केंद्र (बीआरसी) पर पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 4:00 बजे तक विशेषज्ञ चिकित्सकों की उपस्थिति में किया जाएगा। कैंप में बच्चों का चिकित्सीय परीक्षण कर दिव्यांगता का आकलन किया जाएगा, जिससे पात्र बच्चों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र एवं शासन द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में सुविधा होगी। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने बताया कि मेडिकल असेसमेंट कैंप का आयोजन बीआरसी जहांगीरगंज में 24 जुलाई 2026, रामनगर में 25 जुलाई 2026, बसखारी में 29 जुलाई 2026, भियांव में 31 जुलाई 2026, जलालपुर में 1 अगस्त 2026, भीटी में 5 अगस्त 2026, कटेहरी में 7 अगस्त 2026, अकबरपुर में 8 अगस्त 2026, टांडा में 11 अगस्त 2026 तथा टांडा (नगरीय) में 14 अगस्त 2026 को आयोजित किया जाएगा।

आदित्य हत्याकांड में बड़ा खुलासा, खजनी पुलिस ने 19 वर्षीय आरोपी को दबोचा

हत्या में प्रयुक्त दो बाइक बरामद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

खज़नी: गोरखपुर। खजनी थाना क्षेत्र के बहुचर्चित आदित्य हत्याकांड में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर चलाए जा रहे अपराधियों की गिरफ्तारी अभियान के तहत खजनी पुलिस ने हत्या के मामले में वांछित 19 वर्षीय आरोपी गौरव साहनी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त दो मोटरसाइकिल भी बरामद की हैं। गिरफ्तारी के बाद आरोपी को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया। पुलिस के अनुसार, प्रभारी निरीक्षक जयन्त कुमार सिंह अपनी टीम के साथ वांछित अभियुक्तों की तलाश में लगे थे। इसी दौरान सोमवार तड़के करीब एक बजे जरलही पुल तिराहे के पास से गौरव साहनी पुत्र संजय साहनी निवासी भौवापार, थाना बेलीपार को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ और साक्ष्यों के आधार पर पुलिस ने घटना में इस्तेमाल की गई दो मोटरसाइकिल भी बरामद कर लीं, जिनमें एक स्प्लेंडर प्लस (UP53EK5683) तथा दूसरी हीरो पैशन प्रो (UP53BY0049) शामिल है।

पुलिस के मुताबिक, मामला 24 मई 2026 की रात का है। आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर आरोपियों ने 22 वर्षीय आदित्य को कटघर तिराहे पर रोक लिया। पहले उसके साथ गाली-गलौज और मारपीट की गई, फिर उसे जबरन मोटरसाइकिल पर बैठाकर ग्राम बरपार के खेतों की ओर ले जाया गया। वहां उसकी हत्या करने के बाद साक्ष्य छिपाने की नीयत से शव को भड़सार पुल के पास आमी नदी में फेंक दिया गया। घटना के बाद मृतक के परिजनों की तहरीर पर खजनी थाने में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था। जांच के दौरान पुलिस लगातार आरोपियों की तलाश में जुटी रही। तकनीकी साक्ष्यों, मुखबिर की सूचना और स्थानीय स्तर पर की गई जांच के आधार पर पुलिस ने गौरव साहनी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की। पुलिस का कहना है कि मामले में अन्य फरार आरोपियों की तलाश तेज कर दी गई है और उनकी गिरफ्तारी के लिए लगातार दबिश दी जा रही है। इस कार्रवाई में प्रभारी निरीक्षक जयन्त कुमार सिंह के साथ हेड कांस्टेबल अनिल चौधरी, कांस्टेबल अरविन्द यादव, कांस्टेबल आशुतोष पाण्डेय, आरक्षी आशुतोष पटेल तथा आरक्षी आकाश कुमार सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पुलिस का कहना है कि हत्या के इस सनसनीखेज मामले में शेष आरोपियों को भी जल्द गिरफ्तार कर पूरे प्रकरण का खुलासा किया जाएगा।

शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद का हुआ पुष्प वर्षा से भव्य स्वागत

शंकराचार्य महाराज ने कहा गौ माता को राष्ट्र माता का दर्जा दिलाना ही हमारा मुख्य संकल्प

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रतनपुर/महराजगंज। सनातन संस्कृति की रक्षा और गौवंश के संरक्षण का अलख जगाने के उद्देश्य से देशव्यापी भ्रमण पर निकले ज्योतिषपीठ के जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराज की गौ रक्षा यात्रा का मंगलवार को भारत-नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र में ऐतिहासिक और भव्य स्वागत हुआ। नौतनवां-ठूठीबारी मुख्य मार्ग पर स्थित सेखुआनी चौराहे पर शंकराचार्य के प्रथम आगमन को लेकर क्षेत्र के सनातनी समाज और श्रद्धालुओं में भारी उत्साह देखा गया। इस दौरान सैकड़ों अनुयाइयों और क्षेत्रीय नागरिकों ने महाराज जी के रथ पर पलक-पावड़े बिछा दिए और शंखध्वनि व भारी पुष्प वर्षा कर पूरे क्षेत्र को जय श्रीराम और गौ माता के जयकारों से गुंजायमान कर दिया। इस अवसर पर सेखुआनी चौराहे पर अनुयायियों को संबोधित करते हुए जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद महाराज ने कहा कि सनातन धर्म में गाय केवल एक पशु नहीं, बल्कि हमारी आस्था और संस्कृति का मूल आधार है। इसलिए गौ रक्षा और गौ सेवा करना हम सभी का परम और प्रथम दायित्व है। उन्होंने हुंकार भरते हुए कहा कि हमारा मुख्य संकल्प गौ माता को राष्ट्र माता का गौरवपूर्ण दर्जा दिलाना है और जब तक देश में गाय को राष्ट्र माता का सम्मानजनक स्थान नहीं मिल जाता तब तक यह गौ रक्षा यात्रा रुकने निरंतर जारी रहेगा। इसके अलावा यह यात्रा पूरे भारत में निरंतर भ्रमण कर सभी सनातनी हिंदू समाज को एक मंच पर लाने और एकजुट करने का कार्य करेगी। सीमावर्ती इलाका होने और शंकराचार्य की सुरक्षा को देखते हुए स्थानीय प्रशासन भी पूरी तरह अलर्ट मोड पर रहा। परसामलिक थानाध्यक्ष विवेक कुमार सिंह मयफोर्स के साथ सेखुआनी चौराहे और उसके आस-पास के संवेदनशील मार्गों पर मोर्चा संभाला ताकि शंकराचार्य महाराज जी का आगमन, संबोधन और यात्रा का प्रस्थान पूरी तरह शांतिपूर्ण और सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था के बीच संपन्न हो सके। इस ऐतिहासिक अगवानी और धार्मिक आयोजन में बड़ी संख्या में मातृशक्ति और युवाओं की भागीदारी रही। इस दौरान कांग्रेस जिला महासचिव कृष्ण चंद्र पाण्डेय, गजेंद्र पाण्डेय, भोला चौधरी, चंद्रभान पाण्डेय, सोनू मिश्रा, बीरू सिंह, उमेश गुप्ता, वीरेंद्र गौड़, रामजी मौर्या, कमलेश शर्मा, नीतू मिश्रा, हरिवंश अग्रहरी, विश्वनाथ गौड़, रामचंद्र दुबे, डब्लू दुबे, फूल चंद्र अग्रहरी, इन्द्रेश चौधरी समेत सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

सर्वर डाउन होने से नहीं मिल रही खाद, किसान

उतरौला। खरीफ सीजन के चरम पर धान की रोपाई के बीच क्षेत्र में यूरिया संकट गहरा गया है। साधन सहकारी समितियों पर सर्वर डाउन होने से ई-पीओएस मशीनों पर किसानों का सत्यापन नहीं हो पा रहा है, जिसके कारण उन्हें निर्धारित मात्रा में यूरिया खाद नहीं मिल रही। घंटों इंतजार के बाद किसान बैरंग लौटने को मजबूर हैं। किसानों का कहना है कि भैरमपुर, देवरिया मैनहा, रेडवलिया, चायडीह, गैंडास बुजुर्ग, चिरकुटिया, गन्ना समिति उतरौला तथा एग्रीजंक्शन उतरौला व बेथुइया समेत कई केंद्रों पर पूरे दिन तकनीकी समस्या के चलते खाद वितरण प्रभावित रहा। किसानों का कहना है कि धान की रोपाई के बाद समय पर यूरिया देना फसल की बढ़वार के लिए बेहद जरूरी है।

देरी होने पर पौधों की वृद्धि और पैदावार दोनों प्रभावित हो सकती हैं। सहकारी समितियों से खाद न मिलने पर किसान निजी उर्वरक दुकानों का रुख कर रहे हैं, लेकिन वहां भी सीमित स्टॉक और लंबी कतारों के कारण परेशानी बनी हुई है। जुलाई के इस दौर में किसानों को यूरिया के साथ डीएपी, एनपीके, जिंक सल्फेट, सूक्ष्म पोषक तत्व, खरपतवारनाशी व कीटनाशकों की भी आवश्यकता रहती है। किसानों ने प्रशासन से सर्वर की तकनीकी समस्या का तत्काल समाधान कराने तथा सभी समितियों पर पर्याप्त मात्रा में यूरिया उपलब्ध कराने की मांग की है, ताकि खरीफ सीजन की खेती प्रभावित न हो।

एडीएम ने निचलौल के बाढ़ संभावित क्षेत्रों का किया निरीक्षण, तैयारियों की पड़ताल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज। संभावित बाढ़ की चुनौती को देखते हुए जनपद महराजगंज में प्रशासन पूरी तरह सतर्क एवं सक्रिय है। इसी क्रम में आज 21 जुलाई, 2026 को अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व), महराजगंज ने तहसील निचलौल के बाढ़ प्रभावित एवं अति संवेदनशील ग्राम पंचायतों गेडहवाँ, कमनिसवा, ठूठीबारी सहित विभिन्न क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण कर बाढ़ पूर्व तैयारियों का व्यापक जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान बाढ़ शरणालयों, पशु शरणालयों, बाढ़ चौकियों, राहत एवं बचाव संसाधनों तथा आवश्यक व्यवस्थाओं की समीक्षा की गई। संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि सभी बाढ़ चौकियों पर नाव, लाइफ जैकेट, प्राथमिक उपचार सामग्री, संचार उपकरण एवं अन्य आवश्यक संसाधन हर समय उपलब्ध एवं क्रियाशील रहें, ताकि किसी भी आपात स्थिति में त्वरित राहत एवं बचाव कार्य सुनिश्चित किया जा सके। अपर जिलाधिकारी महोदय ने स्थानीय ग्रामीणों एवं जनप्रतिनिधियों के साथ संवाद स्थापित कर बाढ़ के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियों, सुरक्षित स्थानों पर समय रहते पहुंचने, प्रशासन द्वारा जारी अलर्ट का पालन करने तथा किसी भी आपात स्थिति की तत्काल सूचना प्रशासन को उपलब्ध कराने की अपील की। उन्होंने समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन एवं जनसहभागिता को प्रभावी आपदा प्रबंधन की आधारशिला बताया। इसके उपरांत गेडहवाँ से ठूठीबारी के मध्य स्थित तटबंधों का निरीक्षण कर उनकी सुरक्षा व्यवस्था, संवेदनशील स्थलों एवं संभावित

कटान क्षेत्रों का अवलोकन किया गया। संबंधित विभागों को तटबंधों की निरंतर निगरानी रखने तथा किसी भी प्रकार की क्षति, रिसाव अथवा कटान की सूचना पर तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के समापन पर एसडीआरएफ (SDRF) एवं एसएसबी (SSB) की रैपिड रिस्पांस टीम (RRT) के साथ समन्वय बैठक आयोजित की गई। बैठक में संभावित बाढ़ की स्थिति में खोज एवं बचाव अभियान, राहत वितरण, निकासी योजना, संचार व्यवस्था, संवेदनशील क्षेत्रों में त्वरित प्रतिक्रिया तथा विभिन्न विभागों के बीच समन्वय को और अधिक प्रभावी बनाने पर विस्तृत चर्चा की गई। अपर जिलाधिकारी महोदय ने स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी विभाग पूर्ण सतर्कता एवं समन्वय के साथ कार्य करें तथा प्रत्येक सूचना पर तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करते हुए जन-धन एवं पशुधन की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें। जनपद प्रशासन द्वारा बाढ़ पूर्व तैयारियों की सतत समीक्षा की जा रही है तथा सभी संबंधित विभागों को अलर्ट मोड में रखते हुए संभावित बाढ़ से प्रभावी ढंग से निपटने की तैयारियां सुनिश्चित की जा रही हैं।

अंतर्राज्यीय साईबर गिरोह के तीन शातिर अभियुक्त गिरफ्तार

प्रतापगढ़। उदयपुर थाना के एसएचओ दीप नारायण के नेतृत्व में एसआई राजेश शुक्ला व साईबर सेल ने अंतर्राज्यीय साईबर गिरोह का पर्दाफाश किया है।उक्त गिरोह का सदस्य उदयपुर थाना क्षेत्र रेवली निवासी धर्मेंद्र यादव पुत्र रामसजीवन यादव ग्रामीणों से पासबुक एटीएम कार्ड क्यूर कोड आदि लेकर दिल्ली भेजता था।इसके बदले में कमीशन मिलता था। कुछ खाताधारक साईबर ठगों से 7 हजार माह लेते थे। साईबर गिरोह का दूसरा साथी विनीत कुमार पुत्र उदय कुमार निवासी डब्लू जेड 1531 टीएफ,भूप सिंह गली नांगल राया नई दिल्ली तकनीकी संचालन एवं वित्तीय लेन देन का कार्य करता था और तीसरा साथी मनीष पुत्र प्रमोद वर्मा निवासी डब्लू जेड 1409बी,नांगल राया मायापुरी नई दिल्ली मुख्य संचालक है। आरोपियों के कब्जे से अलग-अलग बैंकों के 16 पासबुक,5 चेकबुक,18 डेबिट एटीएम कार्ड,10 मोबाइल फोन,6 सिम कार्ड,एक लैप टॉप, कैविस इन्टरप्राइजेज का लेटर पैड मोहर, विभिन्न बैंकों से संबंधित पहचान के लिए दस्तावेज, व्यवसायिक पंजीकरण अभिलेख व 2 चांदी 1 सोने की अंगूठी बरामद किया।पुलिस ने थाना उदयपुर पर दर्ज मुकदमा उपरोक्त मे सुसंगत धारा बढ़ोत्तरी कर जेल भेज दिया है।

संक्षिप्त खबरें

निपुण भारत मिशन का दायरा बढ़ा, अब कक्षा 5 तक होगा प्रभावी क्रियान्वयन : बीएसए

फिरोजाबाद। राज्य सरकार ने निपुण भारत मिशन का विस्तार करते हुए इसे अब परिषदीय विद्यालयों में कक्षा 5 तक लागू करने का निर्णय लिया है। इस संबंध में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अनिल कुमार ने जनपद के सभी खंड शिक्षा अधिकारियों को शासन के निर्देशों के अनुरूप प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश जारी किए हैं। जारी आदेश के अनुसार कक्षा 2 तक आधारभूत दक्षताओं को मजबूत करने के साथ-साथ कक्षा 3 से 5 तक हिंदी, गणित, अंग्रेजी एवं पर्यावरण अध्ययन विषयों के स्पष्ट अधिगम लक्ष्य निर्धारित किए जाएंगे। साथ ही सतत शिक्षण सहयोग एवं नियमित अनुश्रवण के माध्यम से विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में सुधार किया जाएगा। बीएसए ने निर्देशित किया है कि 17 जुलाई 2026 को जारी शासनादेश के अनुसार निपुण भारत मिशन को राज्य सरकार का प्राथमिकता प्राप्त कार्यक्रम मानते हुए सभी विद्यालयों में समयबद्ध एवं प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, ताकि निर्धारित शैक्षिक लक्ष्यों को समय पर प्राप्त किया जा सके।

12 रवि अव्वल एवं कावड़ यात्रा शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न करने की पुलिस ने की अपील

खीरी टाउन खीरी। प्रभारी निरीक्षक थाना खीरी अवनीश कुमार सिंह के नेतृत्व में खीरी पुलिस गांव गांव जाकर सावन माह के पवित्र महीने के अवसर पर आने वाले त्योहारों 12 रवि अव्वल के मौके पर लोगों से जुलूस शांतिपूर्ण ढंग से मनाने की अपील की जा रही है। इस मौके पर ग्राम पंचायत मूसेपुर खुर्द में पंचायत भवन में समस्त ग्रामीण के साथ हलका इंचार्ज अजय कुमार सिंह कांस्टेबल जितेंद्र कुमार यादव सहित अन्य हमराहियों के साथ एक पीस कमेटी की मीटिंग कर लोगों से संवाद स्थापित करते हुए सावन के महीने में मुर्गा मांस अंडा अंडे की दुकान पूर्ण रूप से प्रतिबंधित रहेगी आदेशों की अवहेलना करते पाए जाने पर कठोर दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी वही लोगों से कावड़ यात्रा को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न करने हेतु अपील की गई।

बरसात मे होने बाली एलर्जी से रखे अपना ख्याल,डा हरि शंकर वर्मा

गोला गोकर्णनाथ खीरी- गोला तहसील क्षेत्र के गांव जडौरा मे स्थित राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय के डाक्टर हरिशंकर ने बताया कि इस समय बरसात मे मौसम मे दर्जनो वीरानियों पनप रही है। ऐसे मे थोडी थोडी सी सावधानी मनुष्यो को स्वस्थ रख सकती है। डाक्टर ने बताया कि इस समय दाद, खाज खुजली,उदर विकार टाइफाइड रोगो का खतरा बढ जाता है और मनुष्य इसकी चपेट मे आने से वीमार हो जाता है,ऐसे मे थोडी सावधानी ही मनुष्यो की स्वस्थ रख सकती है,जैसे की हर ब्यक्त को ताजी पत्तेदार सब्जी,व सरकारी हैंडपंप का पानी पिया,लेटते समय मछरदानी का प्रयोग करे पानी को ढक कर रखे व जमीन मे न लेटे जमीन मे लेटने से विशैले जन्तुओ के काटने के खतरा बना रहता है। हलाकि सरकार के द्वारा सभी आयुर्वेदिक चिकित्सालयो मे सभी मर्जो की दवाइयां पर्याप्त रूप से उपलब्ध रहती है, ब्यक्ति को किसी मर्ज की सिकायत होने पर वह अस्पताल मे जाकर दवाई ले सकता है। वही जडौरा के फार्मासिस्ट (बार्डब्याय) अनंगपाल चौधरी ने बताया की समय समय पर गांव क्षेत्रो मे आयुर्वेदिक दवाइयो का कैप लगाकर निःशुल्क दबाइयो का वितरण किया जाता है, ग्रामीण कैंप मे पहुच कर अपना स्वस्थ परीक्षण कराकर दवाई ले सकते है।

लेखपाल से डिप्टी जेलर बने सरोज कुमार, सम्मान समारोह के बाद प्रशिक्षण के लिए लखनऊ रवाना

नीमगांव, खीरी। मितौली तहसील में कार्यरत लेखपाल सरोज कुमार का डिप्टी जेलर पद पर चयन होने के बाद मंगलवार को तहसील सभागार में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह के उपरांत उन्हें प्रशिक्षण के लिए लखनऊ रवाना किया गया। सरोज कुमार का वर्ष 2024 में लेखपाल पद पर चयन हुआ था और वे मितौली तहसील में अपनी सेवाएं दे रहे थे। उनके पिता मोहनलाल भी वरिष्ठ लेखपाल के पद पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। सम्मान समारोह में उप जिलाधिकारी संत दास पवार ने सरोज कुमार को माला पहनाकर एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी और जनसेवा की भावना के साथ दायित्वों का निर्वहन करने का संदेश दिया। कार्यक्रम में नायब तहसीलदार शशांक मिश्रा, लेखपाल अमित भारती, तहसील के अधिकारी एवं कर्मचारी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। उपस्थित सभी लोगों ने सरोज कुमार को डिप्टी जेलर पद पर चयनित होने पर बधाई देते हुए उनके सफल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

गांधी प्रतिमा पर ताला.....

बारिश में भी सपा का प्रदर्शन; एसीपी को सौंपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। समाजवादी पार्टी कानपुर महानगर के महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद के नेतृत्व में मंगलवार सुबह 11 बजे फूलबाग स्थित गांधी प्रतिमा पर देश में बढ़ती दमनकारी नीतियों, छात्रों पर हुए लाठीचार्ज तथा कानपुर शहर की बदहाल व्यवस्था के विरोध में प्रदर्शन किया गया। प्रशासन ने कार्यक्रम से पहले ही गांधी प्रतिमा का गेट बंद कर उस पर ताला लगा दिया, जिससे कार्यकर्ताओं को धरना देने से रोकने का प्रयास किया गया। इसके बावजूद समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता मूसलाधार बारिश में भीगते हुए मौके पर डटे रहे और सरकार व प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए विरोध प्रदर्शन जारी रखा। प्रदर्शन के उपरांत समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमंडल ने महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद के नेतृत्व में एसीपी कोतवाली अमित कुमार पांडेय को ज्ञापन सौंपकर मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय के खिलाफ की जा रही कार्रवाई रोकने, छात्रों पर हुए लाठीचार्ज की निष्पक्ष जांच कराने, पेपर लीक के दोषियों पर सख्त कार्रवाई करने तथा कानपुर शहर की ज्वलंत जनसमस्याओं का तत्काल समाधान कराने की मांग की। प्रदर्शन को संबोधित करते हुए महानगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद ने कहा कि राजनीतिक विद्वेष के चलते रामपुर स्थित मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय को प्रशासनिक कार्रवाई के जरिए निशाना बनाया जा रहा है। वहीं नीट और यूजीसी जैसी परीक्षाओं में पेपर लीक के विरोध में शांतिपूर्ण आंदोलन कर रहे शिक्षाविद सोनम वांगचुक को दिल्ली पुलिस द्वारा जबरन हटाया गया और प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज किया गया। उन्होंने कहा कि संसद मार्च कर रहे छात्र-छात्राओं पर भी लाठीचार्ज कर केंद्र सरकार ने लोकतांत्रिक अधिकारों का दमन किया है। समाजवादी पार्टी इसका पुरजोर विरोध करती है और छात्रों की आवाज को दबाने के हर प्रयास का विरोध जारी रखेगी। हाजी फजल महमूद ने कहा कि कानपुर नगर की हालत भी बेहद चिंताजनक हो चुकी है। मुख्यमंत्री ग्रिड योजना के नाम पर पूरे शहर की सड़कों को खोदकर छोड़ दिया गया है, जिससे बारिश में सड़कें दलदल में तब्दील हो गई हैं और लोग रोजाना दुर्घटनाओं का शिकार हो रहे हैं। जाजमऊ स्थित केडीए मार्केट सहित कई बाजारों का व्यापार पूरी तरह प्रभावित हो चुका है। जलभराव, सीवर ओवरफ्लो, भीषण ट्रैफिक जाम, कूड़े के ढेर, मच्छरों का बढ़ता प्रकोप, डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया जैसी बीमारियों का खतरा, अघोषित बिजली कटौती, जर्जर बिजली के पोल तथा खुदाई के दौरान टूटी पेयजल पाइपलाइनें शहरवासियों के लिए गंभीर समस्या बन चुकी हैं। उन्होंने कहा कि कानपुर की जनता टैक्स देने के बावजूद नारकीय जीवन जीने को मजबूर है।

सड़क निर्माण कार्य शुरू कराने की सभासद ने की मांग

कोंच(जालौन)- टेंडर प्रक्रिया होने सहित कार्य आदेश जारी होने के बाद भी संबंधित ठेकेदार द्वारा अब तक सीसी सड़क निर्माण कार्य शुरू न किए जाने पर सभासद महेंद्र कुशवाहा ने एसडीएम को शिकायती पत्र देकर निर्माण कार्य शुरू कराये जाने की मांग की है। गांधीनगर इलाके के सभासद महेंद्र कुशवाहा ने मंगलवार को एसडीएम अभिनव कुमार यादव को दिए अपने शिकायती पत्र में कहा कि नगर पालिका द्वारा मोहल्ले में लालू झा के मकान से लेकर नायक के मठ मंदिर तक करीब 44 लाख रुपए की लागत से सीसी सड़क निर्माण कार्य हेतु टेंडर स्वीकृत होने के बाद 23 मई को कार्य आदेश जारी किया गया था। अब करीब दो माह पूरे हो गए हैं लेकिन संबंधित ठेकेदार द्वारा निर्माण कार्य शुरू नहीं किया गया है। सभासद ने कहा कि उन्होंने नगर पालिका ईओ को कई बार अवगत कराया इसके बाद भी निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ। इसी सड़क मार्ग पर मोक्षधाम और प्रमुख मंदिर है और बारिश के मौसम में वर्तमान की जर्जर सड़क पर चलना जोखिम भरा है। सभासद ने जनहित में इस सड़क का निर्माण कार्य शीघ्र ही शुरू कराए जाने की मांग एसडीएम से की है।

मासिक समीक्षा बैठक में शिक्षकों का किया गया उन्मुखीकरण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बरेली/ विकासखंड भदपुरा के बीआरसी केंद्र क्योलड़िया पर बुधवार को खंड शिक्षा अधिकारी विजय कुमार के द्वारा समस्त प्रधानाध्यापकों के साथ मासिक बैठक का आयोजन कर विभागीय कार्यों की की गई समीक्षा। विजय कुमार ने सभी प्रधानाध्यापक गणों को निर्देशित किया कि गुणवत्तायुक्त शिक्षा हमारी प्राथमिकता पर है जिसके तहत विकासखंड के सभी विद्यालयों को निपुण बनाना है।सभी शिक्षकों को छात्रों के साथ इको क्लब के अंतर्गत गतिविधियों का नियमित आयोजन करने, प्रेरणा पोर्टल पर छात्रों की प्रतिदिन नियमित उपस्थिति दर्ज। करने, निपुण प्लस एप पर छात्रों का नियमित आंकलन करने, शारदा पोर्टल पर ड्राप आउट छात्रों को अद्यतन करने, आईसीटी एवं स्मार्ट क्लास का नियमित संचालन करने, यू डाइस पर सभी छात्र-छात्राओं का सम्पूर्ण डाटा अद्यतन करने सहित छात्रों के शैक्षिक स्तर का संवर्द्धन करने से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर समस्त प्रधानाध्यापकों को मार्गदर्शित एवं निर्देशित किया गया। एआरपी अरुण कुमार ने कहा कि सभी विद्यालयों में विभाग द्वारा उपलब्ध कराई गई शिक्षक संदर्शिका का उपयोग करते हुए शिक्षण कार्य किया जाना है। संतोष गंगवार ने बताया कि सभी शिक्षक नियमित रूप से निपुण प्लस एप का उपयोग करके छात्रों का नियमित आकलन करें। एआरपी मधुरेश दीक्षित ने सभी शिक्षकों को बताया कि वह बाल वाटिका एवं स्कूल रेडीनेस के अंतर्गत शैक्षिक कार्यक्रमों का नियमित रूप से संचालन करें एवं शैक्षणिक गुणवत्ता के संवर्धन हेतु छात्रों को लर्निंग बाय डूइंग मेथड से रोचक तरीके से शिक्षण कार्य को संपादित करें। एआरपी विवेक सक्सेना ने बताया कि प्रत्येक कक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारित समय में पूर्ण कर लिया जाए। उक्त आयोजन में राजपूत देवल इंद्रपाल गंगवार अनिल सिंह शीला देवी जसबन्त सिंह अवधेश अभिषेक ओम बाबू सहित प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक द्वारा प्रतिभाग किया गया।

घाटमपुर फ्लाईओवर एक महीने बाद आज से खुलेगा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर ग्रामीण। कानपुर सागर हाइवे पर घाटमपुर स्थिति फ्लाईओवर मंगलवार दोपहर में फिर से शुरू हो जायेगा,एक महीने बाद 21 जून को फ्लाईओवर का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो कर गिर गया था, सुरक्षा के मद्देनजर तत्काल फ्लाईओवर पर सभी प्रकार के वाहनों का आवागमन बंद कर दिया गया था,अब मरम्मत के बाद वाहनों का आवागमन शुरू हो जायेगा, आपको बताते चलें कि पहले चरण में केवल कार, बाइक समेत हल्के वाहनों को ही फ्लाईओवर से गुजरने की अनुमति दी जाएगी,, हमीरपुर की ओर से आने वाले गिट्टी, मोरंग,व अन्य सामान से लदे भारी वाहन फिलहाल अगले एक सप्ताह तक नीचे सर्विस रोड से ही गुजरेंगे,, क़रीब चार वर्ष पहले लगभग 46 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित इस फ्लाईओवर केस्लैव का एक हिस्सा 21जून को क्षतिग्रस्त हो कर गिर गया था सुरक्षा के मद्देनजर तत्काल फ्लाईओवर पर सभी प्रकार के वाहनों का आगमन बद कर दिया गया था, इसके बाद हल्के और भारी वाहन पिछले एक माह से सर्विस रोड से गुजर रहे थे, जिससे नगर क्षेत्र में लगातार जाम की स्थिति बनी रही,और यात्रियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा, क्षतिग्रस्त हिस्से को हटाकर एनएचएआई की ओर से दो जुलाई को नए स्लैव का निर्माण कराया गया, इसके बाद निर्धारित समय में ककरीट को मजबूत होने दिया, गया रविवार को मरम्मत किए गए हिस्से पर डामर की सडक बिछाने का काम पूरा कर लिया गया, निर्माण कार्य और तकनीकी परीक्षण पूरा होने के बाद अब फ्लाईओवर को चरणबद्ध तरीके से यातायात के लिए खोला जा रहा है, मंगलवार दोपहर से कार, बाइक, पिकअप,बस समेत हल्के वाहन तथा खाली बड़े वाहन फ्लाईओवर फ्लाईओवर से गुजर सकेंगे, वहीं हमीरपुर की ओर से आने वाले लोड भारी वाहनों को अभी फ्लाईओवर पर

अनुसूचित नहीं दी जाएगी, ऐसे वाहन पहले की तरह सर्विस रोड का ही उपयोग करेंगे, ताकि नए स्लैव पर अतिरिक्त भार पड़ने से बचा जा सके,, एनएचएआई के परियोजना निदेशक पंकज यादव ने बताया कि मंगलवार से फ्लाईओवर पर हल्के और खाली वाहनों का संचालन शुरू कराया जाएगा, उन्होंने कहा कि हमीरपुर की ओर जाने वाले लोड भारी वाहनों को फिलहाल एक सप्ताह तक सर्विस रोड से ही निकाला जायेगा।

पुलिस ने दस्त के दौरान तमंचा सहित संदिग्ध पड़ा

बरेली/क्यों लड़िया- पुलिस ने दस्त के दौरान सतवन पट्टी भ ऊवा बाजार के बीच एक संदिग्ध व्यक्ति को रोका तो उसने खिसकने का प्रयास किया पुलिस ने सक्रियता दिखाते हुए उसे पकड़ लिया पकड़े गए व्यक्ति से पूछताछ की गई। तलाशी लेने पर 315 बोर तमंचा एवं कारतूस बरामद हुए उसने अपना नाम रईस शेख पुत्र रहसूद्दीन निवासी ग्राम भऊआ बाजार बताया गया पुलिस द्वारा तमंचा रखने की लाइसेंस मांगी गई तो वह कुछ नहीं कर सका पुलिस उसे पड़कर थाने लाई देखा गया। तो पकड़े गए अभियुक्त पर आधा दर्जन से अधिक मुकदमे दर्ज हैं इसे पकड़ने के लिए प्रभारी निरीक्षक वेद सिंह उप निरीक्षक मुकेश कुमार हेड कांस्टेबल कासिम अली श्रवण कुमार आदि पुलिस बल मौजूद था पुलिस ने पकड़े गए व्यक्ति के विरुद्ध अवैध शस्त्र रखने की रिपोर्ट दर्ज कर उसे जेल भेज दिया है।

बैंक कर्मी के घर चोरी करने वाला पकड़ा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। कमिश्नरेट कानपुर नगर में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना पनकी पुलिस ने एक शातिर चोर को गिरफ्तार कर बड़ी सफलता हासिल की है। घटनाक्रम की जानकारी देते हुए पुलिस उपायुक्त पश्चिम एस एम कासिम आबिदी ने बताया कि 12 तारीख में रिटायर्ड बैंक कर्मी जो कि मुंबई गये हुए थे और चोरों ने उनके बंद मकान में चोरी कर ली। इस घटना की तुरंत एफआईआर लिखकर टीमें गठित की गई। सीसीटीवी कैमरे जब खंगाले गए तब एक व्यक्ति अंकुश यादव नाम के एक व्यक्ति को देखा गया। दिनांक 21.07.2026 को मुखबिर की सूचना पर थाना पनकी पुलिस ने पाटनी पार्क चौराहे के पास से अभियुक्त अंकुश यादव (25 वर्ष) निवासी जनपद मैनपुरी (हाल पता-पनकी, कानपुर नगर) को गिरफ्तार किया। अभियुक्त के कब्जे से दो सोने की चेन, एक पान नुमा पेन्डिल युक्त सोने की चेन, चांदी की पायलें व बिछिया, चांदी के दीया स्टैंड, दो कलाई घड़ियां, एक एटीएम कार्ड, एक लैपटॉप, एक बैग, घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल तथा कुल 1,52,542 मूल्य का चोरी का माल बरामद किया गया। पूछताछ में अभियुक्त ने 12 जुलाई 2026 की रात्रि थाना पनकी क्षेत्र में ताला तोड़कर चोरी की घटना कारित करना स्वीकार किया। बरामदगी के आधार पर संबंधित मुकदमे में बढ़ोत्तरी धाराएं अंकित करते हुए अभियुक्त को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर जेल भेजा जा रहा है। गिरफ्तारी एवं बरामदगी की वीडियोग्राफी कर ई-साक्ष्य ऐप पर अपलोड की गई है।

डीसीपी ट्रेफिक ने किया प्रमुख चौराहों का निरीक्षण

कानपुर।पुलिस उपायुक्त यातायात रवीन्द्र कुमार द्वारा सुगम यातायात योजना 'Reducing Traffic Congestion (RTC) Scheme' के अंतर्गत झकरकटी बस अड्डा मार्ग , टाटमिल चौराहा , जरीब चौकी चौराहा एवं गोल चौराहा का स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान डीसीपी यातायात द्वारा यातायात व्यवस्था , सड़क पर वाहन दबाव , अवैध पार्किंग , ई-रिक्शा एवं ऑटो संचालन , सड़क किनारे अतिक्रमण तथा प्रमुख चौराहों पर यातायात संचालन की स्थिति का गहन अवलोकन किया गया। प्रमुख चौराहा/ तिराहा से ई- रिक्शा, ई-ऑटो , टेम्पो आदि को कम से कम 100 मीटर की दूरी पर सवारी बैठाने एवं उतारने हेतु निर्देशित किया गया तथा सड़क पर अनावश्यक रुकने वाले वाहनों के विरुद्ध अभियान चलाने के निर्देश दिए गए एवं चौराहा/ तिराहा पर चिन्हित चोक पॉइंट्स (Choke Points) की पहचान कर उनके कारकों को दूर किया जाए जिससे यात्रियों के मैक्सिमम ट्रैवल टाइम को घटाया जा सके।

हल्की बारिश में ही बेहाल हुआ ग्रामीणाचल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर ग्रामीण। सरसौल ब्लाक गांव नौगवा गौतम, में मानसून की हल्की बारिश से ही जलभराव की गंभीर समस्या खड़ी हो गई,, नालियों की सफाई न होने के कारण मुख्य मार्ग और गलियों में घुटनों तक पानी और कीचड़ भरा है, जिससे ग्रामीणों और स्कूली बच्चों को भारी परेशानी का सामान करना पड़ रहा है,, ब्लाक क्षेत्र में मानसून की हल्की बारिश के बाद जगह जगह जलभराव की समस्या सिर उठाने लगी है,, नालियों की सफाई न होने और जल निकासी की अव्यवस्था के कारण गांव की गलियों और मुख्य मार्गो पर पानी भर गया है,, इससे लोगों को घर से निकलना दूभर हो गया है,, खंड विकास सरसौल के गांव नौगवा गौतम के ग्रामीण अजय एव पूर्व ग्राम प्रधान ने बताया कि बारिश के बाद गली में घुटनों तक भर जाता है, स्कूली बच्चे जूते हाथ में लेकर पानी से होकर स्कूल जाने को मजबूर हैं स्थिति यह है कि यह समस्या सिर्फ बारिश की ही नहीं बल्कि पूरे साल गलियों की यही दुर्दशा बनी रहती है, नालियों की नियमित सफाई न होने के कारण घरों के बाहर हमेशा पानी और कीचड़ जमा रहता है यह गांव का मुख्य मार्गो में से एक है इसलिए दिन भर लोगों का आना-जाना बना रहता है फिसलन भरे रास्ते में कई ग्रामीण गिरकर चुटहिल भी हो चुके, शिकायत के बाद भी न तों सफाई कर्मचारी ध्यान दें रहें हैं और न ही संबंधित विभाग ध्यान दे रहा है।

सपा छात्रसभा ने फूंका केंद्रीय शिक्षा मंत्री का पुतला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कोंच(जालौन)- देश में नीट जैसे महत्वपूर्ण पेपर आउट होने और फिर परीक्षा स्थगित किए जाने के मामले में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का उनके पद से इस्तीफ़ा और परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता की मांग को लेकर छात्र-छात्राओं द्वारा नई दिल्ली के जंतर मंतर पर जारी आंदोलन की गूंज देश के तमाम बड़े शहरों से लेकर नगर और छोटे कस्बों तक में सुनाई देने लगी है। कोंच नगर में भी सपा छात्र सभा के कार्यकर्ता पुलिस से बचते-बचाते शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का पुतला फूंकने में कामयाब हो गए। पूर्व निर्धारित योजना के तहत सपा छात्रसभा के तमाम कार्यकर्ता जिलाध्यक्ष रामानंद कुशवाहा की अगुवाई में मंगलवार की दोपहर करीब एक बजे नगर के मारकंडेश्वर तिराहे पर धर्मेंद्र प्रधान का पुतला लेकर जैसे ही पहुंचे, वहां पहले से मौजूद कोतवाली पुलिस ने कार्यकर्ताओं को दौड़ा लिया और उनके हाथों से पुतला छीनने की कोशिश की। लेकिन कार्यकर्ता बाइकों पर सवार होकर गली-कूचों से निकलकर चंदकुआं चौराहा पर जा पहुंचे और पुलिस के यहां पर आने से चंद सेकेंड पहले ही पुतला फूंक डाला। पुलिस अधजले पुतले को छीनकर आग बुझाती नजर आई। वहीं गुस्साए कार्यकर्ताओं ने शिक्षा मंत्री सहित केंद्र सरकार के विरोध में खूब नारे लगाए और शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग की। जिलाध्यक्ष रामानंद ने कहा कि प्रधानमंत्री और शिक्षा मंत्री की हठधर्मिता के चलते देश के लाखों-करोड़ों छात्र-छात्राओं का भविष्य अंधकारमय हो गया है। अपने भविष्य को लेकर छात्र-छात्राएं अपनी आवाज उठा रहे हैं तो केंद्र सरकार उन पर लाठीचार्ज करवा रही है। प्रधानमंत्री अपने मन की बात तो छात्र-छात्राओं को सुनाते हैं, अब उन्हें भी तो छात्र-छात्राओं के मन की बात सुननी चाहिए। उन्होंने कहा कि सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने छात्र-छात्राओं को अपना पूरा समर्थन दिया है जिससे साबित होता है कि सपा छात्र-छात्राओं की हितैषी है। इस दौरान शिवम यादव पिरौना, माधव कुशवाहा, मुलायम सिंह कुशवाहा, कौशल किशोर प्रजापति, प्रदीप अहिरवार, कार्तिक पटेल, हरिओम यादव, मनीष पटेल, पल्लू रतनपुरा, पीर मोहम्मद, राज वर्मा, शिवम गुप्ता, सचिन यादव आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

उद्योगों को अलग बिजली लाइन देने की मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

तिलहर, शाहजहांपुर। औद्योगिक क्षेत्र को निर्बाध बिजली आपूर्ति और किसानों को फॉल्ट से राहत दिलाने की मांग को लेकर विधायक सलोना कुशवाहा ने मंगलवार को विद्युत विभाग के अधिशासी अभियंता कृष्ण गोपाल अग्रवाल को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने औद्योगिक क्षेत्र के लिए अलग इंडस्ट्रियल बिजली लाइन का प्रस्ताव शासन को भेजने के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों की जर्जर बिजली लाइनों को तत्काल दुरुस्त कराने की मांग की। विधायक ने कहा कि मौजूदा व्यवस्था में उद्योगों को लगातार और गुणवत्तापूर्ण बिजली नहीं मिल पा रही है। बार-बार ट्रिपिंग और आपूर्ति बाधित होने से उत्पादन प्रभावित हो रहा है, जिससे क्षेत्र के औद्योगिक विकास की रफ्तार थम रही है। उन्होंने कहा कि उद्योगों के लिए पृथक बिजली लाइन समय की जरूरत है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों की बदहाल बिजली व्यवस्था पर भी चिंता जताई। कहा कि कई गांवों में खंभों के बीच मानक से अधिक दूरी होने और वर्षों पुरानी जर्जर लाइनों के कारण आए दिन फॉल्ट होते हैं। इसका सबसे अधिक नुकसान किसानों को उठाना पड़ रहा है, जिन्हें सिंचाई के दौरान घंटों बिजली का इंतजार करना पड़ता है। उन्होंने जर्जर तार बदलने, नए पोल लगाने और पूरे नेटवर्क के सुदृढ़ीकरण की मांग की। अधिशासी अभियंता कृष्ण गोपाल अग्रवाल ने बताया कि विधायक का ज्ञापन प्राप्त हो गया है। औद्योगिक क्षेत्र के लिए अलग बिजली लाइन का प्रस्ताव शासन को भेजा जाएगा। स्वीकृति मिलते ही निर्माण कार्य शुरू कराया जाएगा। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों की जर्जर लाइनों के सुधार के लिए भी आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

वारंटी समेत तीन अन्य आरोपी पुलिस ने किये गिरफ्तार

कोंच(जालौन)- कोतवाली पुलिस ने वारंटी अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। मंगलवार को कोतवाली पुलिस ने मोहल्ला पटेल नगर चंदकुआ तिराहा के समीप एक घर पर दबिश देकर वारंटी इरशाद अहमद उर्फ गब्बर पुत्र शौकत अली को गिरफ्तार कर लिया। इरशाद के विरुद्ध गत समय पूर्व धारा 128 के तहत कोतवाली में मामला दर्ज कराया गया था। मामले में न्यायालय में होने वाली तारीखों से लगातार गैरहाजिर रहने पर न्यायालय ने उसके विरुद्ध गिरफ्तारी वारंट जारी किया था। वहीं दूसरी ओर दरोगा शिवनारायण वर्मा ने मंगलवार को सलीम पुत्र अजीम निवासी आजाद नगर सहित सीताशरण पुत्र मंगली कुशवाहा और उसके बेटे अमित कुशवाहा निवासी गांधीनगर को गिरफ्तार कर धारा 170/126/135 बीएनएस में निरुद्ध कर न्यायालय में पेश किया।

लवजिहाद,धर्मांतरण और राष्ट्रविरोधी प्रवृत्तियों के विरुद्ध जनजागरण तेज करेगा आर्य समाज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। शहर की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधि संगठन जिला आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन सीसामऊ आर्य समाज हाल मे शांतिपूर्ण एवं निर्विरोध संपन्न हुआ। निर्वाचन अधिकारी वरिष्ठ अधिवक्ता वेदप्रकाश आर्य ने बताया कि सभा के विभिन्न पदों के लिए जितने पद निर्धारित थे, उतने ही नामांकन पत्र प्राप्त हुए। सभी नामांकन वैध पाए जाने के कारण किसी भी पद पर मतदान की आवश्यकता नहीं पड़ी तथा सभी पदाधिकारियों को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। निर्विरोध निर्वाचित पदाधिकारियों में प्रधान चन्द्रकान्ता गेरा,मंत्री आनन्द जी आर्य, कोषाध्यक्ष अनिल चोपड़ा के अलावा उपप्रधान सुबोध आर्य, हरिश्चंद्र कनोत्रा, सरोज अवस्थी एवं सन्दीप आर्य, उपमंत्री शशिबाला चोपड़ा, प्रकाश पाण्डेय, रोमा चौधरी एवं सत्येन्द्र आर्य, , सह कोषाध्यक्ष प्रभाकर आर्य, आय-व्यय लेखा निरीक्षक मनन आर्य, पुस्तकाध्यक्ष उत्कर्ष आर्य, सह पुस्तकाध्यक्ष प्रणव आर्य, महिला संयोजिका डॉ. सन्तोष अरोड़ा, सह महिला संयोजिका सरोज शुक्ला, आर्य वीर दल अधिष्ठाता धर्मेन्द्र शर्मा तथा सह अधिष्ठाता, आर्य वीर दल आदित्य आर्य शामिल हैं। निर्वाचन की घोषणा के उपरांत उपस्थित प्रतिनिधियों ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का स्वागत करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर नवनिर्वाचित जिला मंत्री आनन्द जी आर्य ने कहा कि वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में आर्य समाज की जिम्मेदारी पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। जहां-जहां आर्य समाज की वैचारिक एवं सामाजिक सक्रियता कमजोर हुई है, वहां-वहां राष्ट्रविरोधी एवं समाज को बांटने वाली शक्तियों को अपने प्रभाव का विस्तार करने का अवसर मिला है। इसलिए समय की आवश्यकता है कि वैदिक धर्म के आदर्शों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए तथा समाज से कुरीतियों,

जातीय भेदभाव, अंधविश्वास एवं सामाजिक विषमताओं को दूर करने के लिए जनजागरण चलाया जाए। साथ ही लवजिहाद व धर्मांतरण के विरुद्ध जनजागरण, सामाजिक समरसता, राष्ट्रभक्ति, सेवा भाव तथा वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार को और अधिक गति देने का संकल्प व्यक्त किया गया। नई कार्यकारिणी ने संगठन को और अधिक सशक्त एवं सक्रिय बनाते हुए समाज और राष्ट्रहित के कार्यों को व्यापक स्तर पर आगे बढ़ाने का भी विश्वास दिलाया।

नाबालिगों के नाम जॉबकार्ड बनाने की शिकायत पर अधिकारियों ने की जांच

कोंच(जालौन)- ग्राम पंचायत घुसिया में मनरेगा के तहत नाबालिगों के नाम पर जॉब कार्ड बनाकर भुगतान किए जाने की शिकायत पर मंगलवार को अधिकारियों की टीम गांव पहुंची और मामले की जांच की। सोमवार को ग्रामीणों ने एसडीएम अभिनव कुमार यादव से शिकायत कर आरोप लगाया था कि मनरेगा में नाबालिगों के नाम पर जॉब कार्ड बनाकर सरकारी धन का भुगतान किया गया है। शिकायत को गंभीरता से लेते हुए अधिकारियों के निर्देश पर मंगलवार को श्रम अधिकारी जगदीश वर्मा, एएसटी थाना प्रभारी राजेंद्र कुमार, एडीओ पंचायत देवेंद्र सिंह निरंजन, ग्राम सचिव पवन कुमार सहित अन्य अधिकारी गांव पहुंचे।जांच टीम ने शिकायतकर्ताओं एवं ग्रामीणों से बातचीत कर जानकारी जुटाई और संबंधित अभिलेखों की भी पड़ताल की। अधिकारी जगदीश वर्मा ने बताया कि शिकायत के आधार पर मामले की जांच की गई है। जांच रिपोर्ट तैयार कर उच्चाधिकारियों को भेजी जाएगी, जिसके बाद नियमानुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

रेल मंत्री से मिले सांसद डॉ. विनोद बिंद, ओवरब्रिज, अंडरपास और ट्रेनों के ठहराव पर हुई चर्चा

भदोही। भदोही लोकसभा क्षेत्र में रेलवे विकास कार्यों को गति देने के उद्देश्य से भाजपा सांसद डॉ. विनोद कुमार बिंद ने मंगलवार को नई दिल्ली में केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात की। इस दौरान ककराही और माधोसिंह रेलवे क्रॉसिंग पर प्रस्तावित ओवरब्रिज, सरायकंसराय समेत विभिन्न स्थानों पर अंडरपास निर्माण तथा प्रमुख ट्रेनों के ठहराव सहित क्षेत्र की अन्य रेलवे संबंधी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा हुई। सांसद ने रेल मंत्री को बताया कि भदोही लोकसभा क्षेत्र में कई स्थानों पर ओवरब्रिज और अंडरपास की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही है। पूर्व में किए गए प्रयासों से कई परियोजनाओं को स्वीकृति मिल चुकी है। उन्होंने इन स्वीकृत कार्यों को शीघ्र शुरू कराने और लंबित प्रस्तावों पर भी जल्द निर्णय लेने का आग्रह किया। डॉ. बिंद ने बताया कि ककराही और माधोसिंह रेलवे क्रॉसिंग पर ओवरब्रिज निर्माण तथा सरायकंसराय सहित अन्य स्थानों पर अंडरपास का निर्माण स्थानीय लोगों की प्रमुख मांग है। इसके साथ ही क्षेत्रवासियों की सुविधा के लिए विभिन्न महत्वपूर्ण ट्रेनों के ठहराव का मुद्दा भी रेल मंत्री के समक्ष रखा गया। सांसद के अनुसार, केंद्रीय रेल मंत्री ने सभी मांगों पर सकारात्मक विचार करते हुए समस्याओं के शीघ्र निस्तारण का आश्वासन दिया है। उन्होंने विश्वास जताया कि जल्द ही ओवरब्रिज और अंडरपास निर्माण कार्य शुरू होंगे तथा रेलवे से जुड़ी अन्य मांगों पर भी आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। डॉ. बिंद ने कहा कि वह लोकसभा क्षेत्र की रेलवे संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए रेल मंत्रालय और स्थानीय रेलवे अधिकारियों के साथ लगातार समन्वय बनाए हुए हैं, ताकि जनपदवासियों को शीघ्र बेहतर रेलवे सुविधाओं का लाभ मिल सके।

एसपी अभिनव त्यागी ने की जनसुनवाई, शिकायतों के त्वरित निस्तारण के दिए निर्देश

भदोही। पुलिस अधीक्षक अभिनव त्यागी ने मंगलवार को पुलिस कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई के दौरान फरियादियों की शिकायतें सुनीं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों और थाना प्रभारियों को मामलों का त्वरित, निष्पक्ष एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। एसपी ने कहा कि शिकायतों का निस्तारण केवल कागजी कार्रवाई तक सीमित न रहे, बल्कि धरातल पर प्रभावी कार्रवाई हो, ताकि पीड़ित पूरी तरह संतुष्ट हो सके। साथ ही थानों पर आने वाले प्रत्येक फरियादी के साथ संवेदनशील व्यवहार करने और शिकायतों को प्राथमिकता के आधार पर विधिक कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

गणेश ट्री फाउंडेशन ने किया पौधारोपण

भदोही। गणेश ट्री फाउंडेशन के साप्ताहिक वृक्षारोपण अभियान के तहत मंगलवार को ग्राम पंचायत पिपरीस स्थित गौशाला एवं राजकीय आईटीआई परिसर में 50 से अधिक पौधे लगाए गए। संस्था के संस्थापक गणेश दुबे ने पर्यावरण संरक्षण में जनभागीदारी पर बल देते हुए अधिक से अधिक पौधे लगाने का आह्वान किया। इस दौरान ग्राम प्रधान हृदय नारायण सरोज सहित आलोक दुबे, शरद बिंद, मनीष गुप्ता, गोलू दुबे, कृष्णा दुबे, निक्की बिंद व अन्य लोगों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

अधिकारी चौपाल लगाकर करेंगे किसानों की समस्या का निदान

मझराकला के किसान अर्से समय से जूझ रहे हैं अपनी खेतों की समस्या को लेकर।

सीखड़। क्षेत्र के मझराकला के के दर्जनों गांवों के किसान अपने खेतों की आराजी, रकबा तथा खेतों पर अपनी नाम जैसी समस्या को लेकर अर्से से परेशान हैं|कई बार तहसील से लेकर जिला मुख्यालय का चक्कर लगा चुके किसानों ने अपनी फरियाद चुनार विधायक अनुराग सिंह से की,जिस पर चुनार विधायक प्रकरण का गंभीरता से संज्ञान लेते हुए जिलाधिकारी से वार्ता की। वार्ता के दौरान जिलाधिकारी द्वारा 22जुलाई को बुधवार को टीम गठित कर किसानों की समस्या को हल करने का निर्देश चुनार उपजिलाधिकारी को दिया गया,जिसके क्रम में धनैता पंचायत भवन पर बुधवार को राजस्व विभाग की टीम स्थानीय किसानों की जमीन संबंधित समस्या का मुआयना कर निस्तारण करेगी। मझराकला के दर्जनों गांवों के किसानों ने इसके लिए चुनार विधायक अनुराग सिंह का आभार व्यक्त किया है।

बेलन बरौधा चौकी क्षेत्र में चोरों के आतंक से परेशान ग्रामीण

● बेलन बरौधा चौकी पर ग्रामीण देते हैं प्रार्थना पत्र नहीं होता ग्रामीणों की सुनवाई ग्रामीणों में आक्रोश।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मीरजापुर। लालगंज थाना क्षेत्र के बेलन बरौधा चौकी क्षेत्र मे हौसला बुलंद चोर आए दिन चोरी को देते हैं अंजाम पीड़ित चौकी पर देते हैं प्रार्थना पत्र नहीं होता है।चौकी पर कोई कार्रवाई प्रार्थना पत्र लेकर दर-दर भटकते नजर आए पिड़ीत ।पीड़ित कमला शंकर त्रिपाठी पुत्र स्वर्गीय कृष्णकांत तिवारी ग्राम धसड़ा राजा ने बताया कि 7 जुलाई को नीरज त्रिपाठी पुत्र शिवकुमार त्रिपाठी निवासी ग्राम धसड़ा राजा पोस्ट कनोखर लालगंज मिर्जापुर के द्वारा मेरे घर जो की कच्चा मकान है हमारे घर की छत को काटकर चोरी करने का प्रयास किया गया मौके पर छत काटते वक्त उसको देखा गया आहत पाते ही वह भाग गया मौके पर हमने 112 पर डायल करके पुलिस बुलाया पुलिस आकर मौके पर मुआयना किया।

तथा वीडियो ग्राफी बनाई गई उस समय गांव के सभी लोग घटना को देखे थे व्यक्ति पहले भी कई बार मेरे घर में चोरी कर चुका है शांति बनाए रखने तथा विवाद न बढ़े किसी प्रकार की शिकायत नहीं की थी इस व्यक्ति के द्वारा मेरे ट्रैक्टर की बैटरी चोरी की गई इसने दो वर्ष पूर्व 10 बोरी धान उठा ले गया था इस व्यक्ति के संबंध में गांव में भी चोरी की घटनाओं की चर्चा होती रहती है उसके दादाजी दया शंकर तिवारी उसका भाई पंकज तिवारी के द्वारा बोला गया मेरे परिवार के सामने की अगर वह मर्डर हत्या भी करेगा तो बचा लूंगा जिसको जो उखाड़ना है उखाड़ ले जिससे हमें अपनी जान माल की सुरक्षा को लेकर गंभीर आशंका रहती है इसके अतिरिक्त उसके दादाजी के पास हथियार भी है जिससे हमारा पूरा परिवार स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं आप से विनम्र निवेदन है कि उक्त मामले की निपक्ष जांच कर आवश्यक कार्रवाई की जाए। साथ ही साथ क्षेत्रीय ग्रामीणों ने बताया कि आए दिन क्षेत्र में चोरी का वारदात होता रहता है एक भी चोरी का अभी तक नहीं हुआ खुलासा बड़ी से बड़ी हुई चोरी बेलन बरौधा मे नहीं हुआ एक ही चोरी का खुलासा पुलिस के कर शैली पर उठ रहा है निशानियां सवाल।

आरुषि सिंह ने राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा नीट यूजी में शानदार सफलता हासिल की

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मीरजापुर। जिगना छानबे क्षेत्र की जिगना बारी गांव की होनहार बेटी आरुषि सिंह ने राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा नीट यूजी में शानदार सफलता हासिल कर छानबे क्षेत्र व गांव सहित जिले का नाम रोशन किया है सफलता से परिजनो व शुभचिंतकों में खुशी की लहर है जिगना बारी गांव निवासिनी आरुषि सिंह 720 नंबर में 601 नंबर प्राप्त कर देश के जनरल कैटेगरी रैंक में 9582 और महिला जनरल रैंक में 4008 रैंक प्राप्त की उनकी सफलता पर परिवार और गांव में खुशी का माहौल रहा लोग एक दूसरे को मिठाई खिलाकर बिटिया को आशीर्वाद दिया व प्रसन्नता जाहिर की आरुषि सिंह ने इस सफलता का श्रेय अपने पिता धर्मेंद्र सिंह व माता ममता सिंह व दादा जय प्रताप सिंह को दिया और अपने गुरूजन के मार्गदर्शन व नियमित अध्ययन को दिया उनके गांव जिगना बारी पर उपस्थित परिजनों और ग्रामीणों ने बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की इस दौरान प्रेम बहादुर सिंह राम सिंह संजय सिंह विनय प्रताप सिंह छैल बहादुर सिंह विभूतिभूषण सिंह उर्फ बबलू सिंह मनोज उपाध्याय अनूप उपाध्याय महेंद्र प्रताप सिंह गुड्डू सिंह महेश सिंह पंच बहादुर सिंह अजय सिंह मोहन यादव सुशील सिंह।

बहराइच में 32.84 करोड़ की लागत से बनेगा बहुमंजिला ओपीडी और ऑडिटोरियम, मिली स्वीकृति

बहराइच। प्रधानमंत्री जन विकास कार्यक्रम (पीएमजेवीके) के तहत जिले को 32 करोड़ 84 लाख 34 हजार रुपये की दो महत्वपूर्ण परियोजनाओं की स्वीकृति मिल गई है। प्रदेश सरकार की राज्य स्तरीय समिति की दो जुलाई को हुई बैठक में प्रस्तावों को मंजूरी मिलने के बाद अल्पसंख्यक कल्याण विभाग ने रिपोर्ट केंद्र सरकार को भेज दी है। अब बजट जारी होते ही दोनों परियोजनाओं पर निर्माण कार्य शुरू कराया जाएगा। स्वीकृत परियोजनाओं में सबसे बड़ी योजना मेडिकल कालेज परिसर में 27 करोड़ 88 लाख रुपये की लागत से बहुमंजिला ओपीडी भवन का निर्माण है। इसके बनने से मरीजों को बेहतर उपचार सुविधाएं मिलेंगी और बढ़ती मरीज संख्या के अनुरूप स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार होगा। दूसरी परियोजना के तहत शहर के राजकीय इंटर कालेज (जीआइसी) में चार करोड़ 95 लाख रुपये की लागत से अत्याधुनिक ऑडिटोरियम बनाया जाएगा।

मुख्यमंत्री डैशबोर्ड की समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी के कड़े निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही। मुख्यमंत्री डैशबोर्ड पर डी-श्रेणी में शामिल कर एवं करेत्तर राजस्व, राजस्व कार्यों तथा राजस्व न्यायालयों से संबंधित प्रकरणों की समीक्षा बैठक जिलाधिकारी शैलेष कुमार की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में विभिन्न विभागों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी द्वारा निर्देश दिया गया कि शासन की प्राथमिकताओं के अनुरूप सभी विभाग निर्धारित लक्ष्यों की शत-प्रतिशत एवं समयबद्ध पूर्ति सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही अथवा शिथिलता स्वीकार नहीं की जाएगी। जिलाधिकारी ने समस्त तहसीलदारों को अमीनवार राजस्व वसूली की साप्ताहिक समीक्षा कर अभियान चलाकर वसूली में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रत्येक तहसील में 10 बड़े बकायेदारों की सूची सार्वजनिक रूप से चस्पा करने तथा उनसे प्रभावी वसूली सुनिश्चित कराये साथ ही नगर निकायों के अधिशासी अधिकारियों को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना सहित अन्य मदों की बकाया धनराशि की वसूली कर जनपद की राजस्व रैंकिंग में सुधार लाने के लिए विशेष अभियान संचालित करने के निर्देश दिए।

बैठक में जिलाधिकारी ने 5 वर्ष से अधिक पुराने राजस्व वादों के निस्तारण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए निर्देशित किया कि 'न्यायालय आपके द्वार' अभियान के अंतर्गत स्थलीय निरीक्षण कर ऐसे प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने समस्त उप जिलाधिकारियों एवं तहसीलदारों को चेतावनी दी कि पुराने लंबित वादों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। राजस्व न्यायालयों की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने अभियान चलाकर धारा-24 एवं धारा-34 के वादों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण कराने के निर्देश दिए। समीक्षा के दौरान आवश्यक अभिलेख एवं सही आख्या उपलब्ध न कराने तथा कार्य में लापरवाही पाए जाने पर नायब तहसीलदार मतेथू भागीरथी को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश संबंधित अधिकारी को दिए। साथ ही धारा-67 के मामलों में मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) का अनुपालन सुनिश्चित करने, आरसी वसूली शत-प्रतिशत पूर्ण कराने तथा शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं के पात्र लाभार्थियों को समयबद्ध लाभान्वित करने के निर्देश भी दिए। आईजीआरएस पोर्टल की समीक्षा के दौरान असंतोषजनक फीडबैक पर जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए तथा कोई भी प्रकरण डिफॉल्टर श्रेणी में नहीं जाना चाहिए। राजस्व वसूली की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने परिवहन, आबकारी, राजस्व, नगर निकाय एवं खनन विभाग को लक्ष्य के अनुरूप वसूली सुनिश्चित करने के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए। वाणिज्य कर विभाग की वसूली लक्ष्य से लगभग 49 प्रतिशत कम पाए जाने तथा वसूली का समुचित मिलान न होने पर संबंधित अधिकारी के प्रति कड़ी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने निर्देशित किया कि अगली समीक्षा बैठक से पूर्व सभी आरसी का मिलान कलेक्ट्रेट स्थित सीआरए पटल पर अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जाए। इसी प्रकार सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी (एआरटीओ) को भी परिवहन विभाग की समस्त आरसी का मिलान सीआरए पटल पर कराने के निर्देश दिए।

बैठक में आईजीआरएस, खतौनी अंश निर्धारण, स्वामित्व योजना, एंटी भू-माफिया अभियान, ऑडिट आपत्तियों तथा राजस्व वादों की प्रगति की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने अधिकारियों को शासन की मंशा के अनुरूप कार्य करते हुए सभी लंबित प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जनहित से जुड़े मामलों में लापरवाही किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी तथा जवाबदेही तय करते हुए आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। बैठक में अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) शुभांगी शुक्ला, अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) विजय नारायण सिंह, समस्त उप जिलाधिकारी, तहसीलदार, अधिशासी अधिकारी एवं संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

दिल्ली लाठीचार्ज के विरोध में आजमगढ़ में छात्रों का प्रदर्शन

पुलिस ने छात्रों को कलेक्ट्रेट पहुंचने से रोका, हुई धक्का-मुक्की।

कई छात्रों को हिरासत में लिया गया, बाद में छोड़ा गया।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

आजमगढ़। दिल्ली के जंतर-मंतर पर छात्रों पर हुए लाठीचार्ज के विरोध में मंगलवार को आजमगढ़ में भी प्रदर्शन की कोशिश को लेकर दिनभर पुलिस और छात्रों के बीच रस्साकशी चलती रही। बड़ी संख्या में छात्र सड़क पर उतर आए। छात्रों की भीड़ कलेक्ट्रेट पहुंचने लगी तो पुलिस ने उन्हें रोक दिया। इसे लेकर कई स्थानों पर छात्रों और पुलिस के बीच नोकझोंक व धक्का-मुक्की भी हुई। हालांकि पुलिस ने स्थिति पर पूरे समय नियंत्रण बनाए रखा। सुबह से ही कलेक्ट्रेट परिसर के सामने स्थित अंबेडकर पार्क में छात्र जुटने लगे। बताया गया कि कुछ मीडिया इन्फ्लुएंसरों ने इंटरनेट मीडिया के माध्यम से यह पोस्ट प्रसारित कर दिया था कि अंबेडकर पार्क में प्रदर्शन की अनुमति मिल गई है। इसके बाद विभिन्न क्षेत्रों से छात्र सुबह ही मौके पर पहुंचने लगे। सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी भारी पुलिस बल के साथ तैनात हो गए।

कलेक्ट्रेट की ओर बढ़ रहे छात्रों को रोकने के लिए पुलिस ने पहले से बैरिकेडिंग कर रखी थी। सुबह करीब 10 बजे से शुरू हुआ घटनाक्रम पूरे दिन चलता रहा। छात्र जैसे-जैसे आगे बढ़ने का प्रयास करते, पुलिस उन्हें रोककर समझाती रही। इस दौरान कई जगह प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच धक्का-मुक्की भी हुई, लेकिन पुलिस ने किसी को प्रदर्शन नहीं करने दिया। प्रदर्शन करने के प्रयास के दौरान पुलिस ने कई छात्रों को हिरासत में लेकर पुलिस वाहनों और थाने भेजा। बाद में सभी को समझाकर छोड़ दिया गया। पूरे घटनाक्रम के दौरान कलेक्ट्रेट परिसर और सिविल लाइंस क्षेत्र पुलिस छावनी में तब्दील रहा। किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात रहा। हालांकि दिनभर चली तनातनी के बावजूद कोई बड़ी अप्रिय घटना नहीं हुई। प्रशासन का कहना था कि बिना अनुमति किसी भी प्रकार का प्रदर्शन नहीं होने दिया जाएगा, जबकि छात्र दिल्ली की घटना के विरोध में शांतिपूर्ण प्रदर्शन की मांग पर अड़े रहे।

दादा और पोते की हत्या करने वाला 50 हजार का इनामी बदमाश मुठभेड़ में गिरफ्तार

आजमगढ़। पवई थाना क्षेत्र में दादा और पोते की हत्या करने वाला 50 हजार के इनामी आरोपित को सोमवार को पुलिस ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। पुलिस की जवाबी फायरिंग में आरोपित के दोनों पैरों में गोली लगी, जिसके बाद उसे उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पवई भेजा गया। पवई थाना क्षेत्र के हेवती गांव में पैतृक संपत्ति और पारिवारिक विवाद को लेकर संतोष यादव निवासी ताराखुर्द, थाना मालीपुर (अंबेडकरनगर) ने 12 जुलाई की रात में अपने दादा जगदम्बा प्रसाद और चचेरे भाई श्रीवांशु यादव उर्फ अंकित की कुल्हाड़ी से हत्या कर दी थी। इस मामले में थाना पवई पर मुकदमा दर्ज किया गया था। आरोपित की गिरफ्तारी पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने 50 हजार का इनाम घोषित किया था। सोमवार को थानाध्यक्ष मनीष पाल को मुखबिर से सूचना मिली कि आरोपित बाइक से ओरिल की ओर से हेवती आ रहा है। सूचना पर पुलिस ने हेवती-ओरिल मार्ग स्थित रसूलाबाद मोड़ के पास घेराबंदी की। पुलिस को देखकर आरोपित भागने लगा, लेकिन बारिश के कारण उसकी बाइक फिसलकर गिर गई। खुद को घिरा देख उसने पुलिस टीम पर तमंचे से फायरिंग कर दी।

जुलाई माह की शिक्षण संकुल बैठक का कार्यवृत्त

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही सुरियावां। मंगलवार को न्याय पंचायत हरीपट्टीकी जुलाई माह की शिक्षण संकुल बैठक पूर्व माध्यमिक विद्यालय बनकट में आयोजित की गई। बैठक का शुभारंभ ईश्वर वंदना के साथ किया गया। तत्पश्चात बैठक में उपस्थित सभी प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों, शिक्षामित्रों एवं अनुदेशकों का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इसके उपरांत परियोजना कार्यालय से प्राप्त एजेंडा के अनुसार बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की गई। बैठक का मुख्य विषय '10 प्रमुख शिक्षण-अधिगम बिंदुओं' पर विस्तृत चर्चा करना रहा। न्याय पंचायत हरीपट्टी के समस्त विद्यालयों द्वारा क्रमवार इन दसों प्रमुख शिक्षण-अधिगम बिंदुओं पर अपने-अपने अनुभव, नवाचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए गए। साथ ही निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रभावी शिक्षण रणनीतियों एवं कक्षा-कक्ष शिक्षण को अधिक रुचिकर एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने पर विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक में विद्यालयों में नामांकन वृद्धि पर विशेष बल दिया गया। यह निर्णय लिया गया कि सभी शिक्षक विद्यालय समय के उपरांत अपने-अपने ग्रामों में जनसंपर्क करेंगे तथा अभिभावकों को परिषदीय विद्यालयों में उपलब्ध निःशुल्क सुविधाओं, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं बच्चों के सर्वांगीण विकास के बारे में जागरूक करते हुए अधिक से अधिक बच्चों का नामांकन सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगे। बैठक में विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता एवं अधिगम स्तर को बेहतर बनाने पर विशेष जोर दिया गया। सभी शिक्षकों से अपेक्षा की गई कि वे कक्षा शिक्षण के दौरान टीएलएम (शिक्षण-अधिगम सामग्री),गतिविधि-आधारित शिक्षण, नियमित अभ्यास तथा सतत मूल्यांकन का प्रभावी उपयोग करेंगे, जिससे प्रत्येक बच्चा रुचिपूर्वक सीख सके, विषय-वस्तु को भली-भाँति समझ सके तथा अपेक्षित अधिगम स्तर प्राप्त कर सके। बैठक में डॉ. ओमप्रकाश मिश्रा प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय बनकगिरीश दुबे प्रधानाध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय बनकटश्याम नारायण दुबे सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय सहित न्याय पंचायत हरीपट्टी के समस्त प्रधानाध्यापक, सहायक अध्यापक, शिक्षामित्र एवं अनुदेशक उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय हनुमान दल का विंध्याचल दौरा, मां महाविद्यावासिनी का लिया आशीर्वाद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मीरजापुर। विंध्याचल राष्ट्रीय हनुमान दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रोहित सिंह हिंदू एवं राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री तरुण कुमार गुप्ता के नेतृत्व में संगठन का प्रतिनिधिमंडल विंध्याचल धाम पहुँचा, जहाँ सभी पदाधिकारियों ने विश्वविख्यात शक्तिपीठ माँ महाविद्यावासिनी के दर्शन-पूजन कर राष्ट्र की उन्नति, सनातन संस्कृति की रक्षा तथा समाज के सुख-समृद्धि एवं कल्याण की मंगलकामना की। इस अवसर पर राष्ट्रीय संयोजक श्री पंकज राघव, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अरविंद कुमार सहित संगठन के अनेक राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं जिला पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी ने माँ के चरणों में नमन कर धर्म, राष्ट्र एवं समाज सेवा के लिए निरंतर समर्पित रहने का संकल्प लिया।

दर्शन-पूजन के उपरांत प्रतिनिधिमंडल ने सरकारी गेस्ट हाउस में मिर्जापुर जनपद एवं काशी क्षेत्र के पदाधिकारियों की महत्वपूर्ण संगठनात्मक बैठक आयोजित की। बैठक में संगठन के विस्तार, आगामी कार्यक्रमों, सेवा कार्यों, युवा शक्ति के संगठन, धर्म जागरण एवं जनसंपर्क अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने पर विस्तृत चर्चा की गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रोहित सिंह हिंदू ने कहा कि राष्ट्रीय हनुमान दल समाज, राष्ट्र एवं सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए निरंतर कार्यरत है तथा संगठन का उद्देश्य सेवा, संस्कार और संगठन के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देना है। राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री तरुण कुमार गुप्ता प्रदेश प्रवक्ता राजकुमार दुबे ने सभी पदाधिकारियों से संगठन को बूथ स्तर तक सशक्त बनाने, सेवा गतिविधियों को गति देने तथा अधिक से अधिक युवाओं को राष्ट्र एवं धर्महित के कार्यों से जोड़ने का आह्वान किया। बैठक के अंत में उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने संगठन के आगामी अभियानों को पूर्ण समर्पण, अनुशासन एवं सेवा भाव के साथ सफल बनाने का सामूहिक संकल्प लिया।

ड्रमंडगंज घाटी में कंटेनर के धक्के से बाइक सवार एक की मौत एक गंभीर रूप से घायल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मीरजापुर। ड्रमंडगंज।क्षेत्र के वाराणसी रीवा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित ड्रमंडगंज घाटी में सोमवार की शाम पांच बजे के करीब कंटेनर के धक्के से बाइक सवार दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों घायलों को उपचार हेतु एनएचएआई की एंबुलेंस से सीएचसी लालगंज भिजवाया। प्रयागराज जिले के शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के नारीबारी गांव निवासी 45 वर्षीय पवन तिवारी देहात कोतवाली क्षेत्र के नुआंव गांव निवासी 60 वर्षीय बबलू दुबे के साथ बाइक से मध्यप्रदेश गए थे। सोमवार शाम को जैसे ही ड्रमंडगंज घाटी के जालिम मोड़ और बड़का मोड़ के बीच में पहुंचे तो पीछे से आ रहे कंटेनर ने बाइक में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। बाइक कंटेनर में फंसकर दो सौ मीटर दूर बड़का मोड़ तक घिसटती चली गई। सूचना पर पहुंचे एसआई पुनीत गुप्ता,एसआई सुभाष यादव,ईश्वर चन्द्र तिवारी ने दोनों घायलों को एंबुलेंस से सीएचसी लालगंज भिजवाया। जहां चिकित्सक ने देखते ही पवन तिवारी को मृत घोषित कर दिया और गंभीर रूप से घायल बबलू को मंडलीय चिकित्सालय रेफर कर दिया। वहीं घटना के बाद कंटेनर चालक घटना स्थल से दो किलोमीटर आगे सड़क किनारे कंटेनर खड़ा कर भाग निकला। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार ने बताया कि कंटेनर के धक्के बाइक सवार प्रयागराज जिला निवासी युवक की मौत हो गई है। गंभीर रूप से घायल दूसरे बाइक सवार का उपचार चल रहा है।

बहराइच के मंच से दो विधायकों का नाम लेकर CM योगी दे गए सियासी संकेत

बहराइच। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के तेजवापुर दौरे के दौरान मंच से दो विधायकों का नाम लिए जाने के बाद जिले की राजनीति में नई चर्चाओं ने जोर पकड़ लिया है। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन के दौरान नानपारा विधायक रामनिवास वर्मा और महसी विधायक सुरेश्वर सिंह का नाम लेकर उनका उल्लेख किया। इसके बाद राजनीतिक गलियारों में इसे लेकर तरह-तरह के कयास लगाए जाने लगे हैं। जनसभा में मुख्यमंत्री ने विकास कार्यों और जनकल्याणकारी योजनाओं का जिक्र करते हुए दोनों विधायकों का नाम लिया। इसके बाद भाजपा कार्यकर्ताओं और स्थानीय राजनीतिक जानकारों के बीच इस बात की चर्चा शुरू हो गई कि मुख्यमंत्री का यह उल्लेख महज औपचारिक था या इसके पीछे कोई विशेष राजनीतिक संदेश भी छिपा है।

उन्नाव पुलिस को बड़ी सफलता: दो ई-रिक्शा चोर गिरफ्तार, चोरी के चार ई-रिक्शा बरामद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

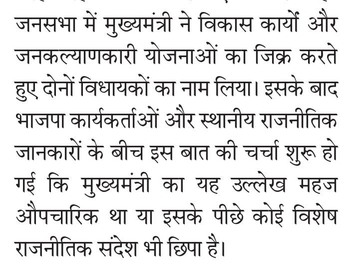

उन्नाव। जनपद में वाहन चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने के अभियान के तहत कोतवाली सदर पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए दो शातिर ई-रिक्शा चोरों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से चोरी के चार ई-रिक्शा बरामद किए हैं। कार्रवाई वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत की गई। पुलिस के अनुसार, 20 जुलाई 2026 को नवीन मंडी, हुसैन नगर क्षेत्र से ई-रिक्शा संख्या UP35 BT7826 चोरी होने पर वादी विपिन कुमार की तहरीर पर कोतवाली सदर में मुकदमा संख्या 449/2026 धारा 303(2) बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया था। इसी दिन नवीन मंडी से एक अन्य ई-रिक्शा चोरी होने पर वादी अमन रावत की शिकायत पर मुकदमा संख्या 450/2026 धारा 303(2) बीएनएस में अभियोग पंजीकृत किया गया।

मामले के खुलासे के लिए प्रभारी निरीक्षक चंद्रकांत मिश्रा के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 21 जुलाई को दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। उनकी निशानदेही पर दोनों मुकदमों से संबंधित ई-रिक्शा UP 35 BT 7826 एवं UP78 LN 3920 बरामद किए गए। इसके अलावा सुजुकी एजेंसी के पीछे से चोरी के दो अन्य ई-रिक्शा UP35 AT 5205 तथा UP35 BT 0244 भी बरामद किए गए। गिरफ्तार अभियुक्तों की पहचान निखिल साहू (19) पुत्र राजकिशोर साहू एवं सूजल (19) पुत्र रमेश शर्मा, निवासी ग्राम बदरका, थाना अचलगंज, जनपद उन्नाव के रूप में हुई है। पुलिस ने बरामदगी के आधार पर दोनों अभियुक्तों के विरुद्ध संबंधित मुकदमों में धारा 317(2) एवं 317(4) बीएनएस की बढ़ोतरी की है। दोनों आरोपियों को न्यायालय के समक्ष पेश कर न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया। पुलिस के अनुसार, अभियुक्तों के विरुद्ध पूर्व में भी अचलगंज थाने में वाहन चोरी से संबंधित एक आपराधिक मुकदमा दर्ज है। उन्नाव पुलिस की इस कार्रवाई से ई-रिक्शा चोरी की वारदातों पर अंकुश लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण सफलता मानी जा रही है।

आजमगढ़ में परिषदीय विद्यालयों में योग टीचर के नाम पर 118 लोगों से 1.60 करोड़ की ठगी

आजमगढ़। सरकारी विद्यालयों में योग शिक्षक की नियुक्ति दिलाने का झांसा देकर जिले के 118 लोगों से करीब 1.60 करोड़ रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। चौंकाने वाली बात यह है कि आरोपितों ने कूटरचित नियुक्ति पत्र और विभागीय आदेश के आधार पर सभी अभ्यर्थियों से परिषदीय विद्यालयों में करीब डेढ़ से तीन माह तक बच्चों को योग का प्रशिक्षण भी कराया। मानदेय की मांग पर पूरा फर्जीवाड़ा उजागर हुआ। पीड़ितों ने मुबारकपुर थाने और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से शिकायत कर कार्रवाई की मांग की है। पीड़ित अंकित जायसवाल ने बताया कि क्षेत्र के दो युवकों ने उनकी पत्नी सुजाता जायसवाल को वर्ष 2025 में जूनियर और प्राथमिक विद्यालयों में योग शिक्षक की नौकरी दिलाने का भरोसा देकर 1.35 लाख रुपये लिए। इसके बाद मैक्स आइडिया मेडिटेशन, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली के नाम से नियुक्ति पत्र दिया गया। साथ ही खंड शिक्षा अधिकारी और बेसिक शिक्षा विभाग के नाम से कूटरचित आदेश जारी कर विद्यालयों में कार्यभार ग्रहण करा दिया गया। नियुक्ति पत्र में 13,500 रुपये प्रतिमाह मानदेय का उल्लेख था। इन आदेशों के आधार पर अन्य योग शिक्षकों ने प्राथमिक विद्यालय अवांव, चिवटही, अतरडीहा, अमिलो, देवली आईमा, देवली खालसा, कंपोजिट विद्यालय मुबारकपुर, जूनियर हाईस्कूल अमिलो समेत 15 विद्यालयों में अभ्यर्थियों ने योग का प्रशिक्षण दिया। जहानागंज क्षेत्र के महुआ मुरारपुर गांव की संध्या राजभर ने 17 जून 2026 को एसएसपी से शिकायत करते हुए बताया था कि उनके साथ 1.55 लाख रुपये की धोखाधड़ी हुई है।

संक्षिप्त खबरें

सर्पदंश से महिला व युवक की हुई मौत, कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। सर्पदंश से महिला व युवक की मौत हो गयी। मौत की जानकारी होने पर परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। सांगीपुर थाना क्षेत्र के पूरे पण्डित सिंहगढ़ गांव निवासी रमाशंकर मिश्र उर्फ झुन्ना की अड़तालिस वर्षीया पत्नी पुष्पा देवी बीती सोमवार की रात करीब साढ़े आठ बजे घर के बगल धान की नर्सरी में घुसे मवेशी को भगाने गयी थी। इसी बीच खेत के पास उसे जहरीले सर्प ने डस लिया। महिला चीखते हुए भागकर घर पहुंची और परिवार को सर्पदंश की जानकारी दी। इसी बीच वह अचेत हो गयी। परिजन उसे इलाज के लिए सांगीपुर सीएचसी ले गये। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मौत की जानकारी होने पर परिवार में कोहराम मच गया। मृतका के एक पुत्र व दो पुत्रियां हैं।इधर सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा कर पीएम के लिए भेजवाया। उधर थाना क्षेत्र के बूबूपुर गांव में सोमवार की रात करीब दो बजे सर्पदंश से अठारह वर्षीय युवक की मौत हो गयी। मृतक प्रतीक मिश्र उर्फ नान पुत्र धर्मेन्द्र मिश्र रायबरेली जनपद के कवही भगतपुर परशदेपुर निवासी था। वह यहां अपने मामा के मदन कुमार पाण्डेय के यहां रहकर पढ़ाई करता था। परिजनों के अनुसार रात करीब दो बजे कमरे में तख्त पर सोते समय उसे जहरीले सर्प ने डस लिया। इसकी जानकारी युवक ने मामा को दी। आननफानन में उसे इलाज के लिए सीएचसी सांगीपुर ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने प्रतीक को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजा है। मृतक दो भाईयों में छोटा था। हादसे से परिजनों का रो-रो कर बुराहाल है। एसओ गौरव त्रिवेदी का कहना है कि शव को पीएम के लिए भेजा गया है।

आज दो दिवसीय दौरे पर आयेंगी विधायक मोना

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना आज बुधवार से रामपुरखास के दो दिवसीय दौरे पर आयेंगी। विधायक मोना आज बुधवार को दिन में ढ़ाई बजे ननौती में कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेंगी। सायं पांच बजे बाबा घुइसरनाथ धाम में पर्यटन विकास से जुड़ी परियोजनाओं का अवलोकन करेगी। सायं पौने पांच बजे लालगंज कैम्प कार्यालय पर जनसमस्याओं की सुनवाई करेंगी। वह रात्रि विश्राम लालगंज स्थित आवास पर करेंगी। अगले दिन गुरूवार को वह पूर्वान्ह ग्यारह बजे कैम्प कार्यालय पर कार्यकर्ताओं की बैठक में शामिल होंगी। इसके बाद विधायक मोना दिन में बारह बजे कटरा मातादीन व धारूपुर तथा मोठिन, खण्डवा, प्रतापपुर, खपराही, वीरसिंहपुर, लकुरी, भटनी आदि स्थानों पर आयोजित विविध कार्यक्रमों में शामिल होंगी। यह जानकारी मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने दी है।

विद्यालय वाहन परमिट विशेष कैम्प में 86 वाहनों के परमिट जारी

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी के निर्देशानुसार विद्यालय वाहनों के परमिट से सम्बन्धित कार्यों को सुगम एवं त्वरित बनाने के उद्देश्य से उप सम्भागीय परिवहन कार्यालय, प्रतापगढ़ में विद्यालय वाहन परमिट विशेष कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प में जनपद के 35 विद्यालयों के वाहनों के परमिट हेतु प्रपत्र उपलब्ध कराये गये, जिनकी विभागीय अधिकारियों द्वारा जांच की गयी। जांच के दौरान सभी प्रपत्र सही पाये गये। एआरटीओ (प्रशासन) ए0के0 शुक्ला ने बताया कि विशेष कैम्प के माध्यम से कुल 86 विद्यालय वाहनों के परमिट बनवाये गये। विशेष कैम्प में 36 वाहनों की प्रोसेसिंग फीस तथा 24 वाहनों की परमिट फीस ऑनलाइन जमा करायी गयी। शेष विद्यालय वाहनों की फीस सर्वर में आयी तकनीकी समस्या के कारण जमा नहीं हो सकी, जिसे 22 जुलाई को जमा कराया जायेगा। उन्होंने बताया कि विशेष कैम्प के आयोजन से विद्यालय प्रबन्धन को परमिट प्रक्रिया से सम्बन्धित सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध हुई और वाहनों के परमिट कार्य में तेजी आयी। परिवहन विभाग द्वारा विद्यालय वाहनों से सम्बन्धित आवश्यक प्रक्रियाओं को समयबद्ध एवं व्यवस्थित ढंग से पूरा कराने का प्रयास किया जा रहा है। विशेष कैम्प में ट्रांसपोर्ट यूनियन अध्यक्ष विजय सिंह सहित परिवहन विभाग के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

सिलाई, पार्लर और खेती से आत्मनिर्भर बनी रंजना

● एनआरएलएम से मिली नई उड़ान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। प्रदेश सरकार महिलाओं को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। सरकार की योजनाओं और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन आर एलएम) के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़कर उन्हें रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा है कि प्रदेश की महिलाएं आर्थिक रूप से मजबूत बनें और परिवार की आय बढ़ाने में सक्रिय भागीदारी निभाएं। इसी संकल्प को जनपद प्रतापगढ़ के विकासखण्ड आसपुर देवसरा के ग्राम गोदलपट्टी, पोस्ट अमरगढ़ निवासी रंजना विश्वकर्मा साकार कर रही हैं। रंजना विश्वकर्मा का विवाह शिव कुमार विश्वकर्मा के साथ हुआ है और उनके दो बच्चे हैं। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण परिवार की आवश्यकताओं की जिम्मेदारी मुख्य रूप से उनके पति पर थी। रंजना ने बीए तक शिक्षा प्राप्त की, लेकिन पारिवारिक परिस्थितियों के कारण वह नौकरी नहीं कर सकीं। घर की जिम्मेदारियों और सीमित आय के बीच उनका जीवन संघर्षपूर्ण था।

रंजना 02 फरवरी 2020 को एनआरएलएम से जुड़ीं और लक्ष्मीबाई आजीविका स्वयं सहायता समूह में सक्रिय भूमिका निभाने लगीं। वह अपने समूह में अध्यक्ष पद का दायित्व निभा रही हैं। एनआरएलएम से जुड़ने के बाद रंजना ने सिलाई एवं पार्लर का कार्य शुरू किया। इसके लिए उन्होंने समूह के माध्यम से लगभग 80 हजार रुपये का ऋण प्राप्त किया। मेहनत, लगन और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ उन्होंने अपना कार्य आगे बढ़ाया। धीरे-धीरे उनके कार्य से आमदनी होने लगी और परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आने लगा। इसके बाद उन्होंने लगभग 10 हजार रुपये की धनराशि लगाकर खेती का कार्य भी शुरू किया। वर्तमान में वह बैंगन

सहित अन्य सब्जियों की खेती कर रही हैं। परिवार के सदस्य भी उनके कार्य में सहयोग करते हैं।आज रंजना न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर रही हैं, बल्कि गांव की अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणास्रोत बन चुकी हैं। रंजना की कहानी यह संदेश देती है कि जब सरकारी योजनाओं का लाभ सही पात्र व्यक्ति तक पहुंचता है और लाभार्थी मेहनत एवं लगन के साथ आगे बढ़ता है, तो आर्थिक चुनौतियों को अवसर में बदला जा सकता है।

जनपद की सातों विधानसभाओं में आज आयोजित होंगे बूथ सम्मेलन- आशीष कुमार श्रीवास्तव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी के जिला प्रवक्ता राघवेन्द्र शुक्ल ने जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय जनता पार्टी के संगठनात्मक कार्यक्रमों के अंतर्गत आज 22 जुलाई को जनपद की सभी सातों विधानसभाओं में बूथ सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे।जिला अध्यक्ष आशीष कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि इन सम्मेलनों का उद्देश्य बूथ स्तर पर संगठन को और अधिक सशक्त एवं सक्रिय बनाना, कार्यकर्ताओं को आगामी कार्यक्रमों के प्रति जागरूक करना तथा संगठन की कार्ययोजना को प्रत्येक बूथ तक प्रभावी ढंग से पहुंचाना है। इन सम्मेलनों में बूथ अध्यक्ष,मंडल पदाधिकारी एवं पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे।जिला महामंत्री/कार्यक्रम संयोजक राजेश मिश्र ने बताया कि विश्वनाथगंज विधानसभा में कृष्णा मैरिज हाल बढ़नी,कुंडा विधानसभा में वंदना मैरिज हाल, बाबागंज विधानसभा में पीएम मैरिज हाल हीरागंज, पट्टी विधानसभा में ब्लाक सभागार बाबा बेलखरनाथ धाम,रानीगंज विधानसभा में प्रेम साधना मैरिज हाल बभनमई,रामपुर खास विधानसभा में राकेश वाटिका लालगंज एवं प्रतापगढ़ सदर विधानसभा में मौर्या रिसोर्ट चिलबिला में बूथ सम्मेलन आयोजित किए जायेंगे। जिला अध्यक्ष ने सभी पदाधिकारियों, मंडल अध्यक्षों, बूथ अध्यक्षों एवं कार्यकर्ताओं से आग्रह किया है कि वे निर्धारित समय पर अपने-अपने विधानसभा के बूथ सम्मेलन में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाएं तथा संगठन को बूथ स्तर पर और अधिक सुदृढ़ बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएं।

जिलाधिकारी ने बूढ़ी राप्ती नदी ककरही-गोहना तटबंध का निरीक्षण किया

सिद्धार्थनगर।जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन द्वारा बूढ़ी राप्ती नदी के ककरही-गोनहा तटबंध का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन द्वारा ककरही-गोनहा तटबंध का निरीक्षण किया गया। जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियन्ता सिंचाई निर्माण खण्ड सतीश कुमार को निर्देश दिया कि वर्तमान समय में भारी बरसात हो रही है। तटबन्धों पर सतत निगरानी करें। संवेदनशील स्थलों का निरीक्षण करते रहे। जिलाधिकारी द्वारा स्टोर रूम को भी देखा गया। जिलाधिकारी ने कहा कि पर्याप्त मात्रा में आवश्यक सामग्री स्टोर में उपलब्ध रहें। इसके अलावा निर्देश दिया कि जल स्तर बढ़ने पर सम्भावित बाढ़ के दृष्टिगत आवश्यक तैयारियाँ पूर्ण कर ले।

आंगनबाड़ी केन्द्र में बैठे मासूमों के पास भर भराकर गिरा छत प्लास्टर

» टूटे मेज-कुर्सी, बाल-बाल बचे मासूम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। विकास खंड बढ़नी क्षेत्र के ग्राम पंचायत घरुआर अंतर्गत टोला डढ़ऊल मे स्थित आंगनबाड़ी केंद्र प्रथम में उस वक्त अफरा-तफरी मच गई,जब आंगनबाड़ी कार्यकत्री तीन छोटे छोटे मासूम बच्चों केन्द्र के कमरे में छत के नीचे बैठ पढ़ा रही थी, तभी जर्जर छत का प्लास्टर अचानक भरभराकर गिर गया, और पास में रखा प्लास्टिक का कुर्सी, मेज टूट गया। गनीमत रही कि पास में बैठे क़ई बच्चे व कार्यकत्री अप्रिय घटना से बच गये और कोई जनहानि नही हुई है। मौके पर उपस्थित आंगनबाड़ी कार्यकत्री मीनू देवी ने बताया कि मंगलवार की सुबह करीब साढ़े आठ बजे तीन बच्चे साक्षी (5)वर्ष , रिषभ (3) वर्ष, कार्तिक (2) वर्ष उपस्थित थे, जिन्हें पढ़ाया जा रहा था तभी अचानक छत का प्लास्टर भरभराकर गिर गया और पास में रखा प्लास्टिक का कुर्सी मेज टूट गया, गनीमत रही कि हम लोग और बच्चे बाल बराबर बच गये। अब इस भवन में बैठने में भी डर लग रहा है। जबकि इस जगह पर बच्चों व गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण, राशन वितरण, और छोटे छोटे बच्चों को शिक्षा भी दिया जाता है।

लोगों का कहना है कि वर्ष 2023-24 में उक्त आंगनबाड़ी केंद्र में मरम्मत के नाम पर पंचायत निधि से मैटेरियल और मजदूरी के नाम पर लाखों रुपए का भुगतान भी किया गया है। फिर भी छत से पानी टपक रहा है और केंद्र जर्जर अवस्था में है। जो पहली बरसात में ही भ्रष्टाचार की पोल खोल दिया है। पास में ही पंचायत भवन, सामुदायिक शौचालय, जनसेवा केंद्र व प्राइमरी विद्यालय भी बना हुआ है। जहां छोटे छोटे छात्र छात्राओं सहित तमाम अन्य लोगों का भी आना जाना लगा रहता है। फिर भी भवन के आसपास बड़ी बड़ी झाड़ियां उगी हुई हैं। जहां सांप बिच्छू भी छिपे हो सकतें हैं, फिर भी

वहां की साफ सफाई व्यवस्था पर कोई ध्यान नही दिया जाता है। इस संबंध में सीडीपीओ रविन्द्र कुमार यादव का कहना है कि अब उस भवन में बच्चों को पढ़ाना उचित नही है, आंगनबाड़ी कार्यकत्री को पास में बने प्राइमरी विद्यालय में संचालन के लिए कहा जा रहा है, और उक्त संबंध में डीपीओ को भी पत्र लिखा जायेगा। खंड विकास अधिकारी अनिश मणि पांडेय ने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्र मरम्मत के लिए पंचायत सचिव को दिशा निर्देश जारी किया जायेगा और मामले की जांच कराकर दोषी के खिलाफ उचित कार्रवाई भी की जायेगी।

इटवा में सुभासपा पार्टी की बैठक, संगठन की एकजुटता और बूथ मजबूती पर जोर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। जिले के इटवा ब्लॉक सभागार में मंगलवार को सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में संगठन को बूथ एवं सेक्टर स्तर तक मजबूत बनाने तथा आगामी विधानसभा चुनाव 2027 की तैयारियों को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। पार्टी नेताओं ने कार्यकर्ताओं से संगठन की मजबूती के लिए अभी से सक्रिय होकर कार्य करने का आह्वान किया। बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि एवं सुभासपा के राष्ट्रीय सचिव विनोद राजभर ने कहा कि पार्टी नेतृत्व के निर्देशानुसार प्रत्येक बूथ पर संगठन को सशक्त बनाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि समाज के हक, अधिकार और मान-सम्मान की रक्षा के लिए सभी कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर कार्य करना होगा। उन्होंने संगठन की मजबूती को पार्टी की सफलता की सबसे बड़ी कुंजी बताते हुए कार्यकर्ताओं से गांव-गांव जाकर लोगों को पार्टी की नीतियों से जोड़ने की अपील की।

प्रदेश उपाध्यक्ष एवं चुनाव प्रभारी केशव

राजभर ने कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रदेश सरकार में पंचायती राज मंत्री ओमप्रकाश राजभर के निर्देश पर विधानसभा चुनाव 2027 को ध्यान में रखते हुए बूथ एवं सेक्टर स्तर पर संगठन का गठन तेज़ी से किया जा रहा है। उन्होंने सभी पदाधिकारियों से अपने-अपने क्षेत्रों में संगठन विस्तार अभियान को गति देने तथा अधिक से अधिक लोगों को पार्टी से जोड़ने का आह्वान किया। इस दौरान जिलाध्यक्ष दुर्योधन राजभर सहित गुलाब चन्द कनौजिया, राम नेवासा राजभर, चिंनकू राजभर, विजय राजभर, संजय राजभर, राम किशोर निषाद, अवधराम निषाद, तिलकधारी, बुधराम राजभर, चन्द्रभान पासवान, राम बहादुर, शिव पूजन, निरंजन सहित बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

बीडीओ ने बाढ़ शरणालयों का निरीक्षण किया

सिद्धार्थनगर। उसका ब्लॉक के बीडीओ ओपी सिंह ने मंगलवार को कस्बा के किसान इंटर कालेज के परिसर में स्थित बाढ़ शरणालय का निरीक्षण किया है। उन्होंने ने बाढ़ शरणालय में साफ-सफाई, पेयजल, विद्युत व्यवस्था और अन्य बुनियादी सुविधाओं को समय रहते दुरुस्त करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा की प्रशासन मानसून के मद्देनजर पूरी तरह सतर्क है और संवेदनशील इलाकों पर पैनी नजर रखी जा रही है।शरणालयों के निरीक्षण और प्रशासनिक तैयारियों जोरो पर है। इस अवसर पर कस्बा में स्थित राजकीय पशु चिकित्सालय के डॉ. एके मिश्र, प्रधानाचार्य संजय कुमार गुप्ता, ग्राम विकास अधिकारी अखिलेश यादव, विरेंद्र पाण्डेय, अनिल मिश्र आदि रहें।

भनवापुर मार्ग की हालत खस्ताहाल, राहगीरों को दिक्कत

बिस्कोहर (सिद्धार्थनगर)। ब्लॉक भनवापुर क्षेत्र के सोहना - भनवापुर मार्ग पर राहगीरों को भनवापुर तक जाने के लिए 13किलो मीटर की दूरी तय करने में एक घंटा का समय लग जाता हैं।भनवापुर ब्लाक को जाने वाला मार्ग इतना भयानक हो गया है कि सामान्य समय में चलना दुर्लभ होता हैं, जबकि बरसात के मौसम में इस मार्ग पर चलने के लिए लोगों को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है,किसी बीमार को लेकर चलना पड़े तो हालत और बिगड़ जाता हैं। सड़क इतना खस्ताहाल है। जिससे सड़क में गड्ढे बने हुए हैं मोटरसाइकिल तो दूर पैदल यात्रा करना बहुत बड़ी बात है। क्षेत्रीय लोगों ने सड़क की मरम्मत कराने की मांग की है।

अगई गौशाला में अव्यवस्था को लेकर सौंपा गया ज्ञापन

लालगंज, प्रतापगढ़। गौशाला में व्याप्त अव्यवस्थाओं व गोवंश की दुर्दशा को लेकर मंगलवार को एसडीएम को ज्ञापन सौंपकर जांच कर कार्रवाई की मांग उठाई गयी है। विकासखण्ड लालगंज अन्तर्गत अगई गौशाला में अव्यवस्थाओं एवं गोवंशों की दुर्दशा को लेकर एसडीएम वाचस्पति सिंह को सौंपे गए ज्ञापन के जरिए श्री संकटमोचन धाम सेवा संस्थान सलेम भदारी के सदस्यों ने जांच कर कार्रवाई की मांग उठाई है। संस्थान के अध्यक्ष दिनकर प्रताप सिंह व सचिव एवं अधिवक्ता नामवर सिंह के साथ एसडीएम से मिलकर ज्ञापन के जरिए कहा गया है कि अगई स्थित गौशाला परिसर में जलभराव व कीचड़ से गोवंश के चलने फिरने में कठिनाई हो रही है। गोवंश को पर्याप्त मात्रा में हरा व सूखा चारा उपलब्ध न हो पाने से वे कमजोर हो रहे हैं। वहीं साफ सफाई न होने से संक्रमण का भी खतरा बना हुआ है। पशुओं को आवश्यक चिकित्सीय सुविधाएं भी समय पर उपलब्ध नहीं करायी जा रही है। संस्थान के सदस्यों ने जनहित में जांच कराकर कार्रवाई की मांग की है। इस मौके पर पूर्व महामंत्री सूर्यकांत शुक्ल, अधिवक्ता चंद्रशेखर शुक्ल, शिवपूजन पटेल आदि मौजूद रहे। एसडीएम वाचस्पति सिंह का कहना है कि मामले की जांच कराई जाएगी, किसी प्रकार की अव्यवस्था मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

बार एवं बेंच की समन्वय बैठक में समस्याओं के निदान पर हुआ मंथन, एसडीएम ने वकीलों का मांगा सहयोग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय तहसील सभागार में मंगलवार को बार एवं बेंच की समन्वय बैठक में तहसील से जुड़ी समस्याओं पर मंथन हुआ। एसडीएम वाचस्पति सिंह की मौजूदगी में हुई बैठक मे अधिवक्ताओ ने तहसील मे जलभराव तथा साफ सफाई आदि से जुड़ी समस्याओं के स्थायी समाधान पर जोर दिया। बैठक को संबोधित करते हुए एसडीएम वाचस्पति ने कहा कि न्यायिक वातावरण को सुचारू बनाए रखते हुए जरूरतमंद की समस्या का प्राथमिकता पर निस्तारण किया जाएगा। एसडीएम न्यायिक जितेन्द्र कटियार ने अधिवक्ताओं से वादों के निस्तारण में कामकाज का माहौल बनाए रखने पर बल दिया।

तहसीलदार रवि यादव ने वकीलों द्वारा गिनायी गयी समस्याओं के निस्तारण के लिए समुचित कार्रवाई का भरोसा दिलाया। बैठक की अध्यक्षता संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष राजेशचंद्र तिवारी व संचालन पूर्व अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अबरार अहमद खान, उपाध्यक्ष नामवर सिंह, महामंत्री शिवरंजन यादव, सह मंत्री सचिन पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष

राममोहन सिंह, अनिल तिवारी महेश, देवी प्रसाद मिश्र, अजय शुक्ल गुड्डू, रामलगन यादव ने तहसील से जुडी समस्याओं पर प्रकाश डाला। बैठक में शैलेन्द्र सिंह, हरिश्चंद्र पाण्डेय, अनूप पाण्डेय, दिनेश मिश्र, सिंटू मिश्र, विनोद मिश्र, सूर्यकांत निराला ने साथी अधिवक्ताओं के साथ नवागान्तुक अधिकारियों को सम्मानित किया। इस मौके पर घनश्याम मिश्र, लाल राजेन्द्र सिंह, सुशील शुक्ला, कमाल अहमद, रोशन लाल सरोज, प्रमोद सिंह, संजय सिंह, पारसनाथ सरोज, उदयनाथ तिवारी, प्रेम मिश्र, शुभम श्रीवास्तव, भास्कर शुक्ला, जितेन्द्र तिवारी, सुमित त्रिपाठी, राजीव तिवारी, संतोष सरोज आदि अधिवक्ता रहे।

बाणगंगा का कहर: बांध कटने से हाईटेंशन पोल नदी में गिरा 500 घरों की बिजली गुल

» कटान से मकानों और बसहिया-शोहरतगढ़ मार्ग पर खतरा, ग्रामीणों में दहशत; बांध मरम्मत पर करोड़ों खर्च के दावों पर उठे सवाल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सिद्धार्थनगर। नेपाल से निकली बाणगंगा नदी में बारिश के बाद आई तेज जलधारा ने सिद्धार्थनगर के शोहरतगढ़ क्षेत्र में तबाही मचानी शुरू कर दी है। नवडीहवा गांव के पास लगातार हो रही कटान से हाईटेंशन विद्युत पोल नदी में समा गया, जिससे करीब 500 घरों की बिजली आपूर्ति ठप हो गई। वहीं कई मकानों और बसहिया-शोहरतगढ़ संपर्क मार्ग पर भी खतरा मंडराने लगा है। ग्रामीणों के अनुसार बाणगंगा नदी कई वर्षों से गांव के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में कटान कर रही है। पिछले वर्ष भी कटान की चपेट में आने से एक ग्रामीण का पक्का मकान नदी में समा गया था। इस बार मानसून की शुरुआत में ही नदी के रौद्र रूप से लोगों में दहशत फैल गई है। बिजली का खंभा गिरने की सूचना विद्युत विभाग को दे दी गई है, लेकिन आपूर्ति बहाल नहीं होने से ग्रामीण अंधेरे में रात गुजारने को मजबूर हैं। बरसात के मौसम में सांप-बिच्छू जैसे जहरीले जीवों का खतरा भी बढ़ गया है। लगातार कटान के चलते सोमराज, जोखन सहित कई परिवारों के मकानों पर संकट गहरा गया है। कुछ परिवार सुरक्षित स्थानों की ओर पलायन करने लगे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि कई बार प्रशासन और संबंधित विभागों से शिकायत करने के बावजूद अब तक स्थायी सुरक्षा कार्य नहीं कराया गया। ग्रामीणों ने आशंका जताई है कि यदि कटान नहीं रुका तो बसहिया-शोहरतगढ़ संपर्क मार्ग और पुल की सुरक्षा पर भी गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है।

करोड़ों खर्च के बावजूद कमजोर पड़े बांध

भारत-नेपाल सीमा से सटे सिद्धार्थनगर में हर वर्ष बाढ़ से बचाव के लिए सिंचाई विभाग करोड़ों रुपये खर्च करता है, लेकिन

जमीनी हालात चिंताजनक बने हुए हैं। कूड़ा नदी के केजी बांध पर पहली ही बारिश में कई स्थानों पर रेनकट और धंसान होने से ग्रामीणों में भय व्याप्त है। ग्रामीणों का आरोप है कि खड़वा चौराहे से मोहाना पुल तक बांध पर दर्जनों स्थानों पर रेनकट हो चुके हैं, जबकि विभाग कागजों में मरम्मत कार्य पूरा होने का दावा कर रहा है। लोगों का कहना है कि यदि बाढ़ के दौरान बांध टूटा तो करीब 20 गांव इसकी चपेट में आ सकते हैं। ग्रामीणों ने प्रशासन से तत्काल कटान रोकने, बांध की मरम्मत कराने और प्रभावित गांवों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है।

बरसात में जर्जर कच्चे घर में रहने को मजबूर परिवार

» आवास योजना के लाभ का इंतजार।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। केंद्र और प्रदेश सरकार गरीबों को पक्का मकान उपलब्ध कराने का दावा कर रही हैं। वहीं लालगंज विकास खंड क्षेत्र के लोहरामऊ बेमौरा महेशखेड़ा गांव में एक परिवार आज भी जर्जर कच्चे मकान में रहने को विवश है। बरसात के मौसम में परिवार हर समय हादसे की आशंका के बीच जीवन गुजार रहा है। गांव निवासी बाल गोविंद प्रजापति पत्नी और तीन बच्चों के साथ कच्चे मकान में रहते हैं। परिवार का कहना है कि बारिश शुरू होते ही छत टपकने लगती है। घर के अंदर पानी भर जाता है। दीवारें भी कमजोर हो चुकी हैं। ऐसे में मकान गिरने का डर बना रहता है। पूरी रात जागकर गुजारनी पड़ती है। छोटे बच्चों की सुरक्षा को लेकर परिवार चिंतित रहता है। ग्रामीणों का कहना है कि सरकार की आवास योजनाओं का लाभ अभी भी कई पात्र परिवारों तक नहीं पहुंच सका है। ऐसे परिवार असुरक्षित और जर्जर मकानों में रहने को मजबूर हैं। उन्होंने प्रशासन से बाल गोविंद प्रजापति के परिवार का पात्रता के आधार पर सर्वे कराने और पात्र पाए जाने पर शीघ्र आवास उपलब्ध कराने की मांग की है।

इनकी भी सुनिए

खंड विकास अधिकारी विनोद कुमार मौर्य ने बताया कि यदि योजना के तहत आवेदन किया गया होगा तो पात्रता सूची में नाम होगा। यदि किसी कारण नाम कट गया है तो संबंधित व्यक्ति दोबारा आवेदन कर सकता है। पात्रता के अनुसार नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

बिस्कोहर (सिद्धार्थनगर)। नगर पंचायत बिस्कोहर में मंगलवार को 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत वार्ड संख्या-15 स्थित विश्वनाथ नगर (डेंगहर) के कपि वन में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों एवं स्थानीय नागरिकों ने पौधे लगाकर उनके संरक्षण का संकल्प लिया। इस दौरान सभासद नृपेंद्र सिंह एवं अमित पाण्डेय, सभासद प्रतिनिधि लाल जयसवाल, अजीत मौर्य, शिवपती उपाध्याय, पिंकू मोदनवाल, राजा त्रिपाठी, वन दरोगा सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

तेज बारिश के बीच सड़क किनारे खड़ा पेड़ गिरा

» युवक की मौत; तीन घायल, एक की हालत गंभीर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उन्नाव। मंगलवार दोपहर तेज बारिश के दौरान औरास थाना क्षेत्र में एक दर्दनाक हादसे में सड़क किनारे खड़ा चिलबिल का विशाल पेड़ अचानक जड़ समेत उखड़कर सड़क पर गिर गया। पेड़ की चपेट में दो बाइकें आ गई, जिससे एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीन अन्य लोग घायल हो गए। इनमें एक युवती की हालत गंभीर होने पर उसे प्राथमिक उपचार के बाद लखनऊ रेफर किया गया। हादसे के कारण औरास-संडीला मार्ग पर लगभग एक घंटे तक यातायात बाधित रहा। पुलिस के अनुसार, गोबरा गांव निवासी सुजीत (20) अपने गांव के विशाल (14) के साथ बाइक से औरास आए थे। बाल कटवाने के बाद दोनों वापस लौट रहे थे। दोपहर करीब 2:15 बजे थाना औरास से लगभग 500 मीटर आगे संडीला मार्ग पर सड़क किनारे खड़ा चिलबिल का पेड़ अचानक जड़ समेत उखड़कर उनकी बाइक पर गिर पड़ा। हादसे में दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। इसी दौरान सीमीऊ गांव की ओर से औरास आ रही दूसरी बाइक भी पेड़ की चपेट में आ गई। बाइक चालक अंकित (24) के साथ उसका भाई अरुण और बहन रिंकी सवार थे। हादसे में अंकित और अरुण को मामूली चोटें आई, जबकि रिंकी के सिर में गंभीर चोट लगने पर उसे प्राथमिक उपचार के बाद केजीएमयू, लखनऊ रेफर कर दिया गया।

सूचना मिलते ही औरास थाना पुलिस, नगर पंचायत की टीम तथा स्थानीय लोग मौके पर पहुंच गए। पेड़ को काटकर सड़क से हटाया गया और सभी घायलों को एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र औरास भेजा गया। वहां चिकित्सकों ने सुजीत को मृत घोषित कर दिया, जबकि विशाल का उपचार जारी है। हादसे के चलते चकलवंशी-संडीला मार्ग पर करीब एक घंटे तक

यातायात प्रभावित रहा। पेड़ हटाए जाने के बाद आवागमन सामान्य कराया गया। पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। लगातार हो रही बारिश के चलते क्षेत्र में पेड़ गिरने की आशंका को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने लोगों से सावधानी बरतने की अपील की है।

डीएम ने सीएम डैशबोर्ड पर विकास एवं राजस्व कार्यों की समीक्षा की

अम्बेडकरनगर। जिलाधिकारी ईशा प्रिया की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सीएम डैशबोर्ड पर विकास कार्यों तथा सीएम डैशबोर्ड के राजस्व संबंधी बिंदुओं, कर-करेत्तर राजस्व वसूली, राजस्व न्यायालयों में लंबित वादों एवं भूमि विवादों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने वरासत, नामांतरण, खतौनी संशोधन एवं अन्य राजस्व प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सीएम डैशबोर्ड की प्रगति में सुधार के लिए नियमित अनुश्रवण एवं प्रभावी कार्रवाई करने के निर्देश दिए। राजस्व वसूली की समीक्षा करते हुए उन्होंने सभी विभागों को निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। भूमि विवादों के मामलों में आईजीआरएस पर प्राप्त शिकायतों का मौके पर सत्यापन कर राजस्व एवं पुलिस विभाग के समन्वय से गुणवत्तापूर्ण एवं स्थायी निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सार्वजनिक एवं सरकारी भूमि से अतिक्रमण हटाने, राजस्व अभिलेखों की शुद्धता बनाए रखने तथा राजस्व न्यायालयों में लंबित वादों का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने समस्त उप जिलाधिकारी को नायक तहसीलदार एवं तहसीलदार स्तर पर लंबित राजस्व वादों के निस्तारण में प्रगति सुनिश्चित करने तथा धारा 34 के प्रकरणों के निस्तारण के स्थिति की नियमित समीक्षा करने के निर्देश दिए। इस दौरान जिलाधिकारी ने सीएम डैशबोर्ड पर विकास कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि शासन के मंशानुसार सभी विकास योजना में धरातल पर कार्य सुनिश्चित करें। उन्होंने सभी पैरामीटर में नियमित गुणवत्तापूर्ण प्रगति सुनिश्चित करने तथा रैंकिंग में और सुधार लाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी आनंद कुमार शुक्ला, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व ज्योत्स्ना बंधु, अपर जिलाधिकारी न्यायिक रंजीत सिंह, समस्त उपजिलाधिकारी एवं तहसीलदार सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

एसआईआर को लेकर हिरणपुर में बीएलओ, बीएलए-2 व स्वयंसेवकों को दिया गया प्रशिक्षण

हिरणपुर, पाकुड़, झारखंडः- विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कार्यक्रम के सफल एवं सुव्यवस्थित संचालन को लेकर मंगलवार को हिरणपुर प्रखंड मुख्यालय स्थित घाघरजानी प्रखंड सभागार में बीएलओ, बीएलए-2 एवं स्वयंसेवकों (वॉलंटियर) के लिए प्रशिक्षण सह चुनावी पाठशाला का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी दिलीप टुडू ने उपस्थित बीएलओ, बीएलए-2 एवं स्वयंसेवकों को एसआईआर की प्रक्रिया, दायित्वों तथा कार्य निष्पादन की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची पुनरीक्षण का कार्य पूरी पारदर्शिता, निष्पक्षता एवं निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुरूप संपन्न किया जाए, ताकि कोई भी पात्र मतदाता सूची से वंचित न रहे। इस अवसर पर अनुमंडल पदाधिकारी ने भी उपस्थित कर्मियों को संबोधित करते हुए एसआईआर से संबंधित कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए तथा सभी से आपसी समन्वय के साथ जिम्मेदारीपूर्वक कार्य करने का आह्वान किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी बीएलओ, बीएलओ पर्यवेक्षक, बीएलए-2 एवं स्वयंसेवक उपस्थित रहे। अधिकारियों ने सभी प्रतिभागियों से निर्वाचन आयोग के निर्देशों का अक्षरशः पालन करते हुए समयबद्ध एवं त्रुटिरहित कार्य सुनिश्चित करने पर बल दिया।

ग्राम समाज की जमीन पर कब्जाः गौशाला के लिए आरक्षित भूमि पर प्रधान द्वारा गन्ना बोने का आरोप

गोला गोकर्णनाथ (खीरी): ब्लॉक बांकेगंज की ग्राम सभा भरिगवां में ग्राम समाज की बेशकीमती जमीन पर दबंगई का मामला सामने आया है। ग्रामीणों का आरोप है कि गौशाला के मवेशियों के लिए चारागाह के रूप में उपयोग होने वाली भूमि पर ग्राम प्रधान ने अपना निजी गन्ना बो लिया है। विरोध करने पर प्रधान द्वारा फर्जी मुकदमे में फंसाने की धमकी दी जा रही है। गांव के ही एक व्यक्ति द्वारा इस जमीन पर खेती की जा रही थी, जिसने बाद में इसे गौशाला के मवेशियों के चारे के लिए स्वेच्छा से छोड़ने की बात कही थी। ग्रामीणों का आरोप है कि ग्राम प्रधान डालचंद ने उक्त भूमि से चारा कटवाकर अपने निजी मवेशियों को खिला दिया और अब उस जमीन पर अवैध रूप से अपना निजी गन्ना बो लिया है। जब ग्रामीणों ने प्रधान के इस कृत्य का विरोध किया, तो उन्होंने दबंगई दिखाते हुए फर्जी मुकदमे में जेल भेजने की धमकी दी।

गया में 10 फीट जमीन के लिए छोटे भाई ने की बड़े की हत्या

बाराचट्टी (गया)। बाराचट्टी थाना क्षेत्र में महज 10 फीट जमीन के विवाद ने सोमवार की अल सुबह खूनी रूप ले लिया। छोटे भाई ने लोहे की रॉड से हमला कर अपने बड़े भाई की हत्या कर दी। घटना के बाद इलाके में सनसनी फैल गई। मृतक की पहचान रामदेव प्रसाद केसरी (40 वर्ष) के रूप में हुई है, जबकि हत्या का आरोप उनके सगे छोटे भाई गुड्डू प्रसाद केसरी पर लगा है। बताया जाता है कि दोनों भाइयों के बीच वर्षों से जमीन को लेकर विवाद चल रहा था। जानकारी के अनुसार, गुड्डू प्रसाद केसरी ने अपने हिस्से की जमीन पहले ही रामदेव प्रसाद केसरी को बेच दी थी। बाद में दिल्ली-कोलकाता राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच-19) के चौड़ीकरण के दौरान रामदेव द्वारा खरीदी गई जमीन सड़क निर्माण में चली गई। इसके बाद रामदेव अपने भाई के हिस्से में पीछे बची करीब 10 फीट जमीन, जहां गोशाला बनी हुई थी, की मांग कर रहे थे। इसी बात को लेकर सोमवार की अल सुबह दोनों भाइयों के बीच कहासुनी शुरू हुई, जो देखते ही देखते हिंसक झड़प में बदल गई।

18 करोड़ से बनेगा बक्सर का यह 4 चरूलंबा बाईपास

बक्सर। जिले के धनसोई बाजार में वर्षों से लोगों के लिए सिरदर्द बने यातायात जाम से जल्द राहत मिलने की उम्मीद है। धनसोई बाजार के पूर्वी हिस्से में प्रस्तावित बाईपास सड़क निर्माण परियोजना अब धरातल पर उतरने की ओर बढ़ गई है। सड़क निर्माण विभाग ने परियोजना के लिए टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली है। चयनित निर्माण एजेंसी को कार्य शुरू करने का निर्देश भी जारी कर दिया है। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि शेष औपचारिकताएं पूरी होते ही निर्माण कार्य प्रारंभ कर दिया जाएगा। करीब चार किलोमीटर लंबी इस बाईपास सड़क का निर्माण धनसोई बाजार के पूर्वी दिशा से किया जाएगा। परियोजना पर लगभग 18 करोड़ रुपये खर्च होंगे। जबकि भूमि अधिग्रहण के लिए अलग से राशि उपलब्ध कराई जाएगी। विभाग का लक्ष्य निर्माण कार्य और भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया को समानांतर रूप से आगे बढ़ाकर परियोजना को निर्धारित समय में पूरा करना है। सड़क निर्माण विभाग के प्रभारी कार्यपालक अभियंता विभूति चंद्र ने बताया कि टेंडर प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी हो चुकी है और निर्माण एजेंसी को कार्यादेश जारी कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि अब सबसे महत्वपूर्ण चरण भूमि अधिग्रहण का है। इसके लिए प्रस्तावित क्षेत्र का प्रारंभिक सर्वेक्षण पूरा कर लिया गया है और जल्द ही अधिग्रहण की औपचारिक प्रक्रिया शुरू होगी।

हत्या की साजिश नाकाम

आरोपी गिरफ्तार; देशी पिस्टल, मैगजीन और चार जिंदा कारतूस एक अल्टो कार बरामद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लोहरदगा, झारखंड- लोहरदगा पुलिस को मिली बड़ी कामयाबी एसडीपीओ श्रद्धा केरकेट्टा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर मंगलवार को पुलिस की बड़ी कार्रवाई की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि लोहरदगा पुलिस अधीक्षक सादिक अनवर रिजवी को गुप्त सूचना मिली थी कि नीले रंग के एक अल्टो कार में कुछ लोग अवैध हथियार लेकर सोबरनटोली जुरिया की ओर जा रहे हैं। अल्टो कार के सामने में श्रीराम लिखा हुआ था और उसमें भगवा रंग का झंडा लगा हुआ था। सूचना मिलने के बाद पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर लोहरदगा सदर थाना प्रभारी रत्नेश मोहन ठाकुर ने तत्काल पुलिस टीम का गठन कर इलाके में घेराबंदी की। पुलिस टीम संदिग्ध वाहन की तलाश में पहले से ही तैनात थी। इसी दौरान पुलिस को एक संदिग्ध ऑटो दिखाई दिया। पुलिस को देखते ही एक व्यक्ति मौके से भागने में सफल रहा। पुलिस टीम ने उसका पीछा भी किया, लेकिन आसपास की संकरी गलियों का फायदा उठाकर वह फरार हो गया। वहीं, अल्टो कार चालक ने भी वाहन को मोड़कर भागने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस की मुस्तैदी और पहले से की गई घेराबंदी के कारण अल्टो कार को रोक लिया गया। पुलिस ने नीले रंग के अल्टो कार में सवार दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान पुलिस को जानकारी मिली कि तीनों आरोपी कथित तौर पर किसी व्यक्ति की हत्या की साजिश के तहत निकले थे। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान अजय कुमार साहू (30 वर्ष), पिता जोधा साहू, निवासी प्रेमनगर, थाना लोहरदगा तथा हुसैन अंसारी, निवासी भरनो थाना क्षेत्र के रूप में हुई है। वहीं, तीसरा आरोपी संजय लोहार भरनो का ही है जो पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया, जिसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार छापेमारी कर रही है। पुलिस ने गिरफ्तार आरोपी अजय कुमार साहू की तलाशी ली, जिसके कमर से एक देशी पिस्टल और एक मैगजीन बरामद की गई। इसके अलावा उसके पास से चार जिंदा कारतूस, एक मोबाइल फोन भी बरामद किया गया। पुलिस ने घटना में प्रयुक्त अल्टो (JH 07 B 7575) को भी जब्त कर लिया है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ जारी है और पूरे मामले की गहन जांच की जा रही है। पुलिस की तत्परता से कथित हत्या की साजिश को समय रहते नाकाम कर दिया गया। पुलिस की इस कार्रवाई की जानकारी सामने आने के बाद लोहरदगा जिले वासियों लोगों ने लोहरदगा सदर थाना प्रभारी रत्नेश मोहन ठाकुर और उनकी टीम की सक्रियता की खूब सराहना की है।

SIR को लेकर लोगों से अपील, दस्तावेज समय पर जमा करें: तारिक अनवर

मंडरो, साहेबगंज, झारखंडः- बच्चा पंचायत के समाजसेवी एवं पत्रकार तारिक अनवर ने क्षेत्र के लोगों से अपील की है कि वे SIR (Special Intensive Revision) अभियान के तहत अपने सभी आवश्यक दस्तावेज समय पर जमा करें और मतदाता सूची से संबंधित सत्यापन कार्य में प्रशासन का सहयोग करें। उन्होंने कहा कि जिन लोगों का नाम मतदाता सूची में है या जिन्हें नया नाम जोड़ना, सुधार करना अथवा अन्य आवश्यक प्रक्रिया पूरी करनी है, वे निर्धारित समय सीमा के भीतर संबंधित अधिकारी से संपर्क करें और आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराएं। तारिक अनवर ने कहा कि प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम सही तरीके से मतदाता सूची में दर्ज होना लोकतंत्र को मजबूत बनाता है। उन्होंने लोगों से किसी भी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान न देने तथा केवल आधिकारिक जानकारी पर भरोसा करने की अपील की। उन्होंने विशेष रूप से युवाओं, महिलाओं एवं ग्रामीणों से अनुरोध किया कि वे अपने परिवार के सभी पात्र मतदाताओं का सत्यापन अवश्य कराएं, ताकि भविष्य में मतदान के दौरान किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

फार्मर रजिस्ट्री अभियान को मिली रफ्तार

हर गुरुवार ग्राम पंचायतों में लगेंगे विशेष शिविर : डीएम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

फिरोजाबाद। जनपद में किसानों की भूमि का एकीकृत अभिलेखीकरण एवं शासकीय योजनाओं का लाभ सुनिश्चित करने के उद्देश्य से फार्मर रजिस्ट्री अभियान को सर्वोच्च प्राथमिकता पर संचालित किया जा रहा है। जिलाधिकारी द्वारा जारी संशोधित आदेश के अनुसार शासन से प्राप्त 3,03,341 किसानों के लक्ष्य के सापेक्ष अब तक 2,56,797 (85 प्रतिशत) किसानों की फार्मर रजिस्ट्री पूरी की जा चुकी है। जिलाधिकारी ने बताया कि शासन के निर्देशानुसार भविष्य में उर्वरक, बीज, पीएम-किसान सम्मान निधि सहित विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए फार्मर रजिस्ट्री अनिवार्य होगी। शेष किसानों को अभियान से जोड़ने के लिए अब प्रत्येक गुरुवार को सुबह 7:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक ग्राम पंचायत स्तर पर ग्राम सचिवालय, जनसुविधा केंद्र (सीएससी) एवं अन्य सार्वजनिक स्थलों पर विशेष शिविर लगाए जाएंगे। तहसील सदर, टूण्डला, शिकोहाबाद, जसराना और सिरसागंज में उपजिलाधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को सुपर नोडल एवं नोडल अधिकारी नामित किया गया है। वहीं, जिन 289 गांवों में फार्मर रजिस्ट्री की प्रगति कम है, वहां विशेष टीमें लगाकर खतौनी, नाम मैपिंग एवं अंश निर्धारण का कार्य प्राथमिकता पर कराया जाएगा। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि प्रत्येक वीएलई/जनसेवा केंद्र संचालक प्रतिदिन कम से कम 60 फार्मर रजिस्ट्री तैयार करें। साथ ही शिविरों में फैमिली आईडी एवं आयुष्मान कार्ड भी बनाए जाएंगे। अभियान की निगरानी के लिए विकास भवन में नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है, जो प्रतिदिन सुबह 6:00 बजे से रात 8:00 बजे तक संचालित रहेगा। जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने दायित्वों का पूरी निष्ठा से निर्वहन करने के निर्देश देते हुए चेतावनी दी कि कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही पाए जाने पर संबंधित के विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

रिमझिम मानसूनी वर्षा से कृषकों में दिखा उल्लास

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पाकुड़िया, पाकुड़, झारखंडः- 10 जुलाई से पाकुड़िया प्रखंड के डोमनगढ़िया सहित विभिन्न ग्रामीण इलाकों की निचली भूमि में धान रोपनी प्रारंभ होने एवं मानसून की हल्की बारिश होती रहने से धान रोपनी होती देखी गई। लेकिन 20 जुलाई को रिमझिम मानसूनी वर्षा होने से प्रखंड के कृषक हर्षित दिखे। हालांकि समय पर धान के बीज तैयार होने के बावजूद भी खेतों में पर्याप्त वर्षा नहीं होने के कारण बड़े पैमाने पर धान की रोपनी नहीं हो सकी। परंतु सोमवार को अच्छी वर्षा होने से बड़े पैमाने पर किसान हर्षित होकर खेती में जुट गए हैं। 21 जुलाई को प्रखंड मुख्यालय पाकुड़िया, मोंगलाबांध, शहरपुर, ढेकीडूबा, हरिपुर, पाथरडांगा, खाकसा, रामपुर, आलूदाहा, फुलझिंझरी, गनपूरा, चौकीसाल, पारुलिया, रामदेवकुंडी, बदरीकुंड, तेतुलिया, पलासी, सोल्ला सहित सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े हर्ष व लगन से कृषकों ने धान रोपनी का कार्य प्रारंभ कर दिया है। पूछने पर किसानों ने कहा, 'यद्यपि इस वर्ष पाकुड़िया प्रखंड में धान के बीज समय पर तैयार होने के बाद भी सभी भूमि में धान रोपनी प्रारंभ नहीं हो सकी, परंतु 20 जुलाई को हुई रिमझिम बारिश से लोगों में उत्साह है और कृषक पूरी तन्मयता से अब धान रोपनी में जुटे हैं।' किसानों का मानना है कि देर से ही सही, यदि समय-समय पर वर्षा होती रही तो धान की फसल के अलावा गेहूं, सरसों सहित अन्य दलहन-तिलहन फसलें तथा विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती भी बड़े पैमाने पर अच्छी होने की संभावना है। वर्षा होती रहने से सिंचाई कूपों, पक्के चेक डेमों, तालाबों और नदियों में जल का भंडारण होगा, जिसका सदुपयोग विशेषकर कृषक अपनी फसलों की सिंचाई के लिए करेंगे। समाचार संप्रेषण करने तक पाकुड़िया के आसमान पर घने बादल छाए रहे और वर्षा भी होती रही।

मुजफ्फरपुर दंपती मर्डर केसः किरायेदार बन घर में घुसे कातिल

मुजफ्फरपुर। रामबाग चौरी में रिटायर्ड बैंककर्मी अशोक कुंवर और पत्नी की हत्या में गहरी साजिश रची गई। घटना में यह बात सामने आई है कि हत्यारे पहले अशोक कुंवर के घर में किरायेदार के रूप में प्रवेश किए। इसके बाद घटना को सुनियोजित तरीके से अंजाम दिया। घर के अंदर लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज में तीन दिन पहले किराये पर आए युवक के साथ ही अन्य बदमाश है। पहले वह अशोक कुंवर को कुछ देते हैं। वह उसे रख लेते हैं। इसके बाद बदमाश साजिश को अंजाम देना शुरू करते है। माना जा रहा है कि पहले अशोक कुंवर की गला रेतकर हत्या उनके कमरे में बेड पर ही कर दी गई। इसके बाद उनकी पत्नी को खींचकर बदमाश उस कमरे में ले जाते हैं जिसे तीन दिन पहले किराये पर लिया था। सीसीटीवी कैमरे में बेंगलुरु स्थित उनके पुत्र निखिल के मोबाइल में इसका एक्सेस होने से वह वहां से यह देखता है। मां नीलम को ऊपर घसीटते हुए ले जाने की तस्वीर देखने के बाद ही उसने पड़ोसी को फोन किया। किराये वाले कमरे में ले जाकर नीलम की भी गला रेत हत्या कर दी।

निर्माणाधीन सड़क बनी मुसीबत, सात गांवों के ग्रामीणों ने जल्द मरम्मत की उठाई मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मंडरो, साहेबगंज, झारखंडः- मंडरो प्रखंड के रानीडीह से अमझोर होते हुए झिरीकभीठा तक निर्माणाधीन सड़क की बदहाल स्थिति से क्षेत्र के लोगों की परेशानी लगातार बढ़ती जा रही है। सड़क पर जगह-जगह बने गड्ढों में बारिश का पानी भर जाने से आवागमन जोखिम भरा हो गया है और ग्रामीणों को रोजाना कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस मार्ग से अमड़ा, पत्थरघट्टा, अमझोर, आदरो, अमड़ा बेड़ो, झिरीकभीठा सहित आसपास के सात गांवों के लोग मंडरो प्रखंड मुख्यालय, बाजार तथा अन्य आवश्यक कार्यों के लिए आवागमन करते हैं। वहीं अमझोर उच्च विद्यालय के छात्र-छात्राओं को भी प्रतिदिन स्कूल आने-जाने में काफी परेशानी हो रही है। ग्रामीणों के अनुसार सबसे अधिक दिक्कत गर्भवती महिलाओं, बुजुर्गों और गंभीर रूप से बीमार मरीजों को झेलनी पड़ रही है। कई बार सड़क की खराब स्थिति के कारण मरीजों को खाट पर उठाकर रानीडीह तक लाना पड़ता है, जहां से उन्हें वाहन के माध्यम से अस्पताल पहुंचाया जाता है।

इससे समय पर इलाज मिलने में भी बाधा उत्पन्न होती है। ग्रामीणों ने बताया कि निर्माण कार्य के दौरान सड़क को समतल एवं सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक व्यवस्था नहीं की गई है। उनका कहना है कि जब तक सड़क का निर्माण पूरा नहीं हो जाता, तब तक सड़क पर जीएसबी (GSB) एवं स्टोन डस्ट बिछाकर आवागमन सुचारु रखा जाना चाहिए। ग्राम प्रधान बेटका सोरेन, सोना बेसरा, मैसा पहाड़िया, मुरिया पहाड़िया, सुरजा पहाड़िया सहित श्याम किस्कू, रंजीत सोरेन एवं अन्य ग्रामीणों ने निर्माण कार्य करा रहे ठेकेदार और संबंधित विभाग से अविलंब सड़क की मरम्मत कराने तथा आवागमन योग्य बनाने की मांग की है। ग्रामीणों ने कहा कि यदि जल्द ही सड़क की स्थिति में सुधार नहीं किया गया तो वे संबंधित विभाग के अधिकारियों को ज्ञापन सौंपने के साथ लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलन करने को विवश होंगे।

भाजपा बूथ अध्यक्ष सम्मेलन की तैयारियां पूरी, जिम्मेदारियां सौंपी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

टूण्डला। भारतीय जनता पार्टी टूण्डला विधानसभा की एक महत्वपूर्ण बैठक मंगलवार को पार्टी के जिला कैंप कार्यालय, एटा रोड, टूण्डला पर आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता भाजपा जिला अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने की। बैठक में आगामी बूथ अध्यक्ष सम्मेलन को सफल बनाने के लिए विस्तृत रणनीति तैयार की गई तथा विभिन्न पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गईं। भाजपा जिला अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने बताया कि बूथ अध्यक्ष सम्मेलन का आयोजन आज 22 जुलाई (बुधवार) को दोपहर 3:30 बजे, बेनीवाल गार्डन, फिरोजाबाद रोड, टूण्डला में किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सम्मेलन में टूण्डला विधानसभा के सभी बूथ अध्यक्षों की उपस्थिति अनिवार्य है। इसके साथ ही सेक्टर संयोजक, सेक्टर प्रभारी, वर्तमान विधायकगण, ब्लॉक प्रमुख, चेयरमैन, पूर्व विधायक, पूर्व ब्लॉक प्रमुख, पूर्व चेयरमैन, क्षेत्र एवं प्रदेश स्तर के पदाधिकारी भी सम्मेलन में शामिल होंगे। बैठक के दौरान सम्मेलन की सफलता के लिए विभिन्न व्यवस्थाओं की जिम्मेदारियां तय की गईं। रजिस्ट्रेशन काउंटर की जिम्मेदारी महिपाल सिंह निषाद, महावीर सिंह बघेल, को सौंपी गई। भोजन व्यवस्था की जिम्मेदारी दिनेश गुप्ता, संजय चक, को दी गई। कार्यक्रम स्थल की साज-सज्जा का दायित्व दीपक ठेनुआ, गिरवर निषाद, पवन चक, भवेंद्र सिंह गोलू, को सौंपा गया। मंच व्यवस्था की जिम्मेदारी शैलेंद्र सिंह, शिव शंकर शर्मा, को दी गई। डीएलपी रजिस्ट्रेशन की जिम्मेदारी गोपाल कृष्ण सिंह, प्रशांत शर्मा, देवांशु उपाध्याय, अंकित शर्मा, जुबिन भारद्वाज, को सौंपी गई। मंडलवार बूथ अध्यक्षों की जिम्मेदारी भी निर्धारित की गई। इसमें पचोखरा मंडल के लिए महावीर बघेल, पवन चक, नगला बीच मंडल के लिए दिनेश गुप्ता, विनोद कुमार बिन्नू, नारखी मंडल के लिए हनुमंत बघेल, शैलेंद्र सिंह, सियर देवी मंडल के लिए शिव शंकर शर्मा, महिपाल सिंह निषाद, तथा वैष्णो देवी मंडल के लिए संजय चक, और नगर टूण्डला मंडल के लिए नीलम दिवाकर, को जिम्मेदारी सौंपी गई। भाजपा जिला अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने सभी बूथ अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों से निर्धारित समय पर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने की अपील करते हुए कहा कि बूथ संगठन ही पार्टी की सबसे बड़ी ताकत है। सम्मेलन के माध्यम से संगठन को और अधिक मजबूत एवं सक्रिय बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण चर्चा की जाएगी। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से पूर्ण अनुशासन और समर्पण के साथ सम्मेलन को सफल बनाने का आह्वान किया।

केंद्र सरकार किसान विरोधी, सत्ता में बने रहने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है : सांसद सुखदेव भगत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लोहरदगा, झारखंड- कांग्रेस सांसद सुखदेव भगत ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए उसे किसान विरोधी करार दिया है। पंजाब में किसानों के विरोध प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि किसानों ने कृषि कानूनों के विरोध में लंबे समय तक आंदोलन किया और कई किसानों ने आत्महत्या तक की। उन्होंने कहा कि अंततः केंद्र सरकार को किसानों के सामने झुकना पड़ा और उनकी मांगों को स्वीकार करना पड़ा। सांसद सुखदेव भगत ने कहा कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। ऐसे में व्यापार समझौतों और लगाए जा रहे शुल्कों का असर किसानों पर पड़ना चिंता का विषय है। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार की नीतियां किसान हित में नहीं हैं और इससे देश के किसानों को नुकसान उठाना पड़ रहा है। केंद्र सरकार की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए कांग्रेस सांसद ने कहा कि उन्होंने हमेशा यह बात कही है कि मौजूदा सरकार समाज के विभिन्न वर्गों के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया अपना रही है और किसी भी कीमत पर सत्ता में बने रहना चाहती है। उन्होंने आरोप लगाया कि विधायकों और सांसदों को अपने पक्ष में करने के लिए लगातार राजनीतिक हथकंडे अपनाए जा रहे हैं। उन्होंने बंगाल और महाराष्ट्र का उदाहरण देते हुए कहा कि इस तरह की राजनीतिक गतिविधियां जनता के जनादेश का अपमान हैं। राम मंदिर के चंदे से जुड़े कथित गबन के मामले पर भी सुखदेव भगत ने सरकार को घेरा। उन्होंने कहा कि सरकार इस मामले में अपनी जिम्मेदारी से बचने का प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि यह केवल लोगों की भावनाओं और आस्था से जुड़ा विषय नहीं है, बल्कि इससे जुड़ी जिम्मेदारी भी तय होनी चाहिए। उन्होंने सवाल उठाया कि इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री की ओर से अब तक स्पष्ट जवाब क्यों नहीं दिया गया है।

पटना में नीट प्रकरण पर कांग्रेस का धरना, धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे मांग

पटना। नीट प्रकरण में विद्यार्थियों पर दर्ज मुकदमे वापस लेने और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर बिहार कांग्रेस ने मंगलवार को लोकभवन के सामने धरना-प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का नेतृत्व बिहार कांग्रेस अध्यक्ष राजेश राम ने किया। इस दौरान बड़ी संख्या में कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने हाथों में मांगों से संबंधित तख्तियां लेकर सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। धरने को संबोधित करते हुए राजेश राम ने कहा कि नीट परीक्षा से जुड़े विवादों ने देश के लाखों छात्रों और उनके अभिभावकों का भरोसा कमजोर किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि परीक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी के कारण छात्रों का भविष्य प्रभावित हो रहा है। कांग्रेस ने मामले में विद्यार्थियों पर दर्ज मुकदमे तत्काल वापस लेने की मांग की। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि नीट प्रकरण की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को इस्तीफा देना चाहिए। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि विद्यार्थियों के भविष्य से जुड़े इस मामले में सरकार को गंभीरता से कदम उठाना चाहिए। नेताओं ने छात्रों के हितों को प्राथमिकता देने की मांग की।

मुजफ्फरपुर में हादसाः बाइक सवार को बचाने के चक्कर में पलटा चने से भरा ट्रक

मुजफ्फरपुर। राष्ट्रीय राजमार्ग-27 पर बेनीबाद के समीप मंगलवार को एक बड़ा सड़क हादसा सामने आया। नागपुर से चना लादकर सुपौल जा रहा एक तेज रफ्तार ट्रक अचानक अनियंत्रित होकर सड़क पर पलट गया। बताया गया कि यह हादसा एक बाइक सवार को बचाने के प्रयास में हुआ। इस घटना में मोटरसाइकिल चालक गंभीर रूप से घायल हो गया है, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए एसकेएमसीएच रेफर किया गया है। मिली जानकारी के अनुसार, ट्रक (नागपुर से सुपौल जा रहा) जैसे ही बेनीबाद के पास पहुंचा, तभी अचानक एक मोटरसाइकिल उसकी चपेट में आने से बाल-बाल बची। बाइक सवार को बचाने के चक्कर में ट्रक चालक ने अचानक ब्रेक लगा दिया और स्टीयरिंग पर से नियंत्रण खो दिया। भारी लोड होने के कारण चना लदा ट्रक बीच सड़क पर ही पलट गया, जिससे हाईवे पर कुछ देर के लिए अफरा-तफरी मच गई। हादसे के तुरंत बाद स्थानीय लोगों की भीड़ जमा हो गई। ग्रामीणों की मदद से घायल बाइक सवार को तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया।

राष्ट्रीय 'कुछ बनो दिवस' पर मुकुंद साव का संदेशः सकारात्मक सोच से संवरता है जीवन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

चौपारण, हजारीबाग, झारखंडः- राष्ट्रीय 'कुछ बनो दिवस' के अवसर पर साहित्यकार एवं बरही विधानसभा क्षेत्र के भाजपा नेता मुकुंद साव ने युवाओं और विद्यार्थियों से जीवन में सकारात्मक सोच अपनाकर कुछ बनने और समाज के लिए सार्थक कार्य करने का संकल्प लेने का आह्वान किया। प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सकारात्मक सोच के साथ-साथ सकारात्मक मार्गदर्शन भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मात्र दस सेकंड में व्यक्ति अपना दृष्टिकोण बदल सकता है, किसी की पीड़ा को समझ सकता है और उसे सांत्वना देकर उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। मुकुंद साव ने कहा कि बाल विकास संबंधी अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि किसी बच्चे के जीवन में एक संवेदनशील, भरोसेमंद और सहयोगी वयस्क की उपस्थिति उसे विपरीत परिस्थितियों और मानसिक आघात से उबरने की शक्ति प्रदान करती है। ऐसे सकारात्मक सहयोग से बच्चे के जीवन की दिशा बदली जा सकती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक को बाल शोषण जैसी घटनाओं के प्रति जागरूक रहना चाहिए तथा यदि कोई बच्चा विश्वास के साथ अपनी पीड़ा साझा करे, तो उसकी सुरक्षा के लिए संबंधित अधिकारियों को इसकी सूचना देने का साहस दिखाना चाहिए। युवाओं और छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए श्री साव ने कहा कि राष्ट्रीय 'कुछ बनो दिवस' केवल एक औपचारिक दिवस नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और संकल्प का अवसर है। आज का दिन अपने भविष्य को बेहतर बनाने, समाज के प्रति जिम्मेदार बनने तथा राष्ट्र के विकास में योगदान देने का संकल्प लेने का दिन है। उन्होंने कहा कि सकारात्मक सोच, दृढ़ इच्छाशक्ति और सतत प्रयास ही व्यक्ति को सफलता के शिखर तक पहुंचाते हैं तथा समाज और देश का नाम रोशन करते हैं।

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजनाः जेएमआर रिजॉर्ट में 337 जोड़े बने जीवनसाथी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

फिरोजाबाद। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत मंगलवार को जेएमआर रिजॉर्ट, इनदूमई में आयोजित भव्य समारोह में 337 जोड़े वैवाहिक बंधन में बंधे। एक ओर वेद मंत्रों, संस्कृत श्लोकों और मंगल गीतों के बीच 274 हिंदू जोड़ों का विधि-विधान से विवाह संपन्न हुआ, वहीं दूसरी ओर पवित्र आयतों की तिलावत के साथ 63 मुस्लिम जोड़ों का निकाह कराया गया। गंगा-जमुनी तहजीब का यह अनुपम दृश्य समारोह का मुख्य आकर्षण रहा। मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन एवं जिलाधिकारी संतोष कुमार शर्मा के नेतृत्व में जिला प्रशासन ने गरीब परिवारों की बेटियों के विवाह का सम्मानपूर्वक आयोजन कराया। प्रशासन का उद्देश्य जरूरतमंद परिवारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हुए नवदंपतियों के जीवन की नई शुरुआत को यादगार बनाना रहा। योजना के तहत प्रत्येक जोड़े पर एक लाख रुपये की सहायता प्रदान की जा रही है। इसमें 64 हजार रुपये सीधे कन्या के बैंक खाते में, 21 हजार रुपये की उपहार सामग्री के रूप में दिए जाते हैं, जबकि शेष धनराशि समारोह, भोजन, टेंट एवं अन्य व्यवस्थाओं पर व्यय की जाती है। इस अवसर पर टूण्डला विधायक प्रेमपाल धनगर ने कहा कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना गरीब परिवारों के लिए वरदान साबित हो रही है। इससे बेटियों के विवाह की चिंता कम हुई है और सरकार गरीब परिवारों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए लगातार कार्य कर रही है। मुख्य विकास अधिकारी शत्रोहन वैश्य ने सभी 337 नवदंपतियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके सुखद एवं समृद्ध दांपत्य जीवन की कामना की। समारोह में विभिन्न विद्यालयों की छात्राओं ने आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर कार्यक्रम को और भी भव्य बना दिया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (नमामि गंगे) मोहनलाल गुप्ता, परियोजना निदेशक सुभाष चंद्र त्रिपाठी, उपनिदेशक कृषि सत्येंद्र सिंह, डीसी मनरेगा तूलिका श्रीवास्तव, बीएसए अनिल कुमार, खंड विकास अधिकारी नवीन कुमार सहित अनेक प्रशासनिक अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

जिला जज ने तीन जेलों का किया औचक निरीक्षण

लुधियाना। डिस्ट्रिक्ट एंड सेशंस जज एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए) की चेयरपर्सन हरप्रीत कौर रंधावा ने बुधवार को लुधियाना की सेंट्रल जेल, महिला जेल और बोरस्टल जेल का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने जेल अधीक्षकों की मौजूदगी में कैदियों और बंदियों से बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनीं। इसके बाद जेल अधिकारियों को निर्देश दिए कि कैदियों की जायज शिकायतों का शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जाए और आवश्यक कार्रवाई की जाए। जिला जज ने कैदियों को निःशुल्क कानूनी सहायता के अधिकार की जानकारी भी दी। उन्होंने बताया कि जो कैदी निजी वकील रखने में सक्षम नहीं हैं, वे जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, लुधियाना के माध्यम से मुफ्त कानूनी सहायता प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कैदियों को जेल में संचालित लीगल एड क्लिनिक से संपर्क कर आवेदन पत्र भरने की प्रक्रिया भी समझाई। निरीक्षण के दौरान मिली कुछ कमियों को दूर करने के लिए जेल अधीक्षकों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए। साथ ही सुधारात्मक कार्रवाई पूरी होने के बाद उसकी रिपोर्ट जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को भेजने के निर्देश भी दिए गए। इस अवसर पर चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट पवलीन सिंह भी उपस्थित रहीं।

शंभू बॉर्डर पर शुरू हुई वाहनों की आवाजाही, एक रास्ता खोला गया

पटियाला। भारत-अमेरिका ट्रेड डील के विरोध में किसानों की ओर से आज शंभू बॉर्डर के रास्ते दिल्ली के किसान घाट जाने का एलान किया गया था। लगभग 13 घंटे तक किसान शंभू बॉर्डर पर रुके रहे। हरियाणा पुलिस की ओर से किसानों को रोकने के लिए शंभू बॉर्डर पर सीमेंट और लोहे के बैरिकेड लगाकर रास्ता बंद किया गया था, जिसके कारण आम जनता को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। आज शाम 5:30 बजे के करीब हरियाणा पुलिस की तरफ से हरियाणा से पंजाब आने वाली एक साइड को खोल दिया गया है, जबकि पंजाब से हरियाणा जाने वाली दूसरी साइड के ऊपर से सीमेंट के बैरिकेड हटाए जा रहे हैं।

गोला उपजिलाधिकारी ने बाढ प्रभावित क्षेत्रो का दौरा किया

गोला गोकर्णनाथ खीरी। तहसील गोला क्षेत्र में बाढ़ की तैयारियों के क्रम में पूजा गाँव असाढ़ी सहित लगभग आधा दर्जन से अधिक बाढ़ व राहत केंद्र तथा पूर्व में कटान प्रभावित रहा ग्राम करसौर का निरीक्षण किया, वही ग्राम बजेड़ा के तटबंध का निरीक्षण कर वहां लगे बाढ कर्मचारियो को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये है,और कहा कि बाढ पीडितो के लिये तहसील प्रसासन हर समय उनके साथ खडा है, वर्तमान मे बाढ़खण्ड विभाग के द्वारा सुधार का कार्य कराया जा भी जा रहा है।

गन्ने के खेत में मिले मानव कंकाल की गुत्थी बरकरार, मौत बाघ के हमले से या कुछ और?

लखीमपुर खीरी। दक्षिणी खीरी वन प्रभाग की महेशपुर रेंज के ग्राम झाऊपुर में किसान जयप्रकाश शर्मा के गन्ने के खेत में मिले मानव कंकाल के मामले में मौत का कारण अभी भी रहस्य बना हुआ है। पुलिस और वन विभाग की जांच के बाद भी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि युवक की मौत बाघ के हमले से हुई या किसी अन्य कारण से।गौरतलब है कि बीते शनिवार 18 जुलाई को खेत में मानव कंकाल मिला था। जिसकी पहचान तुलमेलगंज निवासी 35 वर्षीय अनिल कुमार पुत्र जुगुल किशोर के रूप में हुई थी। प्रथम दृष्टया इसे बाघ के हमले से हुई मौत माना जा रहा था। घटना के बाद क्षेत्र में बाघ की दहशत का माहौल है। किसान समूह बनाकर ही खेतों की ओर जा रहे हैं। मामले को गंभीरता से लेते हुए डीएफओ तपस मिहिर ने रविवार देर रात करीब 9 बजे स्वयं मौके पर पहुंचकर ड्रोन कैमरे से पूरे क्षेत्र की कॉम्बिंग कराई, लेकिन बाघ की कहीं भी लोकेशन नहीं मिली।रेंजर निर्भय प्रताप शाही ने बताया कि वन दरोगा रोहित श्रीवास्तव, डिप्टी रेंजर नरेशपाल गौतम, अखिलेश सिंह, पंकज सिंह, विजय सिंह, मित्रपाल तोमर, प्रज्वल व वाचर छत्रपाल सिंह सहित तमाम बीट वाचरों की टीम लगातार गश्त कर रही है। वन दरोगा रोहित श्रीवास्तव ने बताया कि ट्रैप कैमरों में अभी तक बाघ की तस्वीर कैद नहीं हुई है, हालांकि आसपास के खेतों में बाघ के पगमार्क मिले हैं।वन विभाग की टीम ने आसपास के गांवों में दर्जनों पंपलेट चस्पा कर लोगों को जागरूक करना शुरू कर दिया है। वन कर्मियों द्वारा ग्रामीणों के साथ बैठक कर अपील की जा रही है कि अफवाहों पर ध्यान न दें, सतर्क रहें और अकेले खेतों की ओर न जाएं।

जारी किया फेक न्यूज अलर्ट

'संसद चलो मार्च' के आरोपो को दिल्ली पुलिस ने नकारा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने मंगलवार को कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के मुख्य प्रवक्ता के उस आरोप को पूरी तरह खारिज कर दिया जिसमें दावा किया गया था कि सुरक्षा बलों ने 'चलो संसद' मार्च के दौरान प्रदर्शनकारियों पर पेलेट गन चलाई। पुलिस ने इसे 'पूरी तरह गलत और भ्रामक' बताया। सीजेपी के प्रवक्ता सौरव दास ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर एक वीडियो शेयर करते हुए आरोप लगाया था कि पुलिस ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर पेलेट गन से फायरिंग की। पोस्ट में एक अस्पताल में घायल व्यक्ति का वीडियो भी था, जिसमें दावा किया गया कि उसे प्रदर्शन के दौरान पेलेट लगने से चोटें आई हैं। इस आरोप का जवाब देते हुए दिल्ली पुलिस ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर 'फेक

न्यूज अलर्ट' जारी किया। पुलिस ने कहा, 'पुलिस बलों द्वारा शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर पेलेट गन का इस्तेमाल किए जाने की खबरें पूरी तरह गलत और भ्रामक हैं।' पुलिस ने लोगों से अपील की कि वे बिना सत्यापित सामग्री को शेयर या प्रसारित न करें। साथ ही सलाह दी कि सोशल मीडिया पर कोई भी जानकारी पोस्ट या फॉरवर्ड करने से पहले केवल आधिकारिक स्रोतों से ही तथ्यों की पुष्टि करें। पुलिस ने चेतावनी देते हुए कहा, 'अफवाहें फैलाने या गलत जानकारी प्रसारित करने वाले व्यक्तियों के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई की जाएगी।' बता दें कि सोमवार को 'चलो संसद' प्रदर्शन के दौरान राजधानी में हुई झड़प में कम से कम 60 प्रदर्शनकारी और 118 पुलिसकर्मी घायल हुए थे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली में भाजपा लुधियाना के सैकड़ों कार्यकर्ता हुए शामिल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लुधियाना- भारतीय जनता पार्टी लुधियाना के जिला अध्यक्ष रजनीश धीमान के नेतृत्व में भाजपा लुधियाना के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की विशाल जनसभा/रैली में उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यकर्ताओं में प्रधानमंत्री के संबोधन को लेकर भारी उत्साह देखने को मिला और उन्होंने पूरे जोश के साथ भाजपा के पक्ष में नारे लगाए। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष रजनीश धीमान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास, सुशासन और जनकल्याण की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की जनहितैषी नीतियों और मजबूत नेतृत्व के कारण देशभर में भाजपा के प्रति लोगों का विश्वास लगातार बढ़ रहा है। धीमान ने कहा कि रैली में उमड़ा जनसैलाब इस बात का प्रमाण है कि देश की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अपना अटूट विश्वास व्यक्त कर रही है। उन्होंने कहा कि पंजाब सहित पूरे देश में भाजपा का जनाधार तेजी से बढ़ रहा है और आने वाले समय में पार्टी और अधिक मजबूती के साथ जनता की सेवा करेगी। उन्होंने रैली में

शामिल होने वाले सभी भाजपा पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सभी ने अनुशासन और समर्पण के साथ पार्टी की ताकत का परिचय दिया। उन्होंने विश्वास जताया कि कार्यकर्ताओं के इसी उत्साह और मेहनत के बल पर भाजपा भविष्य में और अधिक मजबूत होकर जनता की अपेक्षाओं पर खरी उतरेगी।इस मौके पर भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष जतिंदर मित्तल,महामंत्री अनिल सरीन, कोषाध्यक्ष गुरदेव शर्मा देबी,पूर्व जिला अध्यक्ष परवीन बंसल, पुष्पेंद्र सिंगल, जिला महामंत्री सरदार नरेंद्र सिंह मल्ली, डाक्टर कनिका जिंदल,यशपाल जनोत्रा, भाजपा के सीनियर नेता,भाजपा के जिला पदाधिकारी, पार्षद, सर्कलों प्रधान, महामंत्री, सभी मोर्चों के अध्यक्ष अपनी टीमों के साथ देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी को सुनने पहुंचे।

जालंधर पहुंचे हरियाणा के CM नायब सैनी

जालंधर। नूरमहल स्थित दिव्य ज्योति जागृति संस्थान के आश्रम में पहुंचे हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने संस्था द्वारा धर्म तथा आध्यात्मिकता के प्रचार के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों पर किए जा रहे कार्यों की सराहना की। सोमवार को आश्रम पहुंचे नायब सिंह सैनी ने संस्थान द्वारा संचालित कामधेनु गौशाला, जैविक कृषि व आयुर्वेदिक उत्पादों से संबंधित गतिविधियों की विस्तृत विस्तृत जानकारी हासिल की। उन्होंने कहा कि इन प्रकल्पों के माध्यम से समाज, पर्यावरण तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। दिव्य ज्योति जागृति संस्थान के संस्थापक आशुतोष महाराज के शिष्य स्वामी परमानंद, स्वामी विश्वानंद, स्वामी गिरिधरानंद, स्वामी उमेश आनंद तथा स्वामी गुरु कृपानंद ने नायब सिंह सैनी को बताया कि संस्था द्वारा दृष्टि प्रकल्प के तहत नेत्रहीनों को रोजगार देने का प्रयास किया जा रहा है। वहीं विभिन्न नस्लों खास की गायों के संरक्षण के लिए संस्थान द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। संस्थान की तरफ से नायब सिंह सैनी को सम्मानित भी किया गया।

बुद्ध, कबीर व आंबेडकर के विचार जन-जन तक पहुंचाएं : प्रो. सुमन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली/बहादुरगढ़। डॉ. भीमराव आंबेडकर फेडरेशन ऑफ सोशल जस्टिस पंजीकृत के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. हंसराज सुमन का हरियाणा के बहादुरगढ़ स्थित ओमैक्स सिटी में फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. फौजी इंडिया ने बहुजन समाज के महानायकों से संबंधित चार पुस्तकों का सेट भेंटकर स्वागत किया। इस अवसर पर कैप्टन अभिषेक, कर्नल ईशान, बलवान सिंह रेढू, अनिल कुमार रेढू, जय भगवान और राजू सहित अन्य लोग मौजूद रहे। डॉ. फौजी इंडिया ने कहा कि उनके कार्यालय में आने वाले प्रत्येक बुद्धिजीवी और आंबेडकरवादी का पुस्तकों का सेट भेंटकर स्वागत किया जाता है। उनका उद्देश्य केवल पुस्तकें उपहार देना नहीं, बल्कि पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि इन पुस्तकों को शोकेस या पुस्तकालय की शोभा बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि स्वयं पढ़ने और दूसरों को पढ़ने के लिए देने की आवश्यकता है, ताकि युवा पीढ़ी बहुजन महापुरुषों के संघर्ष, विचारों और सिद्धांतों से प्रेरणा लेकर उन्हें अपने जीवन में उतार सके।उन्होंने बताया कि ओमैक्स सिटी में बहुजन समाज के बुद्धिजीवियों का एक ऐसा मंच तैयार किया गया है, जो जरूरतमंद और गरीब बच्चों की शिक्षा तथा आर्थिक सहायता के लिए निरंतर कार्य करता है।डॉ. फौजी इंडिया ने प्रो. सुमन को 'भारत का संविधान', 'बहुजनों के महानायक एवं समाज सुधारक', 'जाने इतिहास : बाबा साहेब का जीवन संघर्ष' तथा 'बुद्ध धम्म ज्ञान प्रश्नोत्तरी' पुस्तकें भेंट कीं। उन्होंने कहा कि उन्हें अच्छी पुस्तकें पढ़ने का विशेष शौक है और वे ऐसी पुस्तकें चुनकर लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं, जिनसे युवाओं में सकारात्मक सोच विकसित हो। पुस्तकों का अवलोकन करते हुए प्रो. हंसराज सुमन ने कहा कि 'बहुजनों के महानायक एवं समाज सुधारक' पुस्तक में सम्राट अशोक, संत कबीर, संत रविदास, गुरु घासीदास, महात्मा ज्योतिराव फुले, सावित्रीबाई फुले, झलकारी बाई, डॉ. भीमराव आंबेडकर, माता रमाबाई, शहीद भगत सिंह, शहीद ऊधम सिंह, बिरसा मुंडा, मान्यवर कांशीराम सहित अनेक महापुरुषों के जीवन, संघर्ष और समाजहित में किए गए कार्यों का उल्लेख किया गया है। उन्होंने 'भारत का संविधान' पुस्तक का उल्लेख करते हुए बताया कि संविधान सभा की पहली बैठक, प्रारूप समिति के गठन, संविधान निर्माण की प्रक्रिया तथा इसे तैयार करने में लगे दो वर्ष, 11 माह और 18 दिन की विस्तृत जानकारी पुस्तक में दी गई है। उन्होंने कहा कि 26 जनवरी 1950 से लागू हुआ भारतीय संविधान विश्व के सबसे महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक दस्तावेजों में से एक है।जाने इतिहास : बाबा साहेब का जीवन संघर्ष' पुस्तक के बारे में प्रो. सुमन ने कहा कि इसमें डॉ. भीमराव आंबेडकर के संघर्ष, विचारों और सामाजिक योगदान को सरल एवं संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। वहीं 'बुद्ध धम्म

ज्ञान प्रश्नोत्तरी' पुस्तक में भगवान बुद्ध, भारतीय संविधान और बहुजन महापुरुषों से जुड़े प्रश्नोत्तर एवं सामान्य ज्ञान को रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक विशेष रूप से युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और अंधविश्वास से दूर रहने की प्रेरणा देती है।प्रो. हंसराज सुमन ने कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर फेडरेशन ऑफ सोशल जस्टिस का मुख्य उद्देश्य भगवान बुद्ध, संत कबीर और बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के विचारों को जन-जन तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि देश के इतिहास में बहुजन समाज के अनेक महापुरुषों के योगदान को पर्याप्त स्थान नहीं मिला। झलकारी बाई, मातादीन वाल्मीकि, संत गाडगे महाराज, अवंतीबाई लोधी, अहिल्याबाई होल्कर, बिरसा मुंडा और अन्य अनेक विभूतियों के योगदान को नई पीढ़ी तक पहुंचाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि बहुजन समाज के इतिहासकारों और साहित्यकारों द्वारा लिखे गए साहित्य के माध्यम से समाज का वास्तविक इतिहास अब धीरे-धीरे लोगों तक पहुंच रहा है।

यूरिया की जमाखोरी रोकने को टास्क फोर्स सक्रिय

कपूरथला। कपूरथला जिला प्रशासन ने कृषि ग्रेड यूरिया के गैर-कृषि उपयोग, जमाखोरी और कालाबाजारी पर रोक लगाने के लिए कार्रवाई तेज कर दी है। इसके लिए जिला स्तर पर विशेष टास्क फोर्स सक्रिय कर दी गई है, जबकि जल्द ही ब्लॉक स्तर पर भी ऐसी टीमें गठित की जाएंगी। डिप्टी कमिश्नर आकाश बंसल ने बताया कि कृषि ग्रेड यूरिया का दुरुपयोग रोकना प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने किसानों से अपील की कि इस संबंध में किसी भी जानकारी या शिकायत के लिए जिला प्रशासन के हेल्पलाइन नंबर 01822-233777 पर संपर्क करें। मुख्य कृषि अधिकारी डॉ. जसविंदर सिंह ने बताया कि सरकार के निर्देशों के अनुसार उर्वरक एवं कृषि आदान विक्रेताओं की नियमित जांच की जा रही है। अब तक जिला स्तरीय विशेष टास्क फोर्स ने 8 स्थानों पर निरीक्षण किया है। जांच के दौरान नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर एक आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। उन्होंने उर्वरक विक्रेताओं को निर्देश दिए कि कृषि ग्रेड यूरिया की बिक्री केवल निर्धारित नियमों के तहत ही करें।

उद्योगों की समस्याओं पर डीसी संग बैठक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लुधियाना। जिला उद्योग केंद्र (डीआईसी) के महाप्रबंधक सुखविंदर सिंह रेखी ने डिप्टी कमिश्नर हिमांशु जैन के साथ औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों की बैठक कर उद्योगों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं और विकास कार्यों पर विस्तार से चर्चा की। बैठक में नगर निगम से संबंधित समस्याएं, राष्ट्रीय राजमार्ग की सर्विस लेनों की जर्जर स्थिति, ढंडारी रेलवे स्टेशन पर बढ़ते यातायात को देखते हुए ओवरब्रिज के निर्माण की आवश्यकता तथा ग्यासपुरा रेलवे फाटक के बार-बार बंद रहने से लगने वाले ट्रैफिक जाम जैसे मुद्दे प्रमुखता से उठाए गए। उद्योग प्रतिनिधियों ने बताया कि इन समस्याओं के कारण कच्चे माल की आपूर्ति और तैयार उत्पादों के परिवहन में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा उद्योगों को भुगतान में हो रही देरी, बुनियादी ढांचे की कमियों और अन्य प्रशासनिक समस्याओं से भी डिप्टी कमिश्नर

को अवगत कराया गया। डिप्टी कमिश्नर हिमांशु जैन ने सभी मुद्दों को गंभीरता से सुनते हुए आश्वासन दिया कि संबंधित विभागों के साथ समन्वय कर इनके शीघ्र समाधान के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने यह भी बताया कि अगले सप्ताह वह औद्योगिक क्षेत्र का दौरा करेंगे, जहां मौके पर समस्याओं का निरीक्षण कर संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश जारी किए जाएंगे। बैठक में फिको (स्नढ्ढष्टह्र) के गुरमीत सिंह कुलार तथा ढंडारी इंडस्ट्रियल वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष सतनाम सिंह मक्कड़ सहित अन्य उद्योग प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

जंतर-मंतर लाठीचार्ज पर चंडीगढ़ कांग्रेस में रोष, सेक्टर-17 में प्रदर्शन

चंडीगढ़। दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रहे छात्रों के साथ दुर्व्यवहार और लाठीचार्ज के विरोध में कांग्रेस मंगलवार शाम चंडीगढ़ में जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। सेक्टर-17 स्थित नीलम सिनेमा प्लाजा में एकत्र होकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री का पुतला फूंका तथा केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। प्रदर्शन में पार्टी के वरिष्ठ नेता, पदाधिकारी, युवा कांग्रेस, एनएसयूआई तथा अन्य प्रकोष्ठों के कार्यकर्ता शामिल हुए। कांग्रेस नेताओं का आरोप है कि दिल्ली के जंतर-मंतर पर शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे छात्र के साथ दुर्व्यवहार किया गया और उन पर लाठीचार्ज किया गया, जो लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन है। पार्टी का कहना है कि लोकतंत्र में शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन प्रत्येक नागरिक का संवैधानिक अधिकार है और उसे बल प्रयोग के जरिए दबाने का प्रयास स्वीकार नहीं किया जाएगा। पार्टी ने कहा कि यदि लोकतांत्रिक आंदोलनों पर इसी तरह कार्रवाई होती रही तो कांग्रेस देशभर में विरोध प्रदर्शन तेज करेगी।

दिल्ली में दर्दनाक हादसा

लोधी कॉलोनी के घर में लगी आग, एक ही परिवार के 3 लोगों की मौत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली की लोधी कॉलोनी मंगलवार सुबह उस वक्त हड़कंप मच गया जब एक घर में आग लगने से तीन लोगों की झुलस कर मौत हो गई।

लोधी कॉलोनी में आग कैसे लगी और हादसा कब हुआ?

जानकारी के अनुसार लोधी कॉलीनी के बी ब्लॉक में सुबह 10.22 बजे एक घर की तीसरी मंजिल पर आग लग गई है। आग इतनी तेज थी कि घरवालों को निकलने का मौका नहीं मिला और घर में मौजूद महिला और दो बच्चों की जलकर मौत हो गई। मरने वालों में एक महिला और उसकी दो बेटियां हैं। घटना की सूचना मिलते ही दमकलकर्मी वहां पहुंचे और आग बुझाने के साथ ही रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। हालांकि दमकलकर्मी घर में मौजूद तीन लोगों को बचा नहीं सके। उन्होंने दरवाजा तोड़कर शवों को निकाला। फिलहाल कूलिंग ऑपरेशन जारी है।

हादसे में इनकी गई जान

आकांक्षा 41 वर्ष (मां)
आराध्या 14 वर्ष
माही 9 वर्ष

मेयर ने हैबोवाल में किया औचक निरीक्षण

सफाई व्यवस्था परखी, कर्मचारियों की उपस्थिति जांची; खुले में कचरा फेंकने वालों पर होगी कार्रवाई

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लुधियाना। 'मिशन क्लीन पंजाब' के तहत मेयर प्रिंसिपल इंदरजीत कौर ने लगातार दूसरे दिन सोमवार को हैबोवाल क्षेत्र के विभिन्न इलाकों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने सफाई व्यवस्था का जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान मेयर ने सफाई कर्मचारियों की उपस्थिति की जांच की और क्षेत्र में स्वच्छता व्यवस्था का मौके पर आकलन किया। साथ ही पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पौधारोपण भी किया गया तथा लोगों से अपने आसपास अधिक से अधिक पौधे लगाने की अपील की गई। मेयर इंदरजीत कौर ने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान और स्थानीय निकाय मंत्री हरजोत सिंह बैंस के नेतृत्व में 'मिशन क्लीन पंजाब' प्रभावी ढंग से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि शहर को पूरी तरह स्वच्छ बनाने के लिए आम जनता का सहयोग भी आवश्यक है। उन्होंने नागरिकों से खुले में कचरा न फेंकने की अपील करते हुए बताया कि नगर निगम जल्द ही विशेष अभियान चलाएगा, जिसके तहत नियमों का उल्लंघन करने वालों के चालान किए जाएंगे। मेयर ने अधिकारियों और कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सफाई व्यवस्था में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। यदि जमीनी स्तर पर कोई कमी पाई गई तो संबंधित कर्मियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने लोगों से अपील की कि आसपास कहीं भी खुले में कचरा दिखाई देने पर नगर निगम के मानसून हेल्पलाइन नंबर 90867-91867 पर शिकायत दर्ज कराएं। निरीक्षण के दौरान जोनल कमिश्नर जसदेव सेखों, पार्षद गोलू बाजवा, हेल्थ ऑफिसर डॉ. विपल मल्होत्रा, एलए गौरव बग्गा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सिमेन छापरी में स्मार्टपुर परियोजना की वार्षिक प्रदर्शनी एवं क्षमता विकास कार्यशाला का सफ़ल समापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

असम धेमाजी। धेमाजी जिले के कृषि विज्ञान केंद्र सिमेन छापरी में सोमवार को REACHA के तत्वावधान तथा Nokia के सहयोग से 'Smartpur Impact & Insights: Annual Showcasing and Capacity Building Workshop' विषय पर वार्षिक प्रदर्शनी एवं क्षमता विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य स्मार्टपुर परियोजना के तहत गत एक वर्ष में हुए कार्यों, उपलब्धियों और अनुभवों की समीक्षा करना तथा आगामी कार्ययोजना पर विचार-विमर्श करना था। इस दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता, कौशल विकास और प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं को अधिक प्रभावी ढंग से आम लोगों तक पहुंचाने पर विशेष बल दिया गया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख ड. गुंजन गोगोई, पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विभाग के डॉ. घनकांत दले, RSETI के घनकांत बसुमतारी, REACHA के सौरभ शाह, मेदिनी ताशा एवं नबा कामन, IIE के धेमाजी

जिला समन्वयक विजय दत्त, DCPU के प्रभारी जिला बाल संरक्षण अधिकारी (DCPO) भुवन ताये, उप-विभागीय मत्स्य विकास अधिकारी जयंत मिली तथा REACHA के धर्मराज कार्की सहित स्मार्टपुर परियोजना के सभी कर्मचारी और विभिन्न केंद्रों की प्रबंधन समितियों के सदस्य उपस्थित रहे। कार्यशाला में वक्ताओं ने कहा कि डिजिटल तकनीक के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को शिक्षा, रोजगार, सरकारी सेवाओं और स्वरोजगार के अवसरों से जोड़ना स्मार्टपुर परियोजना का मुख्य उद्देश्य है। प्रतिभागियों ने परियोजना के सफल क्रियान्वयन के लिए अपने अनुभव साझा किए तथा भविष्य में इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव भी दिए।

शिमला के युवक की चंडीगढ़ में मौत

चंडीगढ़। शिमला से दोस्तों संग गाड़ियों का सामान खरीदने चंडीगढ़ आए एक युवक की मौत हो गई है। वह होटल में बेसुध मिला। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। प्राथमिक जांच में पुलिस को मृतक के शरीर पर किसी प्रकार के चोट के निशान नहीं मिले हैं। मौत के सही कारणों का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही चल सकेगा। शिमला के राझाना का संदीप धीमान अपने तीन दोस्तों के साथ मनीमाजरा में गाड़ियों की सर्विस का सामान खरीदने के लिए चंडीगढ़ आया था। चारों ने सोमवार रात करीब 11:30 बजे गांव दड़वा स्थित एक होटल में एक कमरा बुक कराया और वहीं ठहरे। मंगलवार सुबह संदीप के तीनों दोस्त तैयार होकर नहा चुके थे। इसके बाद उन्होंने संदीप को जगाने का प्रयास किया, लेकिन वह कमरे में बेसुध पड़ा मिला। स्थिति गंभीर देख साथियों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही इंडस्ट्रियल एरिया थाना पुलिस मौके पर पहुंची और संदीप को तत्काल सेक्टर-32 स्थित सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

10,000 रुपये की रिश्वत लेते सहायक उप-निरीक्षक को रंगे हाथ गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

चंडीगढ- पंजाब विजिलेंस ब्यूरो ने राज्य में भ्रष्टाचार के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के दौरान कूमकलां, थाना लुधियाना में तैनात सहायक उप-निरीक्षक (एएसआई) जगजीवन सिंह को 10,000 रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ काबू किया है। आज यहां यह जानकारी देते हुए राज्य विजिलेंस ब्यूरो के प्रवक्ता ने बताया कि आरोपी पुलिस अधिकारी को भ्रष्टाचार विरोधी एक्शन लाइन पोर्टल पर सुरजीत कॉलोनी, राहों रोड, लुधियाना निवासी एक व्यक्ति द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के आधार पर गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि शिकायतकर्ता के रिश्तेदार के विरुद्ध थाना कूमकलां, लुधियाना में एक मामला दर्ज था। एएसआई जगजीवन सिंह इस मामले का जांच अधिकारी था। जब शिकायतकर्ता उक्त मामले के संबंध में

आरोपी अधिकारी से मिला तो उसने शिकायतकर्ता के रिश्तेदार को जमानत दिलाने में मदद करने के बदले 10,000 रुपये की रिश्वत मांगी और प्राप्त की। इसके बाद आरोपी एएसआई ने शिकायतकर्ता को दोबारा बुलाकर 10,000 रुपये की अतिरिक्त रिश्वत की मांग की। शिकायतकर्ता ने रिश्वत मांगने संबंधी पूरी बातचीत रिकॉर्ड कर ली थी। रिश्वत या किसी अन्य गैर-कानूनी तरीके का सहारा न लेने का निर्णय करते हुए शिकायतकर्ता ने विजिलेंस ब्यूरो रेंज, लुधियाना से संपर्क किया। शिकायत पर कार्रवाई करते हुए विजिलेंस ब्यूरो की टीम ने दो सरकारी गवाहों की मौजूदगी में आरोपी सहायक उप-निरीक्षक जगजीवन सिंह को शिकायतकर्ता से 10,000 रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। इस संबंध में विजिलेंस ब्यूरो थाना, लुधियाना में आरोपी के विरुद्ध भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है। मामले की आगे की जांच जारी है।

पंजाब में फीस वृद्धि पर 5% की कैपिंग से भड़के निजी स्कूल

चंडीगढ़। पंजाब सरकार की ओर से निजी स्कूलों की वार्षिक फीस वृद्धि को पांच प्रतिशत तक सीमित करने और पिछले तीन वर्षों में निर्धारित सीमा से अधिक वसूली गई फीस लौटाने के आदेश का निजी स्कूल संगठनों ने विरोध किया है। स्कूल संचालकों ने सरकार से इस फैसले पर पुनर्विचार करने और सभी पक्षों के साथ बातचीत कर समाधान निकालने की मांग की है। मंगलवार को नेशनल इंडिपेंडेंट स्कूल्स अलायंस (निसा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुलभूषण शर्मा और रिकाग्नाइज्ड एफिलिएटेड स्कूल्स एसोसिएशन (रासा) पंजाब के चेयरमैन हरपाल सिंह यूके ने कहा कि सरकार का यह फैसला निजी स्कूलों की आर्थिक व्यवस्था पर प्रतिकूल असर डालेगा। उनका कहना था कि शिक्षा क्षेत्र लगातार बढ़ती महंगाई, कर्मचारियों के वेतन, बिजली, परिवहन और अन्य संचालन खर्चों का सामना कर रहा है। ऐसे में फीस वृद्धि पर पांच प्रतिशत की सीमा तय करना व्यावहारिक नहीं है। स्कूल प्रतिनिधियों ने कहा कि यदि सरकार पिछले तीन वर्षों में ली गई अतिरिक्त फीस लौटाने का प्रावधान लागू करती है तो कई स्कूल गंभीर वित्तीय संकट में आ सकते हैं।

इफको में नैनो उर्वरकों के प्रयोग संबंधी तीन दिवसीय कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राज्य के गोरखपुर ,कुशीनगर ,आजमगढ़, देवरिया, बलिया , मऊ और महाराजगंज जनपदों के कुल 58 कृषकों का इफको नैनो उर्वरकों (नैनो यूरिया प्लस, नैनो डीएपी, नैनो जिंक, नैनो कापर) के संतुलित एवं कुशल उपयोग हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ, मोतीलाल नेहरू फार्मर्स ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट कार्डेट फूलपुर में हुआ। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के दौरान कार्डेट फूलपुर के प्रधानाचार्य डॉ. विवेक दीक्षित ने आए हुए सभी कृषकों का स्वागत किया एवं उन्हें कार्डेट के एवं इफको के क्रियाकलापो से परिचित कराया। साथ ही यह जानकारी दी कि इस तीन दिवसीय विशेष कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में मृदा परीक्षण की उपयोगिता, खरीफ फसलों में नैनो उर्वरकों तथा जैव उर्वरकों एवं इफको के अन्य उत्पादों के प्रयोग , मौन पालन , पशुपालन एवं आधुनिक कृषि में ड्रोन के महत्व जैसे विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा जानकारी दी जाएगी। प्रधानाचार्य महोदय द्वारा उपस्थित कृषकों के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए। इसी क्रम में पैक्स सचिव वेलफेयर सोसाइटी लखनऊ उत्तर प्रदेश (आजमगढ़) के अध्यक्ष धनंजय सिंह, भूपेंद्रनाथ यादव,सचिव देवरिया , एवं कृषक राम आधार कुशवाहा , कुशीनगर ने नैनो उर्वरकों संबंधी अपने अनुभव साझा किये। उद्घाटन सत्र के उपरांत तकनीकी सत्र में मृदा परीक्षण प्रभारी डॉ. हरिश्चंद्र ने संतुलित उर्वरक प्रयोग एवं मृदा संरक्षण में मिट्टी जांच के महत्व को विस्तार से बताया, प्रभारी प्रशिक्षण मुकेश तिवारी ने नैनो उर्वरकों के प्रयोग की तकनीकी जानकारी सझा की तथा जैव उर्वरक उत्पादन इकाई प्रभारी डॉक्टर अनुराधा राय ने खरीफ फसलों में जैव उर्वरकों का सफलतापूर्वक प्रयोग कैसे करें विषय पर विस्तार से जानकारी दी। उपस्थित सभी कृषकों को कॉर्डेड की विभिन्न इकाइयों का भ्रमण भी कराया गया।

दिल्ली के जंतर-मंतर लाठीचार्ज के विरोध में प्रयागराज में अधिवक्ताओं का उग्र प्रदर्शन

जिला कचहरी में हड़ताल, टायर जलाकर जताया विरोध

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रयागराज। दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर हुए कथित लाठीचार्ज के विरोध की गूंज मंगलवार को प्रयागराज में भी सुनाई दी। जिला कचहरी के अधिवक्ताओं ने घटना के विरोध में जोरदार प्रदर्शन करते हुए न्यायिक कार्य से विरत रहने का निर्णय लिया। इस दौरान अधिवक्ताओं ने सरकार और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की तथा जिला कचहरी के बाहर सड़क पर टायर जलाकर अपना आक्रोश व्यक्त किया। सुबह से ही बड़ी संख्या में अधिवक्ता जिला कचहरी परिसर में एकत्र हुए और विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में शांतिपूर्ण ढंग से अपनी बात रखने का अधिकार प्रत्येक नागरिक को है। छात्रों पर बल प्रयोग लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत है और इसकी निष्पक्ष जांच कर दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई होनी चाहिए। विरोध प्रदर्शन के दौरान अधिवक्ताओं ने सरकार के खिलाफ जमकर नारे लगाए। टायर जलाकर सड़क पर प्रदर्शन किए जाने से कुछ समय के लिए यातायात भी प्रभावित रहा। हालांकि मौके पर मौजूद पुलिस बल ने स्थिति पर नजर बनाए रखी और किसी प्रकार की अप्रिय घटना नहीं होने दी। अधिवक्ताओं ने घटना की कड़ी निंदा करते हुए पूरे दिन न्यायिक कार्य से विरत रहने का निर्णय लिया, जिससे जिला कचहरी में कई मुकदमों की सुनवाई प्रभावित हुई। न्यायालय पहुंचे वादकारियों को भी परेशानी का सामना करना पड़ा और अनेक मामलों में अगली तिथि देनी पड़ी।

झूंसी पुलिस ने मारपीट के मामले में दो वांछित अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रयागराज। कमिश्नरेट प्रयागराज की झूंसी थाना पुलिस ने अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत बड़ी कार्रवाई करते हुए मारपीट और गंभीर चोट पहुंचाने के मामले में वांछित दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों को मुखबिर की सूचना पर उनके घर से दबोचा गया। पुलिस ने आवश्यक कानूनी कार्रवाई पूरी कर उन्हें न्यायालय में पेश किया। पुलिस के अनुसार, थाना झूंसी में दर्ज मु0अ0सं0-263/2026 में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 351(2), 326(जी) एवं 324(4) के तहत मामला पंजीकृत है। इसी मुकदमे में वांछित चल रहे अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार प्रयास कर रही थी पुलिस टीम ने थाना क्षेत्र के ग्राम छिवैया में दबिश देकर दोनों वांछित अभियुक्तों को उनके निवास स्थान से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार अभियुक्तों की पहचान विरेन्द्र यादव (20 वर्ष) पुत्र रतिपाल यादव तथा बादल वर्मा (19 वर्ष) पुत्र स्वर्गीय मुन्नूलाल, दोनों निवासी ग्राम छिवैया, थाना झूंसी, जनपद प्रयागराज के रूप में हुई है।

सर्किट हाउस में 22 जुलाई को , राज्य महिला आयोग की सदस्य सुनेंगी पीड़िताओं की समस्याएं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रयागराज। महिलाओं की समस्याओं के त्वरित समाधान और उन्हें न्याय दिलाने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य गीता विश्वकर्मा 22 जुलाई को प्रयागराज दौरे पर रहेंगी। इस दौरान वह महिला उत्पीड़न एवं महिलाओं से जुड़े विभिन्न मामलों की सुनवाई करते हुए पीड़ित महिलाओं की शिकायतें सुनेंगी और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देंगी। जिला प्रोबेशन अधिकारी द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, 22 जुलाई 2026 को पूर्वाह्न 11:00 बजे सिविल लाइंस स्थित सर्किट हाउस सभागार में महिला जनसुनवाई का आयोजन किया जाएगा। जनसुनवाई में घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, पारिवारिक विवाद, संपत्ति संबंधी विवाद, कार्यस्थल पर उत्पीड़न सहित महिलाओं से जुड़े अन्य मामलों की सुनवाई की जाएगी। संबंधित विभागों के अधिकारी भी मौके पर उपस्थित रहेंगे, ताकि शिकायतों का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित किया जा सके। इसके अलावा, 23 जुलाई 2026 को सदस्य विकासखंड भगवतपुर कार्यालय में आयोजित महिला जागरूकता चौपाल कार्यक्रम में शामिल होंगी। इस कार्यक्रम में महिलाओं को केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं, महिला सुरक्षा, आत्मनिर्भरता, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, स्वरोजगार तथा कानूनी अधिकारों की जानकारी दी जाएगी। साथ ही महिलाओं को योजनाओं का लाभ लेने के लिए जागरूक किया जाएगा और उनकी समस्याओं एवं सुझावों पर भी चर्चा होगी। जिला प्रशासन ने महिला उत्पीड़न से संबंधित शिकायत रखने वाली महिलाओं से अपील की है कि वे निर्धारित समय पर आवश्यक अभिलेखों के साथ जनसुनवाई में उपस्थित होकर अपनी समस्याएं आयोग के समक्ष रखें, ताकि उनकी शिकायतों का प्रभावी एवं शीघ्र समाधान कराया जा सके। जिला प्रोबेशन अधिकारी ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को न्याय दिलाने के साथ-साथ उन्हें उनके अधिकारों एवं सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक बनाना है।

9 साल पुराने हत्या के मामले में दोषी को आजीवन कारावास

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बहरिया/प्रयागराज। उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा चलाए जा रहे 'ऑपरेशन कन्विक्शन' अभियान के तहत प्रयागराज कमिश्नरेट पुलिस को वर्ष 2007 के हत्या के एक चर्चित मामले में न्यायालय ने अभियुक्त को दोषी करार देते हुए कठोर आजीवन कारावास तथा 20 हजार रुपये के अर्थदंड की सजा सुनाई है। यह फैसला पुलिस की गुणवत्तापूर्ण विवेचना और अभियोजन पक्ष की प्रभावी पैरवी का परिणाम माना जा रहा है। थाना बहरिया पुलिस ने इस मुकदमे में साक्ष्यों को मजबूती से न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया। अभियोजन पक्ष की प्रभावी पैरवी के बाद विशेष न्यायाधीश पॉक्सो एक्ट, कक्ष संख्या-02, प्रयागराज ने अपना फैसला सुनाते हुए अभियुक्त को दोषी ठहराया। अदालत ने लालचन्द्र पटेल पुत्र स्वर्गीय कामता प्रसाद पटेल, निवासी शिवचरन का पूरा, थाना सोरांव, कमिश्नरेट प्रयागराज को भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत हत्या का दोषी मानते हुए कठोर आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इसके साथ ही न्यायालय ने अभियुक्त पर 20,000 रुपये का अर्थदंड भी लगाया। अर्थदंड अदा न करने की स्थिति में नियमानुसार अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा।

स्टेशन चौराहा पर महाराणा प्रताप की प्रतिमा स्थापना शीघ्र कराये जाने की मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। स्टेशन चौराहा पर महाराणा प्रताप की प्रतिमा शीघ्र स्थापित कराये जाने की मांग को लेकर अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा ने नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष शैलेंद्र गुप्ता को ज्ञापन सौंपा है। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के जिलाध्यक्ष संजय सिंह तोमर एडवोकेट के नेतृत्व में महासभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष शैलेंद्र गुप्ता को दिए ज्ञापन में कहा कि पिछले तीन वर्षो से अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा पूरनपुर मे महाराणा प्रताप चौक (स्टेशन चौराहा) पर हिन्दू हृदय सम्राट क्षत्रिय वीर सिरोमाणि महाराणा प्रताप की भव्य प्रतिमा की स्थापना की मांग कर रही है। ज्ञापन में चेयरमैन से कहा गया कि कई बार आप द्वारा दिये गये आश्वासन के उपरान्त कोई प्रगति नही हुई है। जबकि उसके बाद की मांगे अग्रसेन महाराज, परशुराम जी की प्रतिमाएं स्थापित की जा चुकी है। परन्तु पूर्व मे बना महाराणा प्रताप चौक पर प्रतिमा स्थापित नही की गई है। जिससे क्षत्रिय समाज के भारी आक्रोश व्याप्त है। ज्ञापन में कहा गया कि अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा पीलीभीत पुनः मांग करती है कि 20 सितम्बर 2026 तक महाराणा प्रताप की भाव प्रतिमा स्थापित कराये वरना सम्पूर्ण जिले का क्षत्रिय समाज जन आन्दोलन के लिये सड़को पर आयेगा और नगर पालिका व विधायक पूरनपुर को घेराव करने को बाध्य होगा। ज्ञापन में मांग की गई कि 20 सितम्बर 2026 तक महाराणा प्रताप चौक पर भव्य प्रतिमा स्थापित करें। ज्ञापन देने वालों में एड0 संजय सिंह तोमर, एड0 रजनीश सिंह चौहान, रामचंद्र सिंह पवार, एड0 महेन्द्र सिंह, एड0 सज्जन सिंह आदि मौजूद थे।

धमकाने वाले कथित पत्रकारों से आमजन व अधिकारी परेशान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शादाब अली

पूरनपुर (पीलीभीत)। गांव-गांव घूमकर ठेकेदारों खासतौर पर ग्राम प्रधानों से अबैध वसूली करना क्षेत्र के कुछ कथित पत्रकारों की आदत में शुमार हो गया है। लगातार ऐसे कथित पत्रकारों के खिलाफ अवैध वसूली की शिकायतें सामने आती रहती हैं। ज्ञात हो कि यू ट्यूब व पीडीएफ के माध्यम से परोसी जाने वाली आधी अधूरी सूचनाओं के साथ ही मनघडंत तरीके से बेबुनियाद आरोप लगाकर धमकाने वाले कथित पत्रकारों से अधिकारी ही नही बल्कि आमजन भी परेशान हैं। सर्वविदित है कि तहसील पूरनपुर व तहसील कलीनगर क्षेत्र में कुछ कथित पत्रकार गांवों में सरपंच, सचिव, शिक्षकों व छोटे-मोटे व्यवसायियों को भी खबर छापने अथवा यू ट्यूब चैनल पर चला देने की धमकी देकर अवैध रुपए वसूलते हैं। इसके बावजूद कथित पत्रकारों द्वारा की जा रही ब्लैकमेलिंग के खिलाफ कोई भी बोलने को तैयार नहीं होता। नौबत यहां तक आ गई है कि जो कल राजनीतिक पार्टियों के कार्यकर्ता या नेताओं के पिछलग्गू बने फिरते थे अथवा छोटे मोटे काम कर गुजर बसर करते थे वह लोग भी पत्रकारिता की चमक दमक और सम्मान देख कोतवाली, तहसील में पत्रकार वार्ता शुरू होने से आधा घंटे पहले जाकर प्रथम पंक्ति में स्थान बनाकर बैठ जाते हैं और अधिकारियों के पास बैठकर डींगे हांमते हुए अन्य समाज के लोगों के सामने रौब ग़ालिब करते हैं। ऐसे कथित पत्रकारों की कोई खास उपलब्धि भी नहीं हैं, लेकिन यह अधिकारियों की हाँ हुजूरी कर खुद को वरिष्ठ पत्रकार कहने या साबित करने से भी नहीं चूकते है। उनकी बड़ी-बड़ी बातों से अधिकारी भी भ्रमित हो जाते हैं। ऐसे में सही और गलत का चयन करना एक बड़ा सवाल बनकर सामने आ जाता है। कुल मिलाकर दिखावा कर अधिकारियों से मीठी-मीठी बातें करने वाले कथित पत्रकार ही समाज की नज़रों में चमक रहे हैं, जबकि सच्चाई से पत्रकारिता के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने वाले पत्रकारों का वजूद झूठ की गर्द में छिप सा गया है। यदि समय रहते सही और गलत की पहचान नहीं की गई तो आने वाले समय में स्थिति और भी अधिक भयानक होगी।

स्टेशन रोड का गड्ढा भरा, राहगीरों को मिली राहत।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

खबर का असर

राहुल जायसवाल

नैनी, प्रयागराज। नैनी के चक रघुनाथ स्थित व्यस्त स्टेशन रोड के बीचों-बीच पिछले कई दिनों से बना गड्ढा राहगीरों और वाहन चालकों के लिए परेशानी का कारण बना हुआ था। इस संबंध में स्वतंत्र प्रभात ने प्रमुखता से समाचार प्रकाशित कर जिम्मेदार अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया था। समाचार प्रकाशित होने के बाद नगर निगम एवं क्षेत्रीय पार्षद ने मामले का संज्ञान लेते हुए सड़क पर बने गड्ढे की मरम्मत करवा दी। गड्ढा भर जाने से आवागमन सुगम हो गया है और दुर्घटना की आशंका भी काफी हद तक कम हो गई है।स्थानीय लोगों ने त्वरित कार्रवाई के लिए नगर निगम, क्षेत्रीय पार्षद तथा जनहित के मुद्दे को प्रमुखता से उठाने पर स्वतंत्र प्रभात का आभार व्यक्त किया। लोगों का कहना है कि समय रहते गड्ढे की मरम्मत होने से अब राहगीरों और वाहन चालकों को राहत मिली है।

दिल्ली के किसान घाट जा रहे किसान नेताओं को बरेली से वापस लाई माधोटांडा पुलिस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। देश बचाओ किसान मोर्चा के तत्वावधान में भारत की राजधानी के किसान घाट पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करने जा रहे भारतीय किसान यूनियन चढ़ूनी जिलाध्यक्ष व अन्य कार्यकर्ताओं के घरों का पुलिस ने घेर कर दिया। किसी तरह किसान नेता अपने निजी वाहन से बरेली पहुंचे, जहां ट्रेन के माध्यम से उन्हें दिल्ली जाना था। इस बात की जानकारी मिलते ही थाना माधोटांडा पुलिस बरेली जा धमकी और किसान नेताओं को पकड़ कर वापस लाने के बाद होम अरेस्ट कर दिया। जिसको लेकर किसान नेताओं ने कड़ी नाराजगी जताई है। भारतीय किसान यूनियन चढ़ूनी के जिलाध्यक्ष रंजीत सिंह कहलों ने जानकारी देते हुए बताया कि 21 जुलाई 2026 को देश बचाओ किसान मोर्चा द्वारा दिल्ली के किसान घाट पर विरोध प्रदर्शन प्रस्तावित था। जिसमें प्रतिभाग करने के लिए जिला पीलीभीत से एक टीम 20 जुलाई 2026 को दोपहर को 02 बजे निकलना थी। श्री सिंह ने बताया कि सुबह से ही उनके एवं अन्य कार्यकर्ताओं के घरों के सामने सादा वर्दी में पुलिस मडराने लगी। उन्होंने कहा कि हम लोग क्या अपराधी हैं जो पुलिस को सादा वर्दी में आना पड़ा। जिलाध्यक्ष रंजीत सिंह कहलो ने बताया कि पुलिस प्रशासन के बचते हुए वह व उनके साथी निजी गाड़ी से पीलीभीत पहुंचे और पीलीभीत से गाड़ी चेंज करके बिजोरिया स्टेशन होते हुए बरेली सिटी से पैदल चलकर बरेली जंक्शन पर पहुंचे। जहां रात्रि 09 बजे की सरयू एक्सप्रेस से उन्हें दिल्ली जाना था। ट्रेन को आने में 2 मिनट का समय था उससे पहले अचानक माधोटांडा थाने की पुलिस फोन लोकेशन के आधार पर पहुंची और उन लोगों को पकड़ लिया और गिरफ्तार करके पुलिस की गाड़ियों पर बैठार हमें वापस ले आये और थाना माधोटांडा ले जाने लगे। किसान नेता ने बताया कि हमने वहां जाने से इनकार कर दिया तो फिर पुलिस प्रशासन ने उन्हें उनके घरों पर होम अरेस्ट कर दिया। इस दौरान जितेंद्र सिंह, त्रिलोचन सिंह, अमरीक सिंह आदि थे। भाकियू चढ़ूनी के जिलाध्यक्ष रंजीत सिंह कहलो ने कहा कि क्या लोकतांत्रिक देश में अपनी बात रखना अब अपराध हो गया है। अब लोकतंत्र नही रहा, तानाशाही राज आ गया है। जिसको लेकर अब से ऐसे कृत्यों के दृष्टिकोण से इसे राजतंत्र कहा जाएगा।

जनसुनवाई में गीले कपड़ों में पहुंचा पीड़ित परिवार, एडीएम सिटी ने पहले दिलाए नए कपड़े, फिर सुनी फरियाद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रयागराज। प्रयागराज कलेक्ट्रेट में मंगलवार को आयोजित जनसुनवाई के दौरान मानवता और संवेदनशील प्रशासन की मिसाल देखने को मिली। संगम सभागार में चल रही जनसुनवाई के बीच सोरांव थाना क्षेत्र का एक पीड़ित परिवार गीले और मिट्टी से सने कपड़ों में अपनी फरियाद लेकर पहुंचा। परिवार की हालत देखकर जनसुनवाई कर रहे एडीएम सिटी सत्यम मिश्रा ने पहले उन्हें नए कपड़े उपलब्ध कराए और उसके बाद उनकी समस्या को गंभीरता से सुनते हुए तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। जानकारी के अनुसार, सोरांव थाना क्षेत्र के भोपतपुर गांव निवासी देवीलाल मंगलवार सुबह अपनी पत्नी और दो बेटियों राधा एवं अंशिका के साथ खेत में धान की रोपाई कर रहे थे। इसी दौरान खेत की कुछ मिट्टी मेड़ पर रखने को लेकर उनके भाई रामदीन से कहासुनी हो गई। देखते ही देखते विवाद बढ़ गया। पीड़ित का आरोप है कि कुछ देर बाद रामदीन की पत्नी, निकाहू की पत्नी तथा उनके दो बेटे भी मौके पर पहुंच गए और सभी ने मिलकर उनके परिवार के साथ मारपीट की। इस घटना में परिवार के लोग घायल हो गए और उनके कपड़े मिट्टी तथा पानी से पूरी तरह सने गए। मारपीट के बाद देवीलाल अपने परिवार के साथ न्याय की उम्मीद लेकर सोरांव थाने पहुंचे। उनका आरोप है कि वहां उनकी शिकायत पर तत्काल कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई। इसके बाद वे सीधे सुबह करीब 11 बजे कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में पहुंच गए। उस समय जिलाधिकारी किसी शासकीय कार्य से हाईकोर्ट गए हुए थे, इसलिए जनसुनवाई की जिम्मेदारी एडीएम सिटी सत्यम मिश्रा संभाल रहे थे। जैसे ही उनकी नजर गीले और मिट्टी से सने कपड़ों में खड़े परिवार पर पड़ी, उन्होंने पहले उनकी स्थिति को देखते हुए नए कपड़ों की व्यवस्था कराई। कपड़े बदलने के बाद पूरे मामले को विस्तार से सुना और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। एडीएम सिटी ने तत्काल सोरांव थाना प्रभारी से फोन पर वार्ता कर पीड़ित की शिकायत पर नियमानुसार कार्रवाई करने तथा मारपीट के आरोपियों के विरुद्ध आवश्यक कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इतना ही नहीं, उन्होंने पीड़ित परिवार के घर वापस जाने के लिए किराए की व्यवस्था भी कराई, जिससे उन्हें किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

पेंशन के लिए बुजुर्ग सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटने को मजबूर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पूरनपुर (पीलीभीत)। एक तरफ जिला स्तर पर सरकार नई-नई और बड़ी विकास परियोजनाओं के दावे कर रही है, वहीं दूसरी तरफ समाज का सबसे संवेदनशील तबका हमारे बुजुर्ग अपनी बुनियादी पेंशन के लिए महीनों से मोहताज हैं। 60 वर्ष की आयु पार कर चुके दर्जनों वृद्धजन अपनी रुकी हुई वृद्धावस्था पेंशन पाने के लिए भटकने पर मजबूर हैं, लेकिन अधिकारियों के पास उनके सवालों का कोई ठोस जवाब नहीं है। पेंशन अटकी होने से परेशान बुजुर्ग तहसील और जिला मुख्यालय के चक्कर लगा-लगाकर थक चुके हैं। पहले से ही तंगहाली का सामना कर रहे इन वृद्धों को केवल यह जानने के लिए भी अपना किराया और पैसा खर्च करना पड़ रहा है कि आखिर उनकी पेंशन क्यों रोकी गई है। पीड़ित बुजुर्गों का दर्द है कि उन्हे समझ नहीं आ रहा कि पेंशन आई क्यों नहीं। हर बार दफ्तर जाओ तो सिर्फ आश्वासन मिलता है या अगली तारीख। क्या सरकार के पास बुजुर्गों को देने के लिए बजट खत्म हो गया है ? स्थानीय लोगों और बुजुर्गों का कहना है कि यदि सत्यापन के दौरान कोई डाटा संदिग्ध पाया गया है, तो केवल उसकी जांच होनी चाहिए और जांच पूरी होने तक संबंधित खाते को रोका जा सकता है। लेकिन इसके नाम पर सभी पात्र बुजुर्गों की पेंशन महीनों तक रोक देना सरासर अन्याय है। इसको लेकर दावों और जमीनी हकीकत के इस अंतर ने युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक सभी वर्ग को सोचने पर मजबूर कर दिया है। सवाल यह उठ रहा है कि जब तक योजना का लाभ समय पर अंतिम व्यक्ति तक न पहुंचे, तब तक बड़ी-बड़ी घोषणाओं का क्या औचित्य ? बुजुर्गों की सहूलियत को ध्यान में रखते हुए स्थानीय प्रशासन को जिनकी पात्रता स्पष्ट है, उनकी रुकी हुई वृद्धावस्था पेंशन बिना किसी देरी के तुरंत जारी की जाए।

संदिग्ध डाटा के निस्तारण और त्रुटि सुधार के लिए तहसील व ब्लॉक स्तर पर विशेष शिविर लगाए जाएं। कैंप के माध्यम से बुजुर्गों को बताया जाए कि कौन-सी प्रतिलिपि या दस्तावेज अपलोड करने हैं, ताकि उन्हें जिला मुख्यालय के चक्कर न काटने पड़ें।

दिल्ली कूच के ऐलान पर पानीपत हाई अलर्ट, टोल प्लाजा पर पुलिस, आरएएफ और सीआरपीएफ तैनात

ट्रेड डील के विरोध में किसानों के आह्वान के बीच सुरक्षा कड़ी, वाहनों की जांच तेज

पानीपत। अमेरिका-भारत प्रस्तावित ट्रेड डील के विरोध में किसानों के दिल्ली कूच के आह्वान को देखते हुए हरियाणा के पानीपत में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। दिल्ली की ओर जाने वाले प्रमुख टोल प्लाजा पर हरियाणा पुलिस के साथ रैपिड एक्शन फोर्स (RAF) और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF) की तैनाती की गई है। सुरक्षा एजेंसियां आने-जाने वाले वाहनों की जांच कर रही हैं तथा संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की जा रही है। मंगलवार को पूरे दिन पानीपत में स्थिति पूरी तरह शांतिपूर्ण रही और किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना सामने नहीं आई। सीआरपीएफ के डीआईजी अमित सांगवान ने बताया कि क्षेत्र में सभी व्यवस्थाएं सामान्य हैं और सुरक्षा बल पूरी तरह मुस्तैद हैं। उन्होंने कहा कि हालात के अनुसार पुलिस बल की तैनाती की गई है तथा आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त बल भी लगाया जाएगा। उन्होंने लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने और सामान्य रूप से अपने दैनिक कार्य करने की अपील की। डीएसपी मुख्यालय विकास चहल ने बताया कि प्रमुख टोल प्लाजा पर हरियाणा पुलिस की तीन कंपनियों के साथ सीआरपीएफ की एक कंपनी तैनात की गई है। इसका उद्देश्य कानून-व्यवस्था बनाए रखना और आम लोगों की आवाजाही को निर्बाध रखना है। उन्होंने कहा कि अब तक ऐसी कोई स्थिति नहीं बनी है, जिसमें किसानों के किसी जत्थे को यहां से गुजरने से रोका गया हो। ड्यूटी मजिस्ट्रेट मनदीप ने बताया कि दिल्ली में चल रहे किसान आंदोलन को देखते हुए एहतियातन सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया गया है। हरियाणा पुलिस, RAF और CRPF संयुक्त रूप से पूरे क्षेत्र में निगरानी रखे हुए हैं। यदि कोई समूह या व्यक्ति यहां से गुजरता है तो नियमानुसार उसकी पहचान और यात्रा के उद्देश्य की जानकारी ली जाएगी। प्रशासन के अनुसार फिलहाल पानीपत में कानून-व्यवस्था पूरी तरह सामान्य है और स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है।

मंगलवार को पूरे दिन पानीपत में स्थिति पूरी तरह शांतिपूर्ण रही और किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना सामने नहीं आई। सीआरपीएफ के डीआईजी अमित सांगवान ने बताया कि क्षेत्र में सभी व्यवस्थाएं सामान्य हैं और सुरक्षा बल पूरी तरह मुस्तैद हैं। उन्होंने कहा कि हालात के अनुसार पुलिस बल की तैनाती की गई है तथा आवश्यकता पड़ने पर अतिरित बल भी लगाया जाएगा। उन्होंने लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने और सामान्य रूप से अपने दैनिक कार्य करने की अपील की। डीएसपी मुयालय विकास चहल ने बताया कि प्रमुख टोल प्लाजा पर हरियाणा पुलिस की तीन कंपनियों के साथ सीआरपीएफ की एक कंपनी तैनात की गई है। इसका उद्देश्य कानून-व्यवस्था बनाए रखना और आम लोगों की आवाजाही को निर्बाध रखना है। उन्होंने कहा कि अब तक ऐसी कोई स्थिति नहीं बनी है, जिसमें किसानों के किसी जत्थे को यहां से गुजरने से रोका गया हो।

खैबर पख्तूनख्वा में बारिश का कहर: बाढ़ और मकान ढहने से 12 की मौत, 18 घायल

25 जुलाई तक भारी बारिश का अलर्ट, प्रशासन हाई अलर्ट पर; राहत एवं बचाव कार्य जारी

पेशावर(एजेंसी)। पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में लगातार हो रही भारी मानसूनी बारिश और अचानक आई बाढ़ ने व्यापक तबाही मचाई है। वर्षा जनित विभिन्न हादसों में पांच बच्चों सहित कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई, जबकि 18 अन्य घायल हो गए हैं। प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (पीडीएमए) की रिपोर्ट के अनुसार, अधिकांश मौतें मकानों की छत और दीवारें ढहने तथा अचानक आई बाढ़ में लोगों के बह जाने से हुईं। मृतकों में छह पुरुष, एक महिला और पांच बच्चे शामिल हैं। वहीं घायलों में आठ पुरुष, दो महिलाएं और आठ बच्चे हैं। पीडीएमए के मुताबिक, पेशावर, खैबर, मरदान, बुनेर, बाजौर, लोअर चित्राल, एबटाबाद, मानसेहरा, तोरघर और कुर्रम जिलों में सबसे अधिक नुकसान दर्ज किया गया है। भारी बारिश के कारण कुल 14 मकान क्षतिग्रस्त हुए, जिनमें एक मकान पूरी तरह ध्वस्त हो गया, जबकि अन्य को आंशिक नुकसान पहुंचा। राहत एवं बचाव कार्यों के लिए पीडीएमए, रेस्क्यू 1122, जिला प्रशासन और अन्य संबंधित एजेंसियां प्रभावित क्षेत्रों में लगातार अभियान चला रही हैं। पीडीएमए के महानिदेशक ने सभी जिला प्रशासन को प्रभावित परिवारों तक तत्काल राहत सामग्री पहुंचाने के निर्देश दिए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, फिलहाल प्रांत की प्रमुख नदियों और जलमार्गों का जलस्तर सामान्य बना हुआ है। हालांकि, पाकिस्तान मौसम विभाग ने 25 जुलाई तक प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में रुक-रुक कर भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। प्रशासन ने लोगों से अनावश्यक यात्रा से बचने, नदी-नालों और जोखिम वाले पर्यटन स्थलों से दूर रहने तथा मौसम विभाग की आधिकारिक चेतावनियों और सुरक्षा निर्देशों का पालन करने की अपील की है। सभी जिला प्रशासन को पहले ही हाई अलर्ट पर रखा गया है।

यूपी में स्वामित्व योजना को बड़ी सफलता

1.01 करोड़ ग्रामीणों को मिले संपत्ति कार्ड

90,573 गांवों में ड्रोन सर्वे पूरा, सितंबर 2026 तक बढ़ाई गई योजना की अवधि

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली/लखनऊ। उत्तर प्रदेश में ग्रामीण आबादी क्षेत्रों में संपत्ति अधिकारों को मजबूत बनाने के उद्देश्य से संचालित स्वामित्व (SVAMITVA) योजना ने बड़ी उपलब्धि हासिल की है। 13 जुलाई 2026 तक प्रदेश के सभी 90,573 अधिसूचित गांवों में ड्रोन सर्वेक्षण का कार्य पूरा कर लिया गया है। इसके साथ ही लगभग 67 हजार गांवों में 1.01 करोड़ संपत्ति कार्ड ग्रामीणों को वितरित किए जा चुके हैं। केंद्रीय पंचायती राज एवं मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने मंगलवार को लोकसभा में लिखित उत्तर के माध्यम से बताया कि उत्तर प्रदेश के करीब 75 हजार गांवों के लिए 1.20 करोड़ संपत्ति कार्ड तैयार किए जा चुके हैं, जो राज्य के अधिसूचित गांवों का लगभग 83 प्रतिशत है। शेष गांवों में कार्य पूरा करने के लिए योजना की अवधि सितंबर 2026 तक बढ़ा दी गई है। स्वामित्व योजना का उद्देश्य ग्रामीण आबादी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को उनकी संपत्तियों का वैध अधिकार अभिलेख (रिकॉर्ड ऑफ राइट्स) उपलब्ध कराना है। इसके लिए अत्याधुनिक ड्रोन सर्वेक्षण और कंटीन्यूअस ऑपरेटिंग रेफरेंस स्टेशन (CORS) तकनीक की मदद से संपत्तियों का सटीक सर्वेक्षण, मानचित्रण और सीमांकन किया जा रहा है। संपत्ति कार्ड जारी करने से पहले संबंधित राज्य प्राधिकरणों द्वारा स्थलीय सत्यापन कराया जाता है। साथ ही प्राप्त आपत्तियों और विवादों का नियमानुसार निस्तारण सुनिश्चित किया जाता है। इससे संपत्तियों के सीमांकन में पारदर्शिता बढ़ी है और भविष्य में भूमि संबंधी विवादों में कमी आने की उम्मीद जताई जा रही है। केंद्र सरकार के अनुसार, स्वामित्व योजना ग्रामीण क्षेत्रों में संपत्ति के अधिकारों को कानूनी आधार प्रदान करने के साथ-साथ आर्थिक सशक्तीकरण और ग्रामीण विकास को भी नई गति दे रही है।

पीलीभीत में उत्साह पूर्वक मनाया गया भीम आर्मी भारत एकता मिशन का 11वाँ स्थापना दिवस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पीलीभीत। भीम आर्मी भारत एकता मिशन के 11वें स्थापना दिवस के अवसर पर जनपद पीलीभीत में जिलाध्यक्ष सौरभ भारतीय के नेतृत्व में एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संगठन के 11वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में केक काटकर सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे को केक खिलाकर शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम में संगठन के जिला, तहसील, नगर एवं न्याय पंचायत स्तर के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित समस्त जिम्मेदार पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ संगठन की वर्तमान गतिविधियों, भविष्य की कार्ययोजना, संगठन विस्तार, सामाजिक न्याय, संविधान की रक्षा तथा समाज के शोषित, वंचित एवं कमजोर वर्गों के अधिकारों की सुरक्षा एवं उत्थान के विषय में विस्तृत संवाद किया गया। इस दौरान आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष सौरभ भारतीय ने संगठन को बूथ, ग्राम एवं वार्ड स्तर तक और अधिक सशक्त बनाने, युवाओं को संगठन से जोड़ने तथा बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अंबेडकर एवं मान्यवर कांशीराम के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। उन्होंने सभी पदाधिकारियों से सामाजिक परिवर्तन, भाईचारे, समानता तथा संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य करने का आग्रह किया। इस अवसर पर सभी पदाधिकारियों ने संगठन को मजबूत बनाने और जनहित के मुद्दों पर निरंतर संघर्ष करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए संगठन की एकता, अनुशासन और जनसेवा के संकल्प को दोहराया गया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष सौरभ भारतीय, जिला महासचिव राकेश वालिया, जिला उपाध्यक्ष बबलू दिवाकर, पीलीभीत तहसील अध्यक्ष महेन्द्र पाल गौतम, बीसलपुर तहसील अध्यक्ष हरीश कुमार गंगवार, जिला संगठन सचिव रोनित वाल्मीकि, पूरनपुर तहसील उपाध्यक्ष पुष्पेन्द्र कुमार गौतम, पूरनपुर नगर अध्यक्ष शुभम सागर, पीलीभीत कार्यकारिणी सदस्य अजय कुमार गौतम, पूरनपुर नगर संगठन सचिव इलियास, पूरनपुर तहसील संगठन मंत्री चंद्रशेखर आजाद, पूरनपुर तहसील उपाध्यक्ष मोहम्मद नदीम कुरैशी, कबीरपुर व कसगंजा न्याय पंचायत अध्यक्ष सुरजीत कुमार गौतम, रोहन वाल्मीकि सहित अनेक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में संगठन के जिला, तहसील, नगर एवं न्याय पंचायत स्तर के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित समस्त जिम्मेदार पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ संगठन की वर्तमान गतिविधियों, भविष्य की कार्ययोजना, संगठन विस्तार, सामाजिक न्याय, संविधान की रक्षा तथा समाज के शोषित, वंचित एवं कमजोर वर्गों के अधिकारों की सुरक्षा एवं उत्थान के विषय में विस्तृत संवाद किया गया। इस दौरान आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष सौरभ भारतीय ने संगठन को बूथ, ग्राम एवं वार्ड स्तर तक और अधिक सशक्त बनाने, युवाओं को संगठन से जोड़ने तथा बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अंबेडकर एवं मान्यवर कांशीराम के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया।

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश मौर्य का नैनी मंडल में भव्य स्वागत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नैनी, प्रयागराज। भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्वाचित प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश मौर्य का सोनभद्र दौरे के दौरान नैनी मंडल में कार्यकर्ताओं द्वारा भव्य एवं ऐतिहासिक स्वागत-अभिनंदन किया गया। नए यमुना पुल से ही कार्यकर्ताओं का लंबा काफिला उनके साथ रहा।जहाँ नैनी के इंडिया होटल के सामने भाजपा नेता हरी कृष्ण तिवारी बबलू एवं जय कृष्ण तिवारी के नेतृत्व में जोरदार स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।इस तरह भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश मंत्री सत्यम शुक्ला के आवास पर उनका जोरदार स्वागत किया गया। इस अवसर पर भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष एवं प्रयागराज महानगर युवा मोर्चा के पूर्व अध्यक्ष नरसिंह ने कहा कि प्रदेश उपाध्यक्ष का दायित्व संभालने के बाद सुरेश मौर्य लगातार पूरे प्रदेश का दौरा कर रहे हैं। वे मंडल स्तर तक पहुंचकर वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारियों के तहत केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं तथा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सरकार की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। स्वागत समारोह में भाजपा के पूर्व महानगर अध्यक्ष रणजीत सिंह,वरिष्ठ नेता राजन शुक्ला, राजेश तिवारी, पूर्व मंडल अध्यक्ष एवं नामित पार्षद दिलीप केसरवानी, पार्षद मयंक यादव,पार्षद अनूप भारतीय, मंडल अध्यक्ष रजत दुबे, मंडल महामंत्री ओमप्रकाश मिश्रा, दिनेश पटेल, शिवदानी,संजय श्रीवास्तव, श्याम मिश्रा, समर सिंह, उमाधन पाल,घनश्याम जायसवाल, धर्मराज पटेल, आदि लोगों ने स्वागत किया।

कुदरत का कहर: औरास में चलते बाइक पर गिरा पेड़, एक युवक की दर्दनाक मौत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रहिमाबाद। औरास कस्बे में मंगलवार दोपहर एक दर्दनाक हादसे ने पूरे इलाके को गमगीन कर दिया। बाल कटवाने के लिए सैलून पहुंचे दो युवक भीड़ अधिक होने के कारण बिना बाल कटवाए वापस लौट रहे थे। तभी अचानक सड़क किनारे खड़ा एक विशाल चिलवन का पेड़ उनकी बाइक पर भरभराकर गिर पड़ा। हादसा इतना भयावह था कि एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, पेड़ गिरने की चपेट में एक अन्य बाइक भी आ गई, जिस पर सवार दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई और स्थानीय लोग तत्काल घायलों की मदद के लिए दौड़ पड़े। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और स्थानीय प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। पेड़ को हटाने के लिए राहत कार्य शुरू किया गया और घायलों को एंबुलेंस की मदद से अस्पताल भेजा गया, जहां उनका उपचार जारी है। इस दर्दनाक हादसे के बाद पूरे औरास कस्बे में शोक का माहौल है। स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क किनारे कई पुराने और जर्जर पेड़ खड़े हैं, जो तेज हवा या बारिश के दौरान कभी भी बड़े हादसे का कारण बन सकते हैं। लोगों ने प्रशासन से ऐसे खतरनाक पेड़ों की पहचान कर उन्हें समय रहते हटाने की मांग की है, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं से बचा जा सके। फिलहाल पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और मृतक की पहचान तथा आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

छात्र, किसान और गरीब विरोधी है सरकार: बृज मोहन सिंह

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में भारतीय जन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बृज मोहन सिंह ने आज वर्तमान सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि 'ये सरकार देश विरोधी नीतियों पर चल रही है। ये पूरी तरह छात्र विरोधी, किसान विरोधी और गरीब विरोधी है।' सिंह ने कहा 'आज प्रदेश का छात्र महंगी शिक्षा और पेपर लीक से परेशान है। युवा बेरोजगार घूम रहा है। किसान कर्ज में डूबा है और गरीब को दो वक्त की रोटी नसीब नहीं हो रही। बेटियां और महिलाएं भी सुरक्षित नहीं हैं।' राष्ट्रीय अध्यक्ष ने छात्रों पर हुए लाठीचार्ज, आंसू गैस और वाटर कैनन के इस्तेमाल पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा 'निहत्थे छात्रों पर गोली चलाना, आंसू गैस छोड़ना, लाठी बरसाना, पानी की बौछार करना - ये बहुत बड़ा अपराध है। मेरे देश के प्यारे बच्चों पर अत्याचार देखकर आंसू निकल रहे हैं। पूरा देश रो रहा है।' उन्होंने कहा 'अंग्रेजों से देश आजादी की लड़ाई में कुर्बानियां देकर आजाद हुआ था। आज फिर देश की जनता को आपस में लड़ाया जा रहा है। जब सरकार का फर्ज ही जनता की सेवा करना है, और वो सरकार ही जनता विरोधी हो जाए, तो जनता को आवाज़ उठानी पड़ेगी। आज हर वर्ग सड़कों पर है क्योंकि सरकार ने हर वर्ग को धोखा दिया है।' राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि भारतीय जन समाज पार्टी का संकल्प साफ है 'छात्र हित सर्वोपरि, किसान हित सर्वोपरि, गरीब हित सर्वोपरि।' बृज मोहन सिंह ने 2027 के चुनाव के लिए 'जनसंकल्प 2027' का ऐलान करते हुए कहा द्व 'नोट से वोट नहीं, 260 से चोट। एक घर एक सरकारी नौकरी। क्ष्ध्ध्स्क्जनता के साथ है और जनता के लिए लड़ेगी। '

सरस्वती विद्या मंदिर में मातृ भारती का गठन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नैनी, प्रयागराज। विद्या भारती की योजना के अंतर्गत आज सरस्वती विद्या मंदिर माधव ज्ञान केंद्र, नैनी, प्रयागराज में मातृ भारती का गठन किया गया। जिसका उद्देश्य समाज में सभी महिलाओं को विद्यालय की विभिन्न सामाजिक गतिविधियों से जोड़ना, छात्रों के सर्वांगीण विकास एवं परिवार में कुटुंब प्रबोधन जैसे योजनाओं को पूर्ण करना है। कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय के प्रधानाचार्य अजय कुमार मिश्र के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की संयोजिका मन्नू द्विवेदी थी। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माधुरी मिश्रा (प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, सच्चा बाबा आश्रम संस्कृत महाविद्यालय) विशिष्ट अतिथियों के रूप में ऋचा नारायण (शिक्षिका एवं प्रांत प्रचारक, काशी प्रांत) तथा राधा शुक्ला (कवयित्री, प्रयागराज) उपस्थित रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता बबीता शर्मा (न्यूज़ रिपोर्टर, प्रयागराज) ने की।मातृ भारती की कार्यकारिणी में रिम्मी सिंह को उपाध्यक्ष, लवी सिंह को सचिव, अर्चना त्रिपाठी को मंत्री, रागिनी तिवारी को सहमंत्री, ऋतु मिश्रा को शैक्षिक प्रमुख तथा सरोज शुक्ला, अंशिका, सोनम यादव, सुचित्रा वर्मा एवं रूपा सिंह को सदस्य चुना गया।

महाविद्यालय में एनएसआईसी के साथ एमओयू

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नैनी, प्रयागराज। हेमवती नंदन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में मंगलवार को आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) के तत्वावधान में एनएसआईसी (नेशनल स्मॉल इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन), भारत सरकार के साथ एक महत्वपूर्ण एमओयू (समझौता ज्ञापन) पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश, आईक्यूएसी प्रभारी प्रो. सुवर्णा सरकार एवं अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। प्रो. सुवर्णा सरकार ने बताया कि यह एमओयू महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया है, जिससे उन्हें रोजगारपरक प्रशिक्षण प्राप्त हो सके।एनएसआईसी, नैनी के तकनीकी प्रबंधक गौरव चतुर्वेदी ने बताया कि इस समझौते के तहत महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को विभिन्न तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इससे विद्यार्थियों की रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी और उन्हें भविष्य में बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। कार्यक्रम में समिति के सदस्य डॉ. नूर फातिमा, डॉ. मंजरी मिश्रा एवं डॉ. धीरेंद्र सिंह भी उपस्थित रहे।